ई साहित्य प्रतिष्ठान

यह तो श्री की इच्छा

भाग -२

छत्रपती
शिवाजी
महाराज की
जय

यह तो श्री की इच्छा : भाग २

संकल्पना : सुनिल सामंत

दूसरे भाग का लेखन : संहिता हिस्वनकर
सुनिल सामंत

मुखपृष्ठ व सुलेखन : अमृता ढगे

सजावट : अमृता ढगे/ लास्ट बेंच डिझाईन

प्रकाशन : ई साहित्य प्रतिष्ठान

www.esahity.com

esahity@gmail.com

9869674820

e Sahity Pratishthan
eleventh floor
eternity, G1102
estern express highway
Thane. 400604

© ई साहित्य प्रतिष्ठान

इस पुस्तकमें दिखाई कई प्रतिमाएं गुगलसे ली गयी हैं.
उनके निर्माताओंके हम शतशः ऋणी है.

यह पुस्तक
शिवचरणोंमें
लीनतापूर्वक समर्पित

छत्रपती शिवाजीमहाराजकी जीवनीका
यह दूसरा अध्याय है
पहला अधाय पढनेके लिये
कृपया भेट दें

www.esahity.com

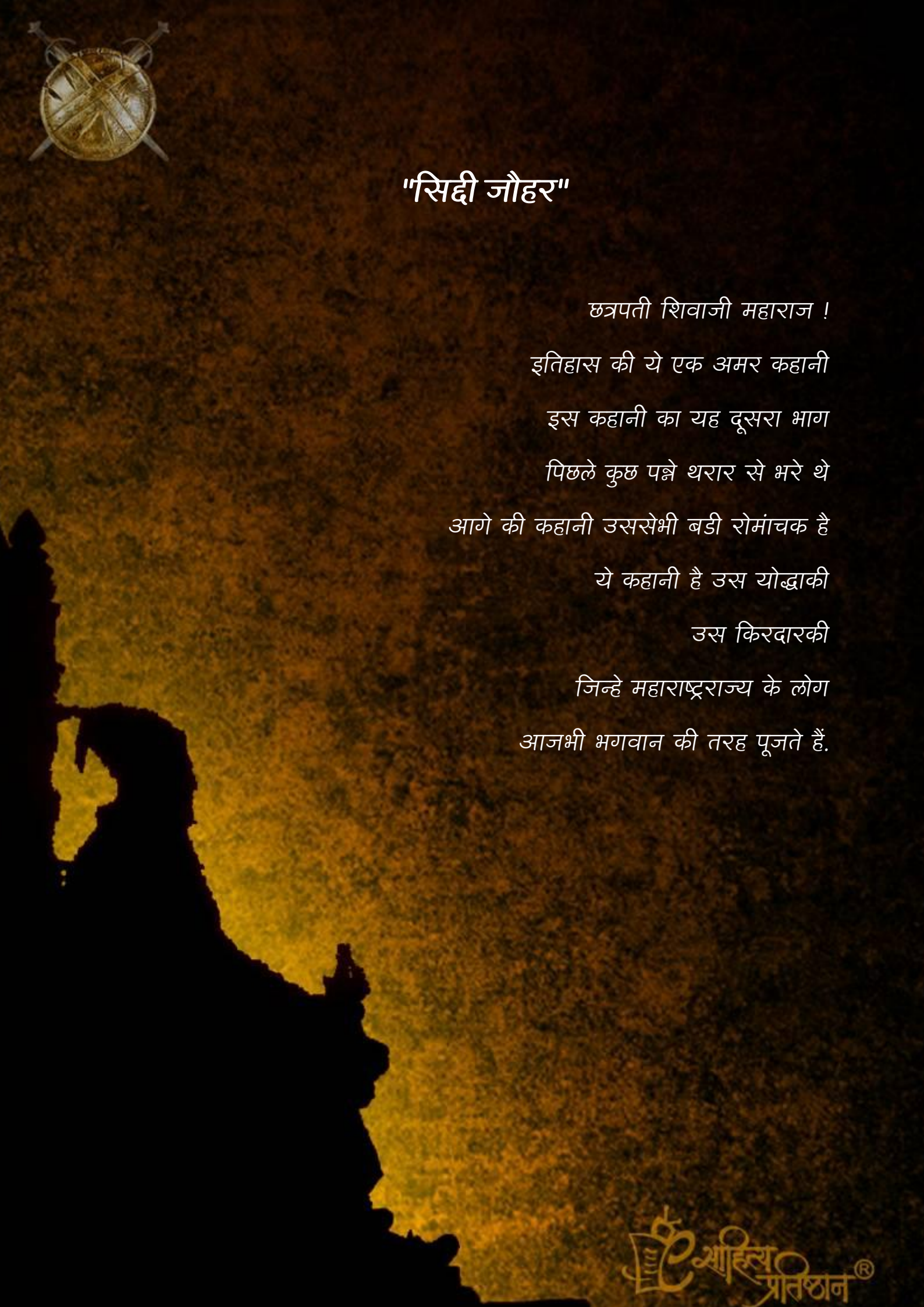

"सिद्दी जौहर"

छत्रपती शिवाजी महाराज !

इतिहास की ये एक अमर कहानी

इस कहानी का यह दूसरा भाग

पिछले कुछ पन्ने थरार से भरे थे

आगे की कहानी उससेभी बडी रोमांचक है

ये कहानी है उस योद्धाकी

उस किरदारकी

जिन्हे महाराष्ट्रराज्य के लोग

आजभी भगवान की तरह पूजते हैं.

साहित्य प्रतिष्ठान®

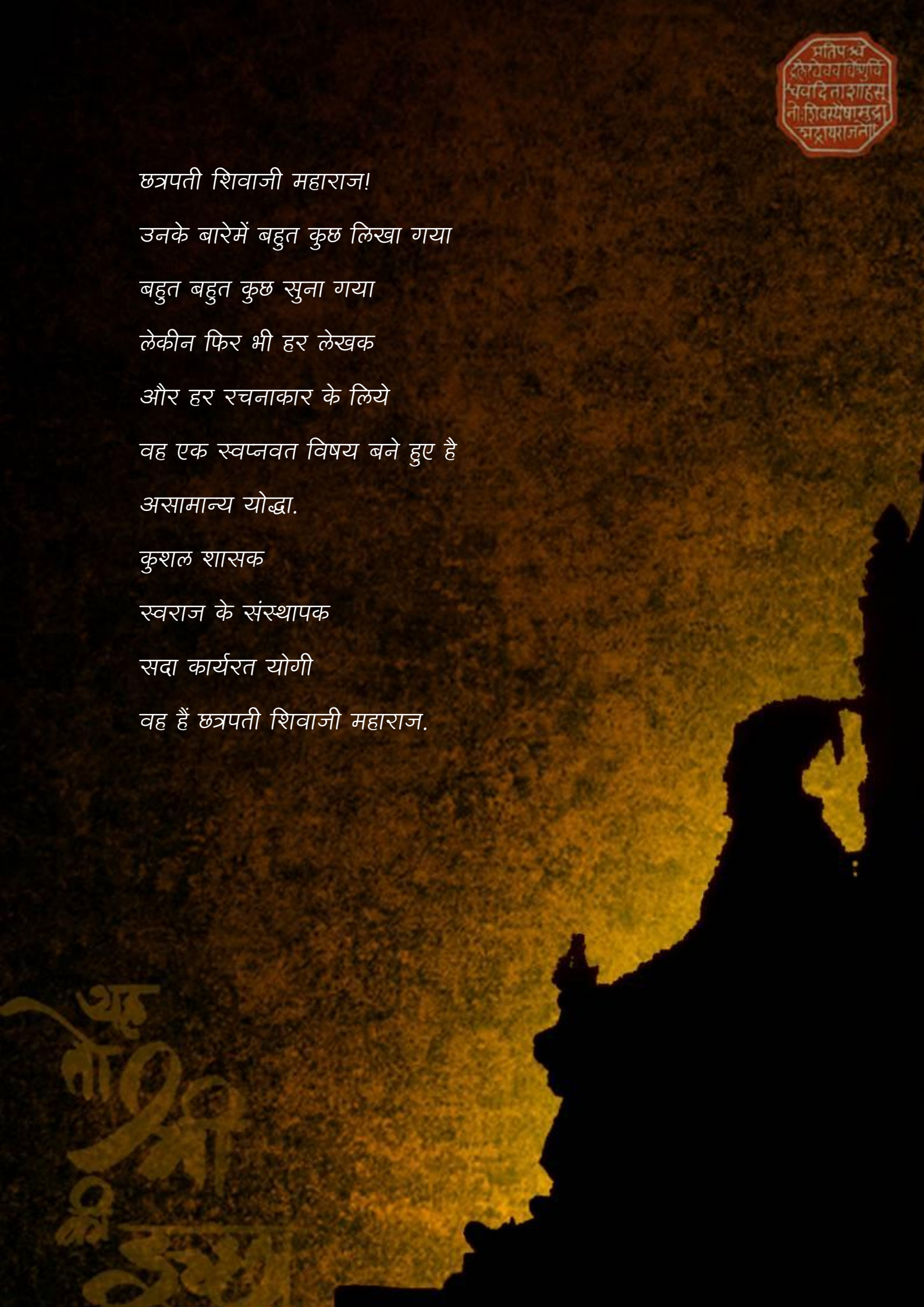

छत्रपती शिवाजी महाराज!

उनके बारेमें बहुत कुछ लिखा गया

बहुत बहुत कुछ सुना गया

लेकीन फिर भी हर लेखक

और हर रचनाकार के लिये

वह एक स्वप्नवत विषय बने हुए है

असामान्य योद्धा.

कुशल शासक

स्वराज के संस्थापक

सदा कार्यरत योगी

वह हैं छत्रपती शिवाजी महाराज.

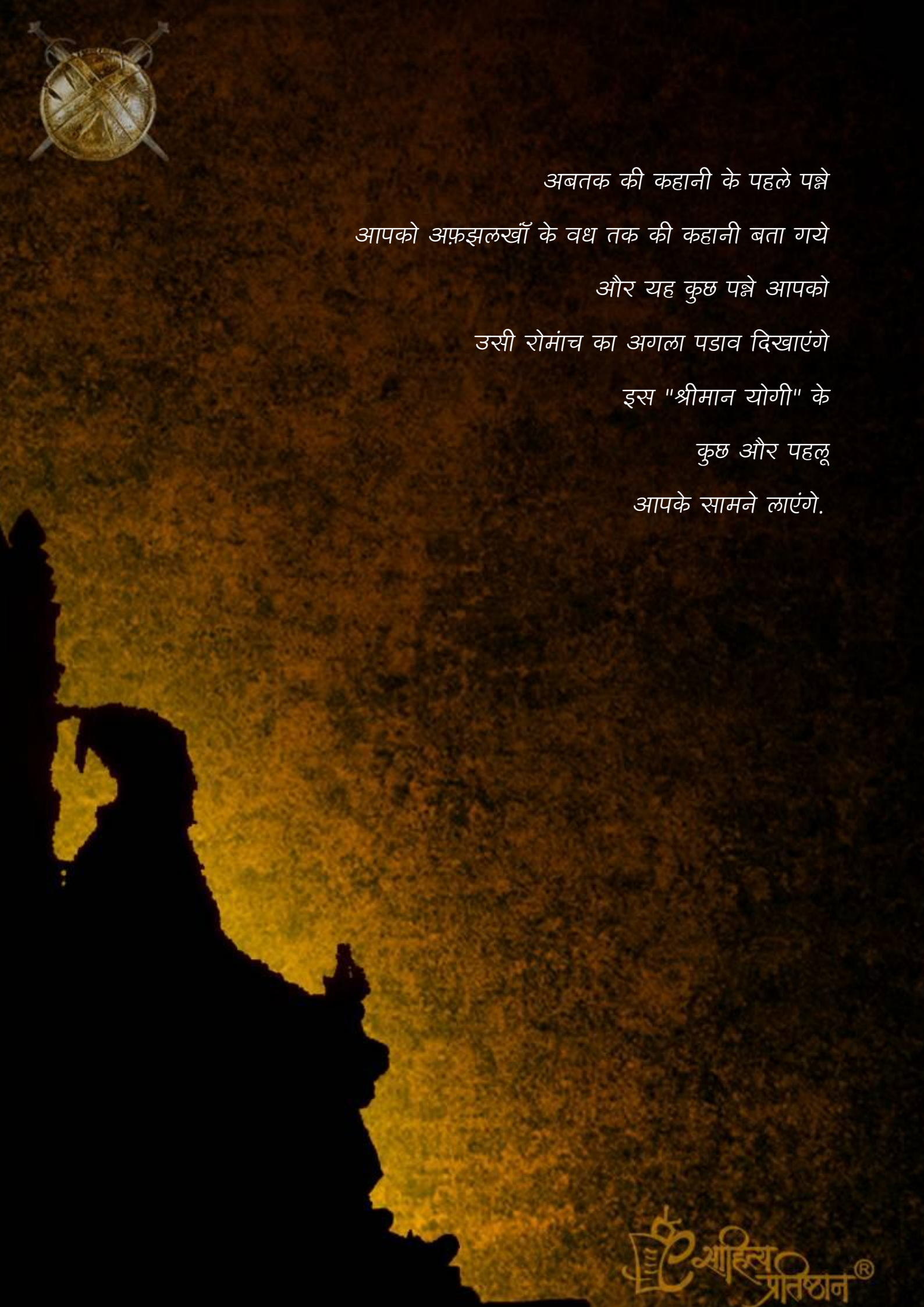

अबतक की कहानी के पहले पन्ने

आपको अफ़झलखॉं के वध तक की कहानी बता गये

और यह कुछ पन्ने आपको

उसी रोमांच का अगला पडाव दिखाएंगे

इस "श्रीमान योगी" के

कुछ और पहलू

आपके सामने लाएंगे.

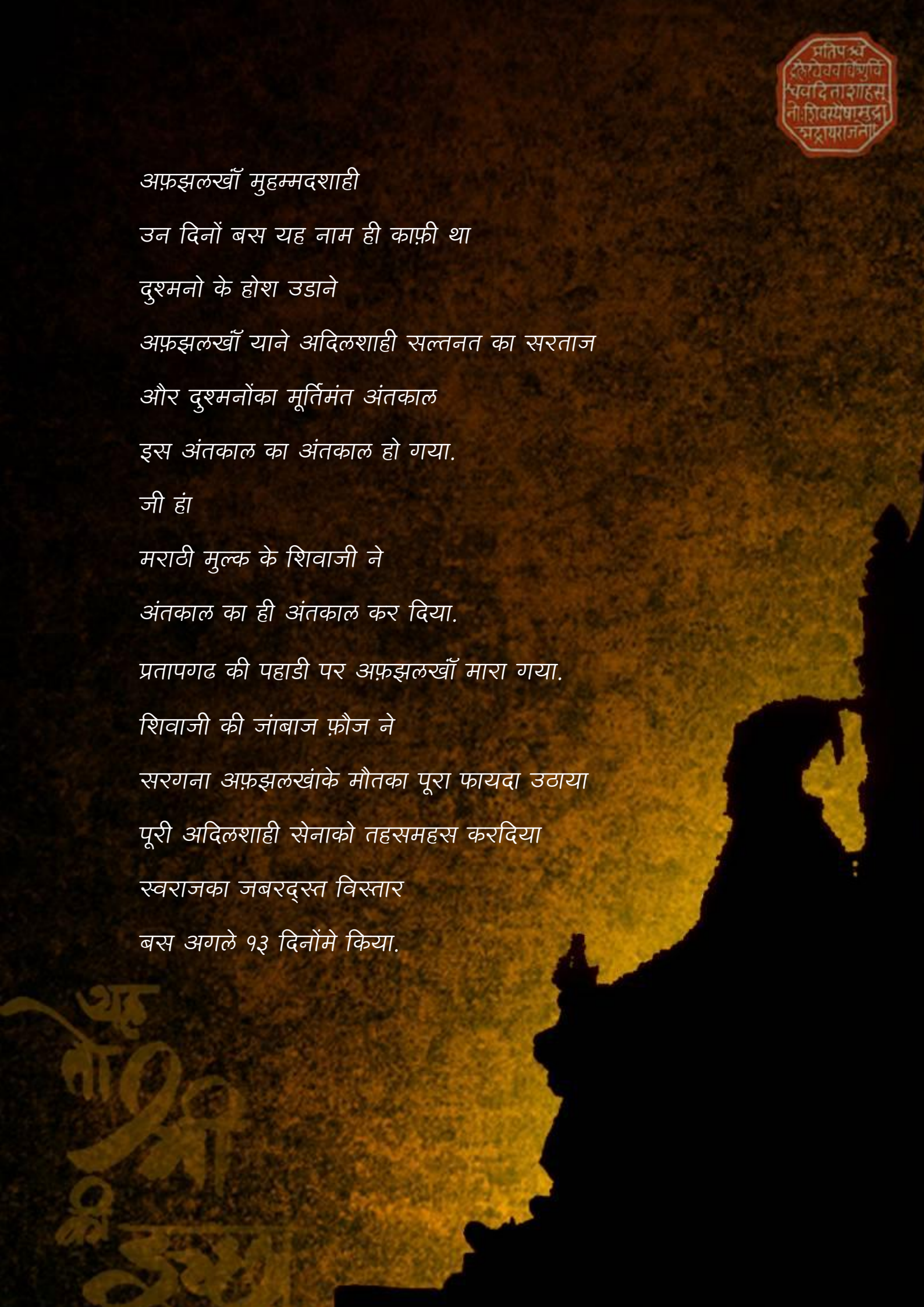

अफ़झलखॉं मुहम्मदशाही

उन दिनों बस यह नाम ही काफ़ी था

दुश्मनो के होश उडाने

अफ़झलखॉं याने अदिलशाही सल्तनत का सरताज

और दुश्मनोंका मूर्तिमंत अंतकाल

इस अंतकाल का अंतकाल हो गया.

जी हां

मराठी मुल्क के शिवाजी ने

अंतकाल का ही अंतकाल कर दिया.

प्रतापगढ की पहाडी पर अफ़झलखॉं मारा गया.

शिवाजी की जांबाज फ़ौज ने

सरगना अफ़झलखांके मौतका पूरा फायदा उठाया

पूरी अदिलशाही सेनाको तहसमहस करदिया

स्वराजका जबरद्स्त विस्तार

बस अगले १३ दिनोंमे किया.

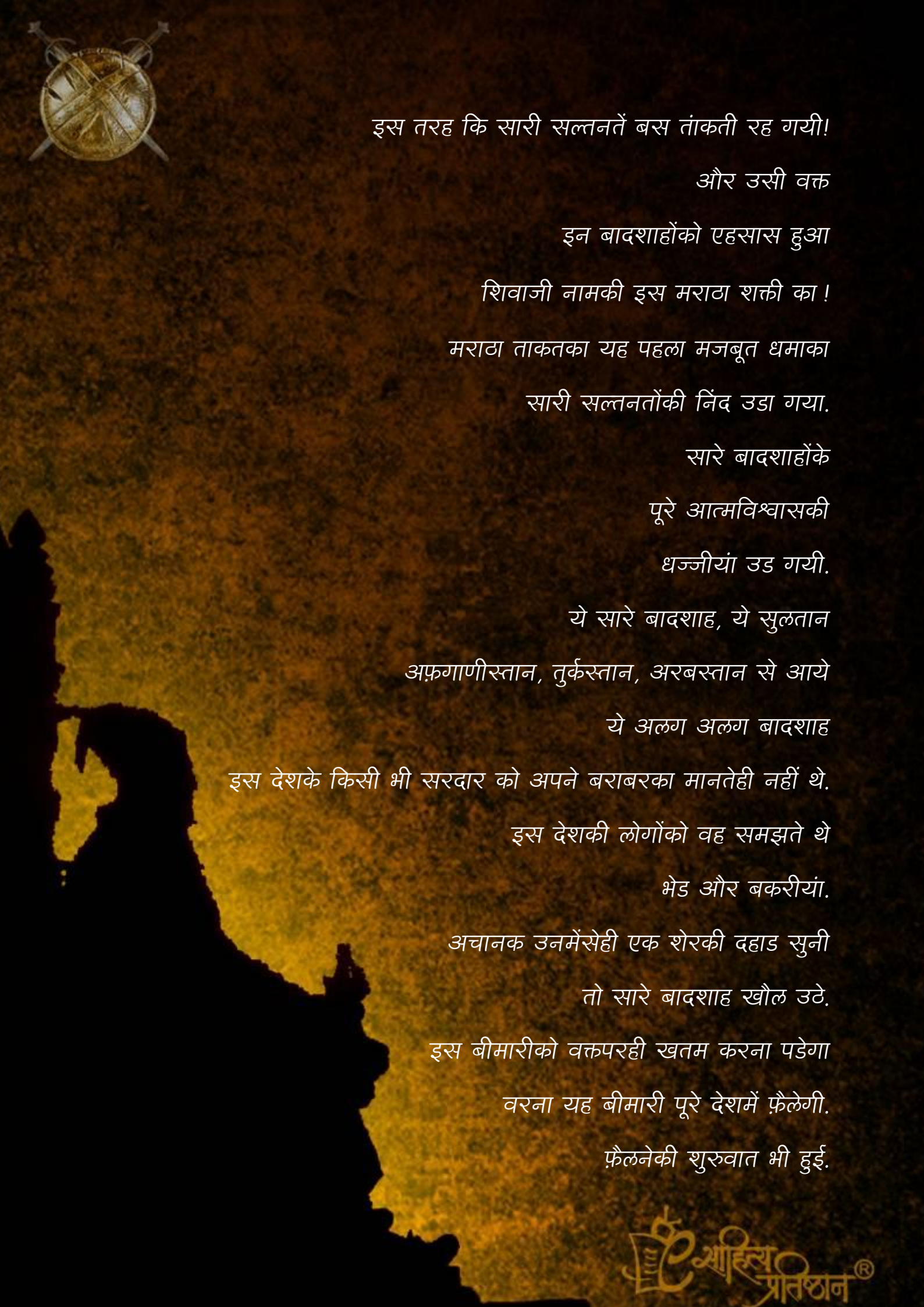

इस तरह कि सारी सल्तनतें बस तांकती रह गयी!

और उसी वक्त

इन बादशाहोंको एहसास हुआ

शिवाजी नामकी इस मराठा शक्ती का !

मराठा ताकतका यह पहला मजबूत धमाका

सारी सल्तनतोंकी निंद उडा गया.

सारे बादशाहोंके

पूरे आत्मविश्वासकी

धज्जीयां उड गयी.

ये सारे बादशाह, ये सुलतान

अफ़गाणीस्तान, तुर्कस्तान, अरबस्तान से आये

ये अलग अलग बादशाह

इस देशके किसी भी सरदार को अपने बराबरका मानतेही नहीं थे.

इस देशकी लोगोंको वह समझते थे

भेड और बकरीयां.

अचानक उनमेंसेही एक शेरकी दहाड सुनी

तो सारे बादशाह खौल उठे.

इस बीमारीको वक्तपरही खतम करना पडेगा

वरना यह बीमारी पूरे देशमें फ़ैलेगी.

फ़ैलनेकी शुरुवात भी हुई.

साहित्य प्रतिष्ठान®

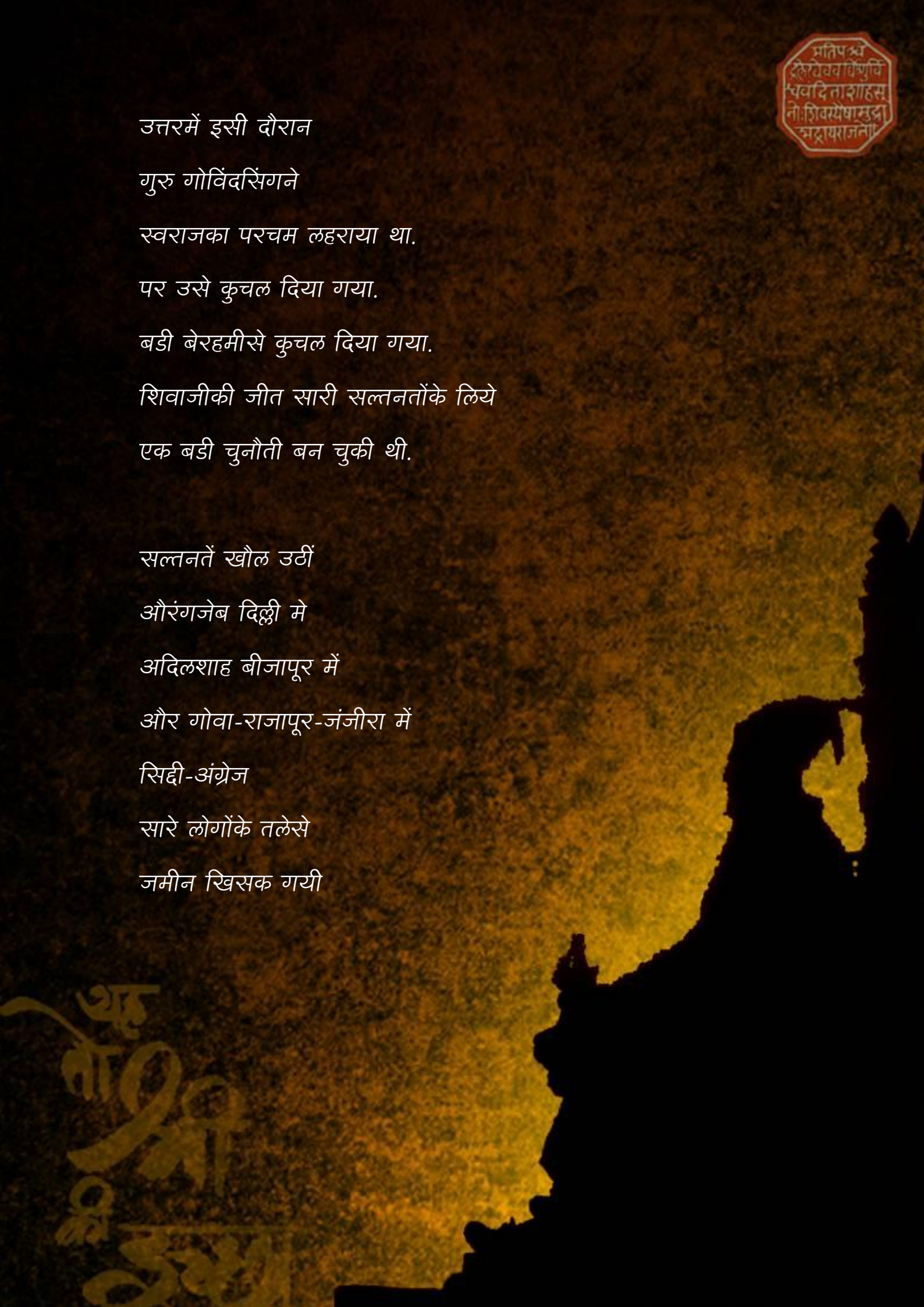

उत्तरमें इसी दौरान

गुरु गोविंदसिंगने

स्वराजका परचम लहराया था.

पर उसे कुचल दिया गया.

बडी बेरहमीसे कुचल दिया गया.

शिवाजीकी जीत सारी सल्तनतोंके लिये

एक बडी चुनौती बन चुकी थी.

सल्तनतें खौल उठीं

औरंगजेब दिल्ली मे

अदिलशाह बीजापूर में

और गोवा-राजापूर-जंजीरा में

सिद्दी-अंग्रेज

सारे लोगोंके तलेसे

जमीन खिसक गयी

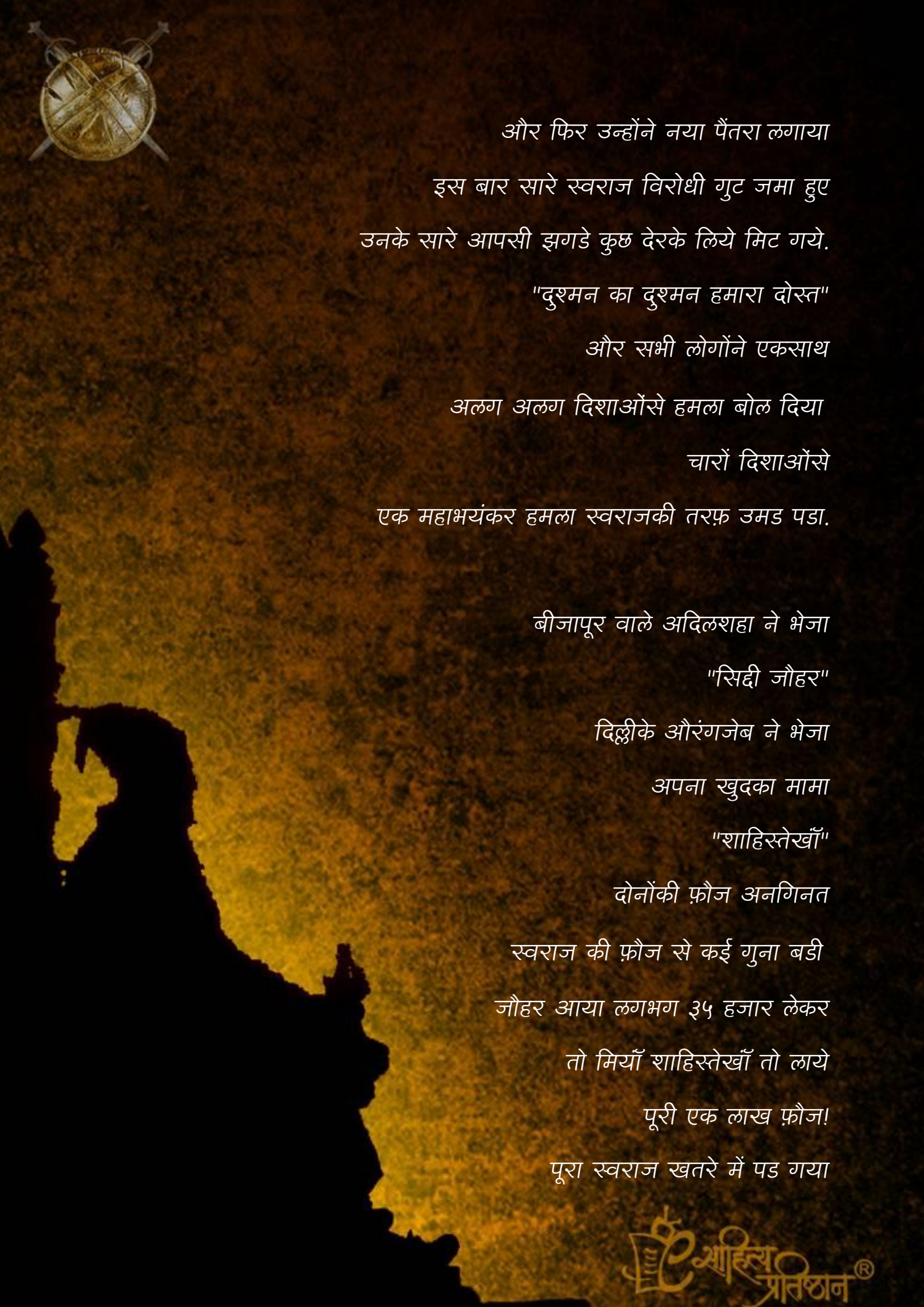

और फिर उन्होंने नया पैंतरा लगाया

इस बार सारे स्वराज विरोधी गुट जमा हुए

उनके सारे आपसी झगडे कुछ देरके लिये मिट गये.

"दुश्मन का दुश्मन हमारा दोस्त"

और सभी लोगोंने एकसाथ

अलग अलग दिशाओंसे हमला बोल दिया

चारों दिशाओंसे

एक महाभयंकर हमला स्वराजकी तरफ़ उमड पडा.

बीजापूर वाले अदिलशहा ने भेजा

"सिद्दी जौहर"

दिल्लीके औरंगजेब ने भेजा

अपना खुदका मामा

"शाहिस्तेखाँ"

दोनोंकी फ़ौज अनगिनत

स्वराज की फ़ौज से कई गुना बडी

जौहर आया लगभग ३५ हजार लेकर

तो मियाँ शाहिस्तेखाँ तो लाये

पूरी एक लाख फ़ौज!

पूरा स्वराज खतरे में पड गया

साहित्य प्रतिष्ठान®

और सबसे बडी बात

जौहर की सवारी के वक्त

शिवाजी थे पन्हालगढ किले में

पन्हालगढ अभी अभी स्वराजमें शामिल हुआ था

बहुत खूब किला

अस्मानी

लेकिन उसके तले पड गया

सिद्दी जौहर का घेरा

और घेरा भी वो क्या था!

कहा जाता है

जौहर ने इतनी कडी शिकस्त की

के उसका घेरा भेद कर

एक मक्खी भी अंदर-बाहर ना कर पाये!

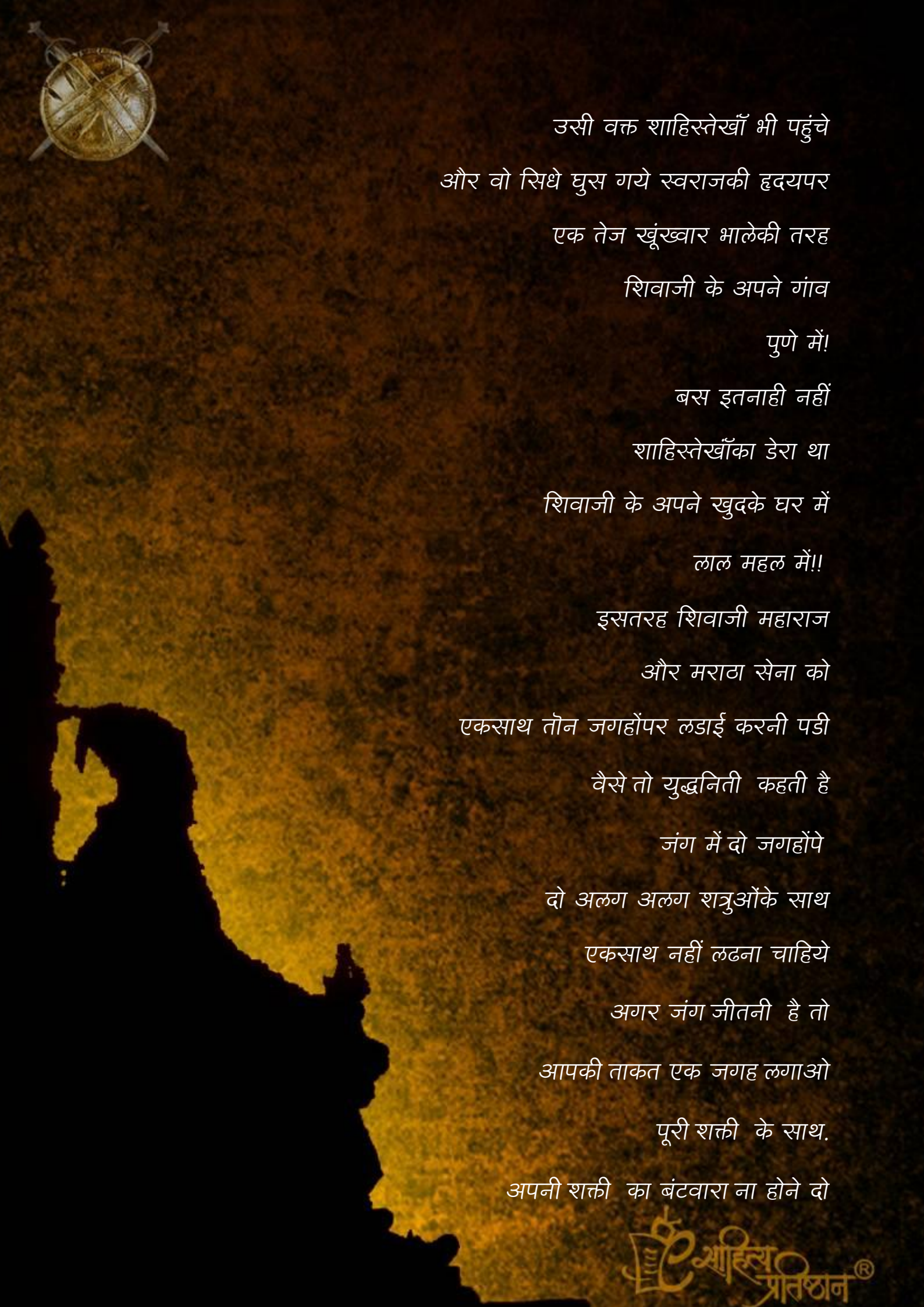

उसी वक्त शाहिस्तेखाँ भी पहुंचे

और वो सिधे घुस गये स्वराजकी हृदयपर

एक तेज खूंख्वार भालेकी तरह

शिवाजी के अपने गांव

पुणे में!

बस इतनाही नहीं

शाहिस्तेखाँका डेरा था

शिवाजी के अपने खुदके घर में

लाल महल में!!

इसतरह शिवाजी महाराज

और मराठा सेना को

एकसाथ तॉन जगहोंपर लडाई करनी पडी

वैसे तो युद्धनिती कहती है

जंग में दो जगहोंपे

दो अलग अलग शत्रुओंके साथ

एकसाथ नहीं लढना चाहिये

अगर जंग जीतनी है तो

आपकी ताकत एक जगह लगाओ

पूरी शक्ती के साथ.

अपनी शक्ती का बंटवारा ना होने दो

साहित्य प्रतिष्ठान®

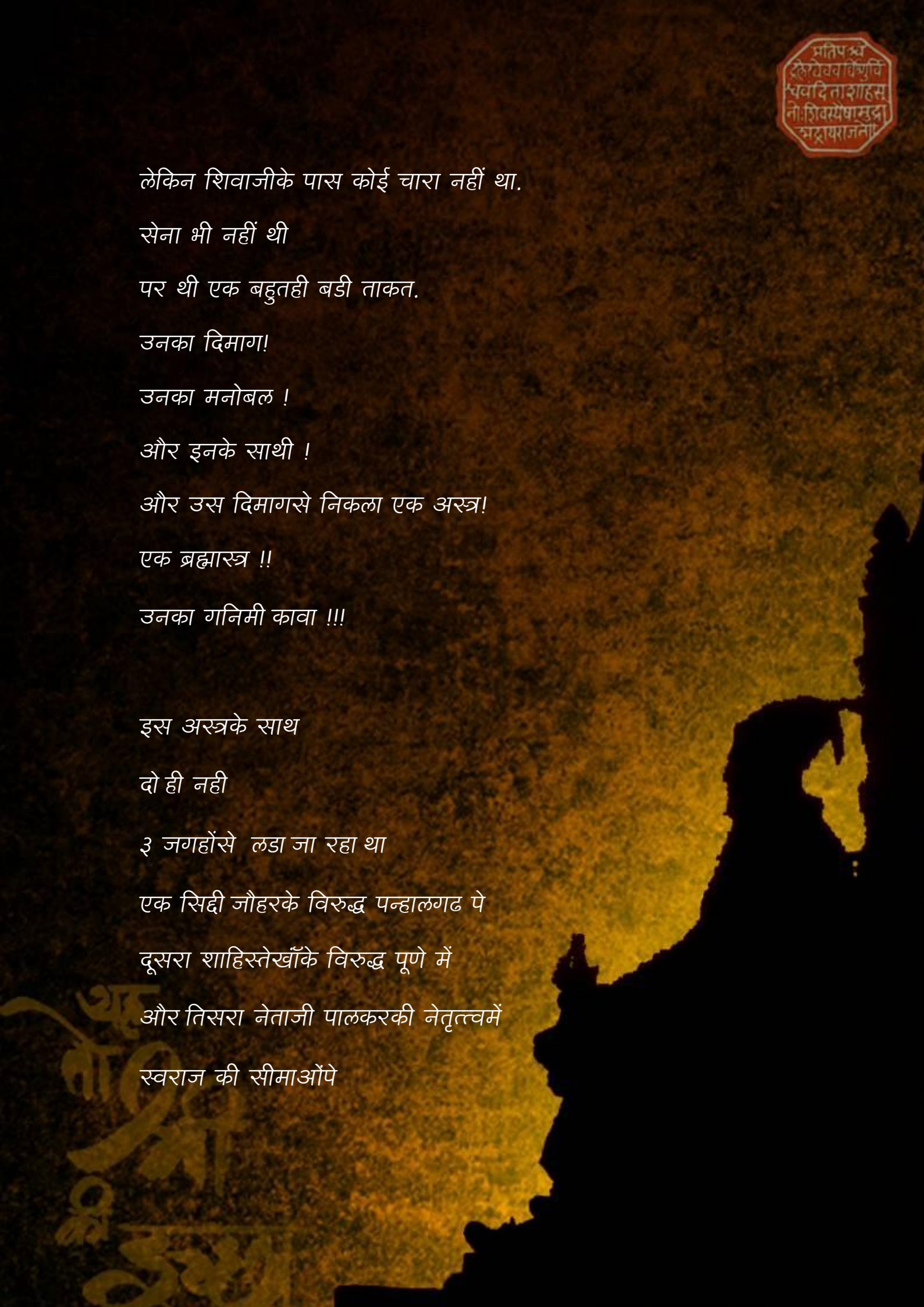

लेकिन शिवाजीके पास कोई चारा नहीं था.

सेना भी नहीं थी

पर थी एक बहुतही बडी ताकत.

उनका दिमाग!

उनका मनोबल !

और इनके साथी !

और उस दिमागसे निकला एक अस्त्र!

एक ब्रह्मास्त्र !!

उनका गनिमी कावा !!!

इस अस्त्रके साथ

दो ही नही

३ जगहोंसे लडा जा रहा था

एक सिद्दी जौहरके विरुद्ध पन्हालगढ पे

दूसरा शाहिस्तेखॉके विरुद्ध पूणे में

और तिसरा नेताजी पालकरकी नेतृत्त्वमें

स्वराज की सीमाओंपे

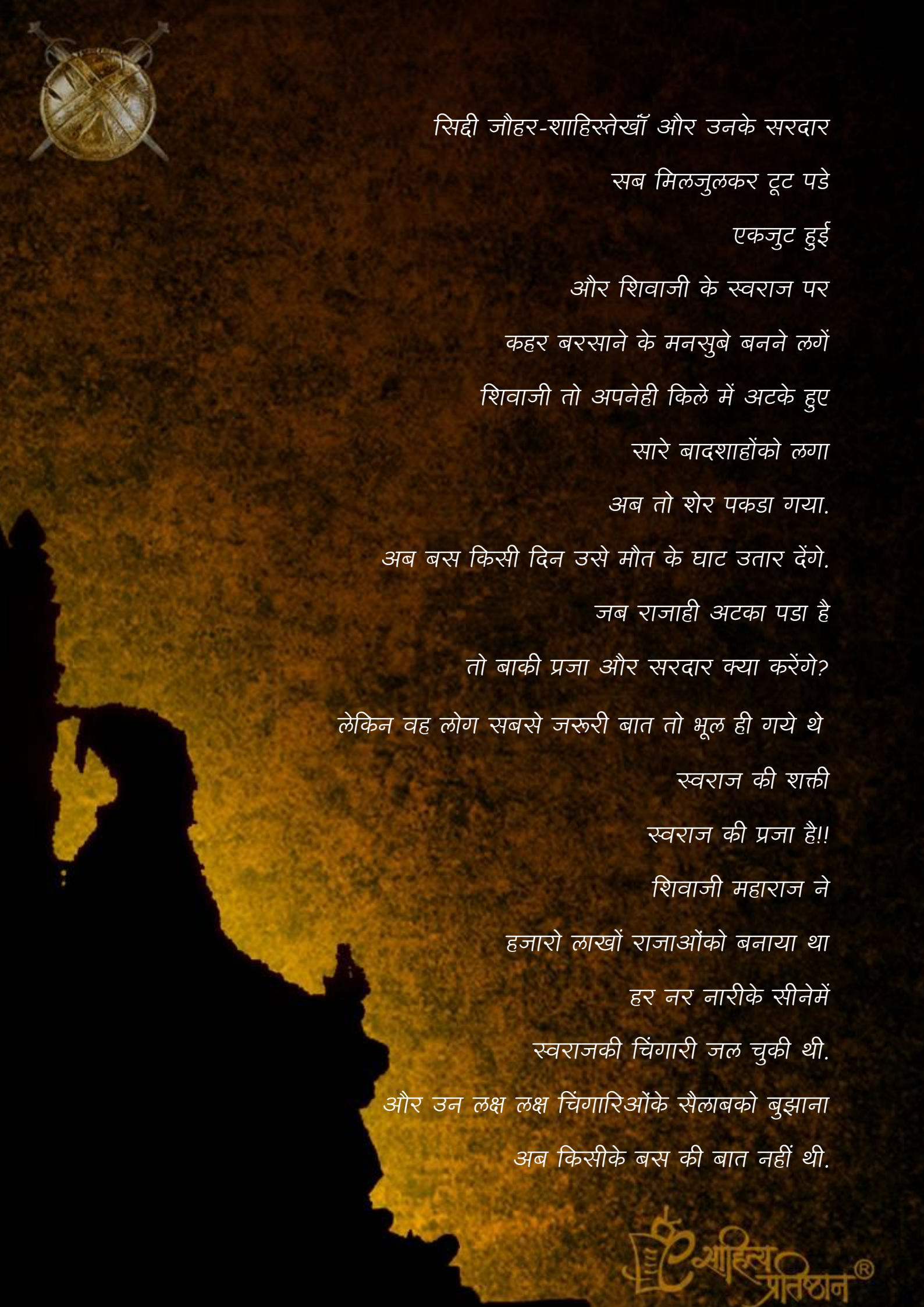

सिद्दी जौहर-शाहिस्तेखाँ और उनके सरदार
सब मिलजुलकर टूट पडे
एकजुट हुई
और शिवाजी के स्वराज पर
कहर बरसाने के मनसुबे बनने लगें
शिवाजी तो अपनेही किले में अटके हुए
सारे बादशाहोंको लगा
अब तो शेर पकडा गया.
अब बस किसी दिन उसे मौत के घाट उतार देंगे.
जब राजाही अटका पडा है
तो बाकी प्रजा और सरदार क्या करेंगे?
लेकिन वह लोग सबसे जरूरी बात तो भूल ही गये थे
स्वराज की शक्ती
स्वराज की प्रजा है!!
शिवाजी महाराज ने
हजारो लाखों राजाओंको बनाया था
हर नर नारीके सीनेमें
स्वराजकी चिंगारी जल चुकी थी.
और उन लक्ष लक्ष चिंगारिओंके सैलाबको बुझाना
अब किसीके बस की बात नहीं थी.

साहित्य प्रतिष्ठान®

शिवाजी खुद पन्हालगढ किले में अटके हुए

लेकिन उनके सेनापती तो मुक्त थे

स्वराज के सेनापती

नेताजी पालकर

जांबाज योद्धा, कुशल संघटक

इन्हें "प्रतिशिवाजी"भी कहा जाता.

उन्होंने फिर अपना "गनिमी कावा" वाला जादू चलाया

स्वराज के शत्रू बौखला गये

उन्हें कुछ समझने से पहले ही

सेनापती की टुकडीयां

दुश्मनोंके ठिकानोंपर छापा मारती

बिजली की तरह तेज

चीतेकी तरह खुंख्वार

गरुडकी तरह चौकन्नी

शिवाजी की सेना

दुश्मनकी सामग्री हथियाती

और चली भी जाती

सेनापती और इतर मंत्रीजनोंने

शिवाजी की अनुपस्थितीमेंभी

स्वराज कायम रखा.

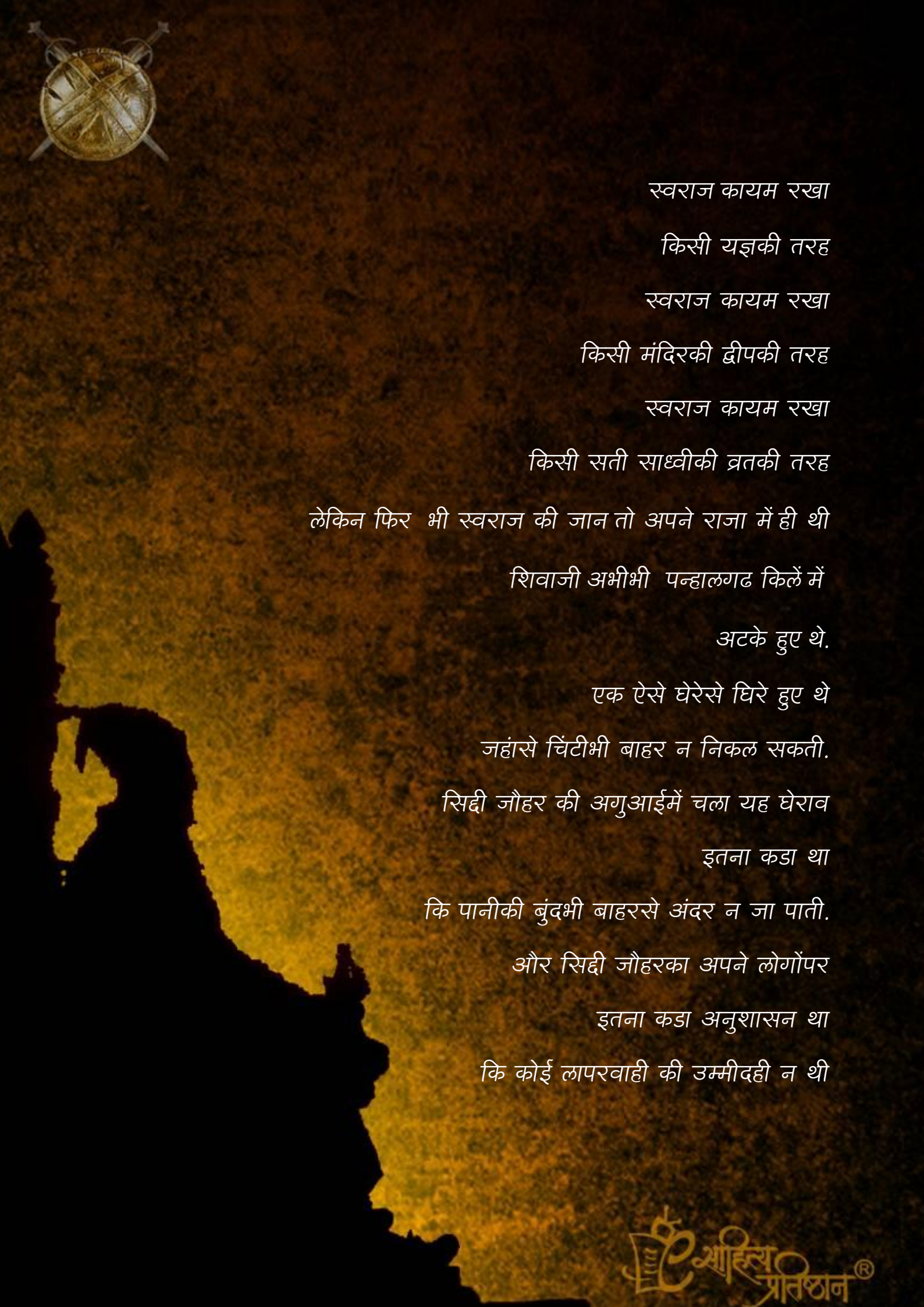

स्वराज कायम रखा

किसी यज्ञकी तरह

स्वराज कायम रखा

किसी मंदिरकी द्वीपकी तरह

स्वराज कायम रखा

किसी सती साध्वीकी व्रतकी तरह

लेकिन फिर भी स्वराज की जान तो अपने राजा में ही थी

शिवाजी अभीभी पन्हालगढ किलें में

अटके हुए थे.

एक ऐसे घेरेसे घिरे हुए थे

जहांसे चिंटीभी बाहर न निकल सकती.

सिद्दी जौहर की अगुआईमें चला यह घेराव

इतना कडा था

कि पानीकी बुंदभी बाहरसे अंदर न जा पाती.

और सिद्दी जौहरका अपने लोगोंपर

इतना कडा अनुशासन था

कि कोई लापरवाही की उम्मीदही न थी

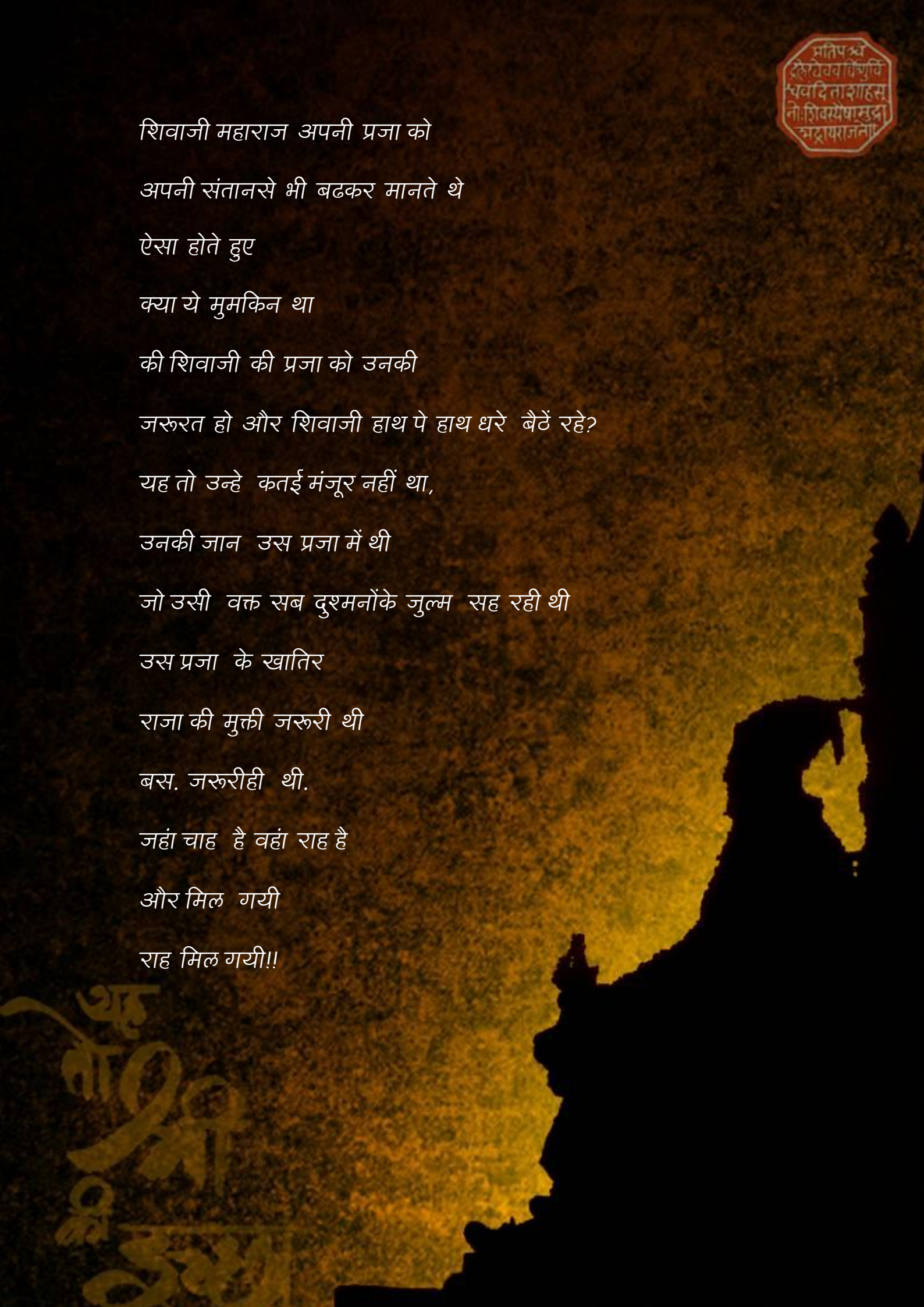

शिवाजी महाराज अपनी प्रजा को

अपनी संतानसे भी बढकर मानते थे

ऐसा होते हुए

क्या ये मुमकिन था

की शिवाजी की प्रजा को उनकी

जरूरत हो और शिवाजी हाथ पे हाथ धरे बैठें रहे?

यह तो उन्हे कतई मंजूर नहीं था,

उनकी जान उस प्रजा में थी

जो उसी वक्त सब दुश्मनोंके जुल्म सह रही थी

उस प्रजा के खातिर

राजा की मुक्ती जरूरी थी

बस. जरूरीही थी.

जहां चाह है वहां राह है

और मिल गयी

राह मिल गयी!!

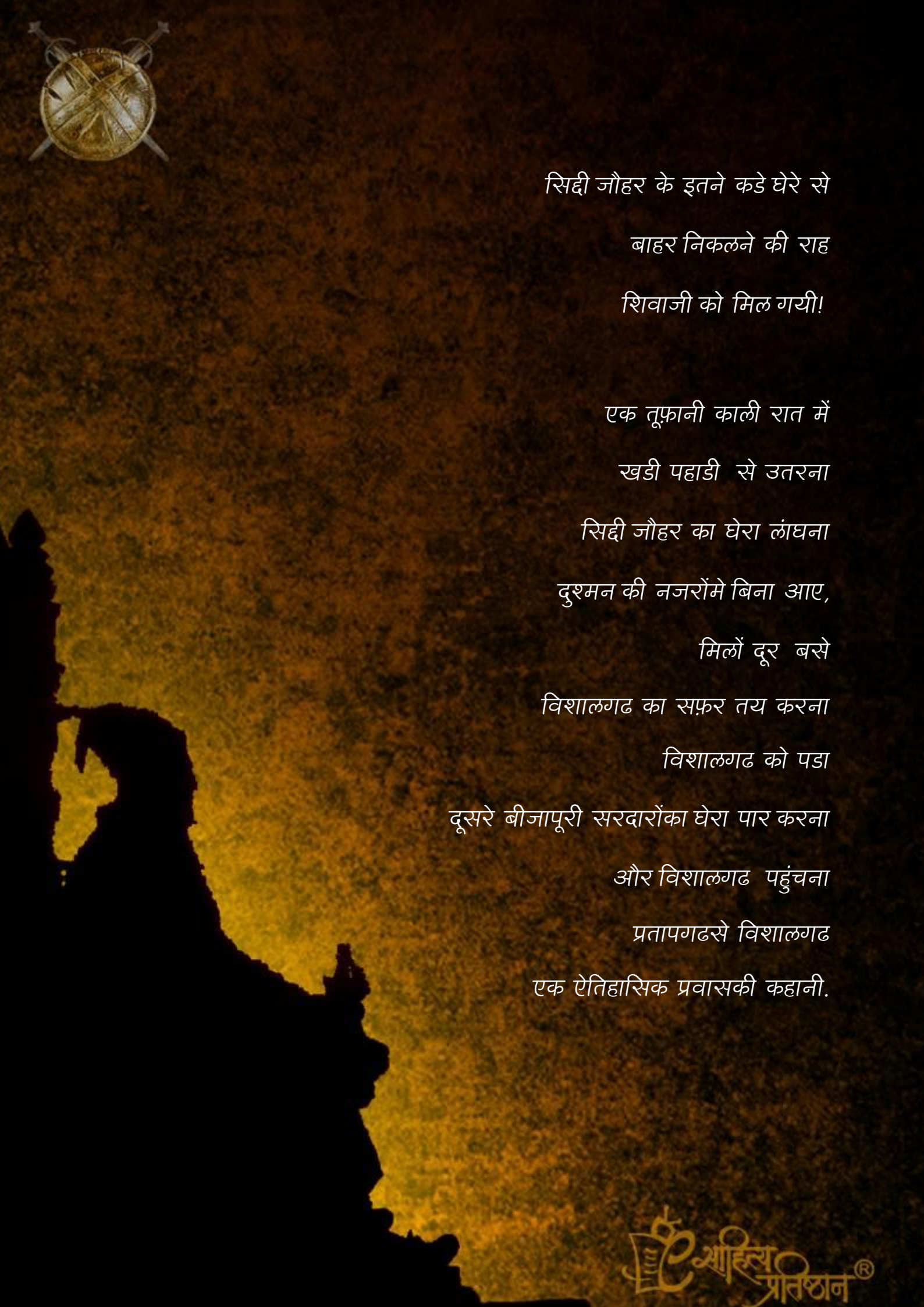

सिद्दी जौहर के इतने कडे घेरे से

बाहर निकलने की राह

शिवाजी को मिल गयी!

एक तूफ़ानी काली रात में

खडी पहाडी से उतरना

सिद्दी जौहर का घेरा लंघना

दुश्मन की नजरोंमे बिना आए,

मिलों दूर बसे

विशालगढ का सफ़र तय करना

विशालगढ को पडा

दूसरे बीजापूरी सरदारोंका घेरा पार करना

और विशालगढ पहुंचना

प्रतापगढसे विशालगढ

एक ऐतिहासिक प्रवासकी कहानी.

पर शिवाजी महाराज और उनके साथीयोंने

सोची थी वह चाल

जो स्वराज की जान को बचानेवाली थी

यह अंतर था.... जंगल... पहाडी, ... रात... दुश्मन...

एक रास्ता तो मिल गया.

पर वह रास्ता चुनना आसान ना था

क्योंकी

उस रास्ते पर कदम कदम पे मौत थी

या ऐसी सजाएं जिनके सामने

मौत भी मासूम लगे!

लेकीन घेरे से बाहर तो निकलना था.

जान तो बचानीही थी

राजाकी भी और स्वराज की भी

तो फिर तय हुई एक अनोखी चाल.

एक ऐसी कहानी

जो दुनियाके इतिहासमें किसीने न सोची हो.

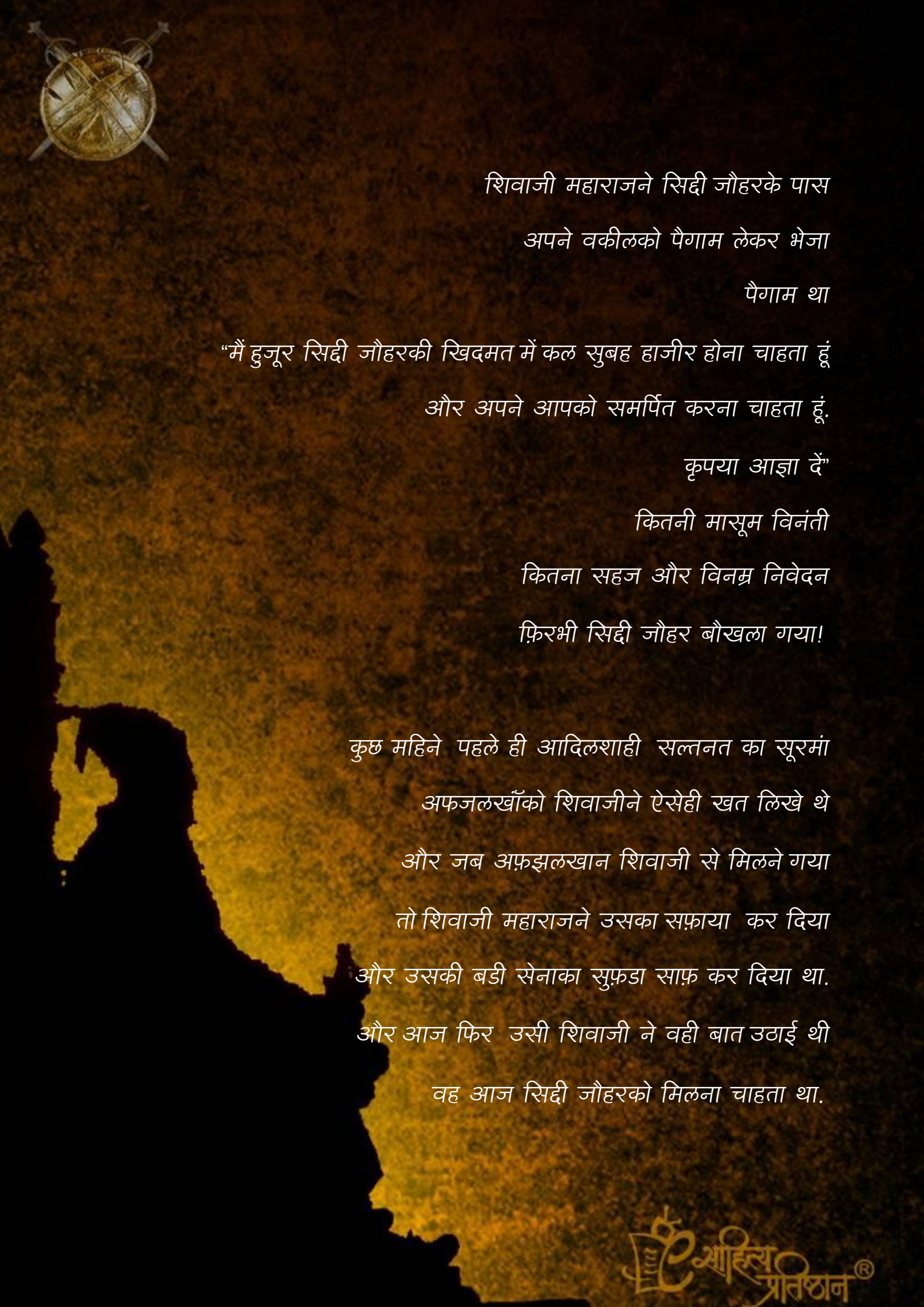

शिवाजी महाराजने सिद्दी जौहरके पास
अपने वकीलको पैगाम लेकर भेजा
पैगाम था
"मैं हुजूर सिद्दी जौहरकी खिदमत में कल सुबह हाजीर होना चाहता हूं
और अपने आपको समर्पित करना चाहता हूं.
कृपया आज्ञा दें"
कितनी मासूम विनंती
कितना सहज और विनम्र निवेदन
फ़िरभी सिद्दी जौहर बौखला गया!

कुछ महिने पहले ही आदिलशाही सल्तनत का सूरमां
अफजलखॉंको शिवाजीने ऐसेही खत लिखे थे
और जब अफ़झलखान शिवाजी से मिलने गया
तो शिवाजी महाराजने उसका सफ़ाया कर दिया
और उसकी बडी सेनाका सुफ़डा साफ़ कर दिया था.
और आज फिर उसी शिवाजी ने वही बात उठाई थी
वह आज सिद्दी जौहरको मिलना चाहता था.

साहित्य प्रतिष्ठान®

सिद्दी जौहर ने सोचा

मैं सल्तनत का वफादार

मैं शूर वीर सूरमा

और यह शिवाजी मुझे मिलना चाहता है.

शायद मुझे भी धोखा देना चाहता है.

पर मैं अफ़जलखाँ नहीं हूं

मुझे धोखा देना मुमकिन नहीं है!

अगर मुलाकात होगी, तो मेरे शामियाने में

शिवाजी को पहाडी उतरकर

मेरे पास आना होगा.

इसबार वह अकेला होगा

और मेरे साथ सारे सैनिक.

शिवाजी इसके लिये भी तैयार हो गये

उन्होंने सुलह करनी चाही

शिवाजी के वकील ने जौहर की हर बात मान ली

हर शर्त मान ली

शिवाजी की हार को जैसे स्विकार कर लिया गया

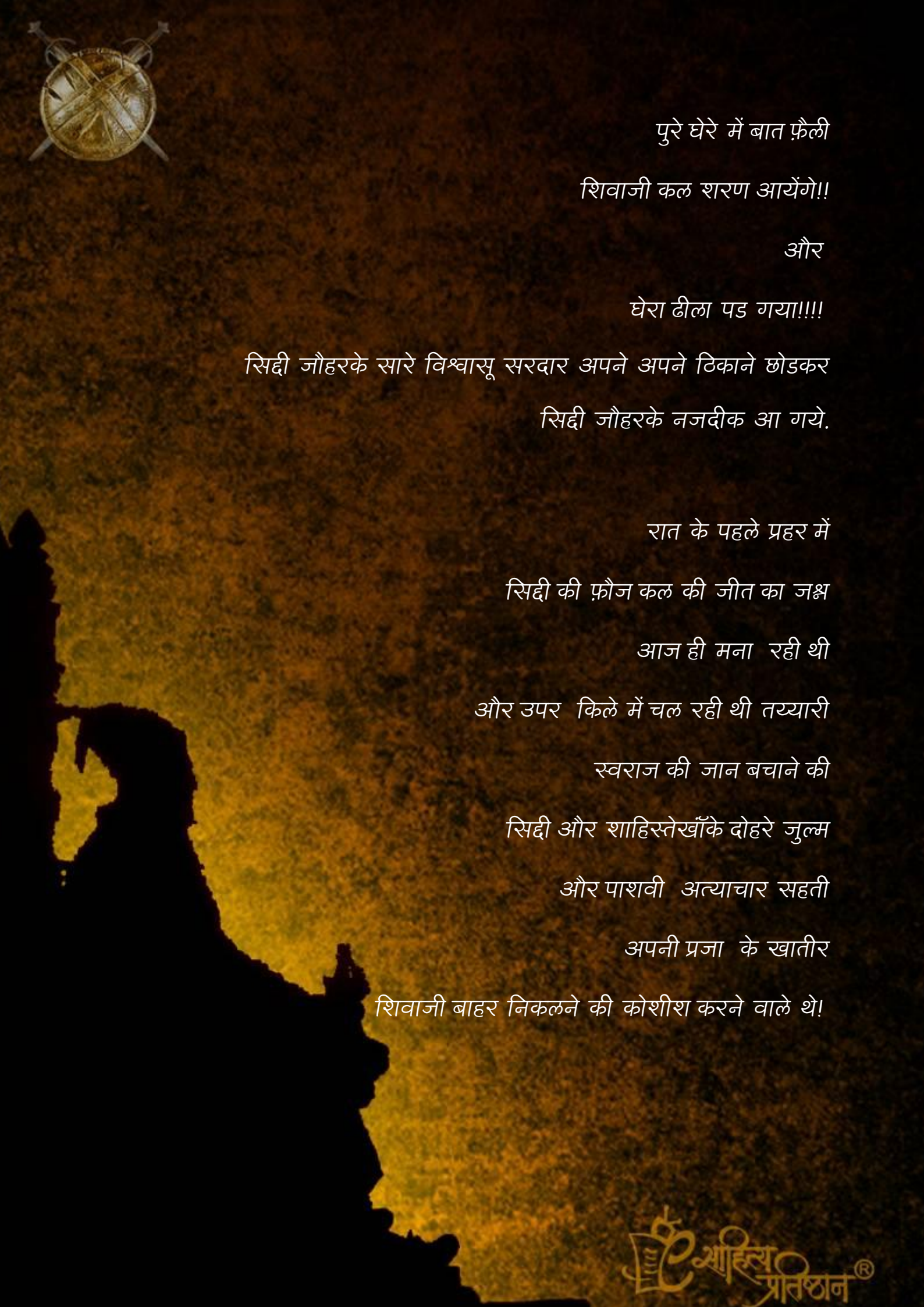

पुरे घेरे में बात फ़ैली

शिवाजी कल शरण आयेंगे!!

और

घेरा ढीला पड गया!!!!

सिद्दी जौहरके सारे विश्वासू सरदार अपने अपने ठिकाने छोडकर

सिद्दी जौहरके नजदीक आ गये.

रात के पहले प्रहर में

सिद्दी की फ़ौज कल की जीत का जश्न

आज ही मना रही थी

और उपर किले में चल रही थी तय्यारी

स्वराज की जान बचाने की

सिद्दी और शाहिस्तेखॉंके दोहरे जुल्म

और पाशवी अत्याचार सहती

अपनी प्रजा के खातीर

शिवाजी बाहर निकलने की कोशीश करने वाले थे!

साहित्य प्रतिष्ठान®

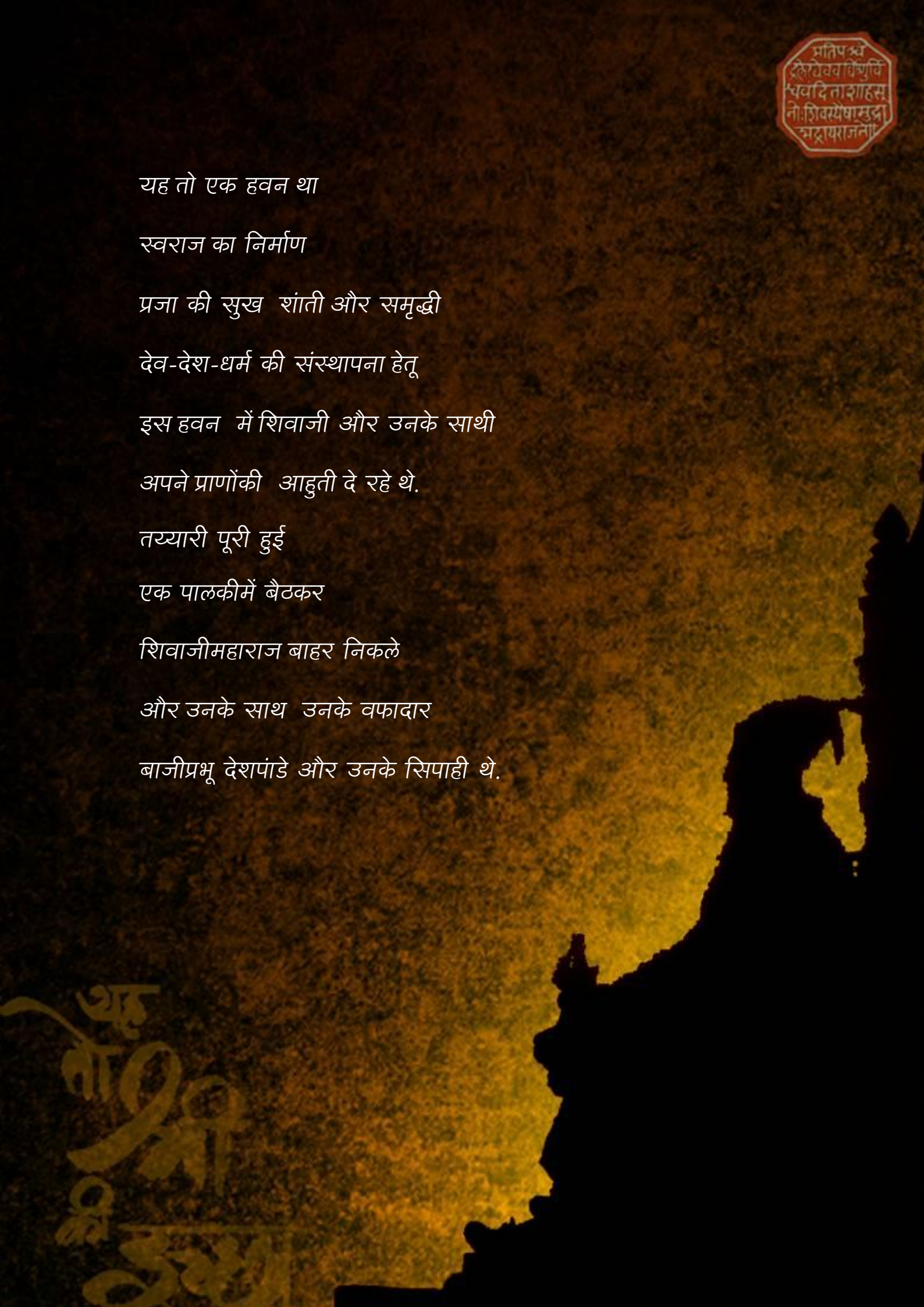

यह तो एक हवन था

स्वराज का निर्माण

प्रजा की सुख शांती और समृद्धी

देव-देश-धर्म की संस्थापना हेतू

इस हवन में शिवाजी और उनके साथी

अपने प्राणोंकी आहुती दे रहे थे.

तय्यारी पूरी हुई

एक पालकीमें बैठकर

शिवाजीमहाराज बाहर निकले

और उनके साथ उनके वफादार

बाजीप्रभू देशपांडे और उनके सिपाही थे.

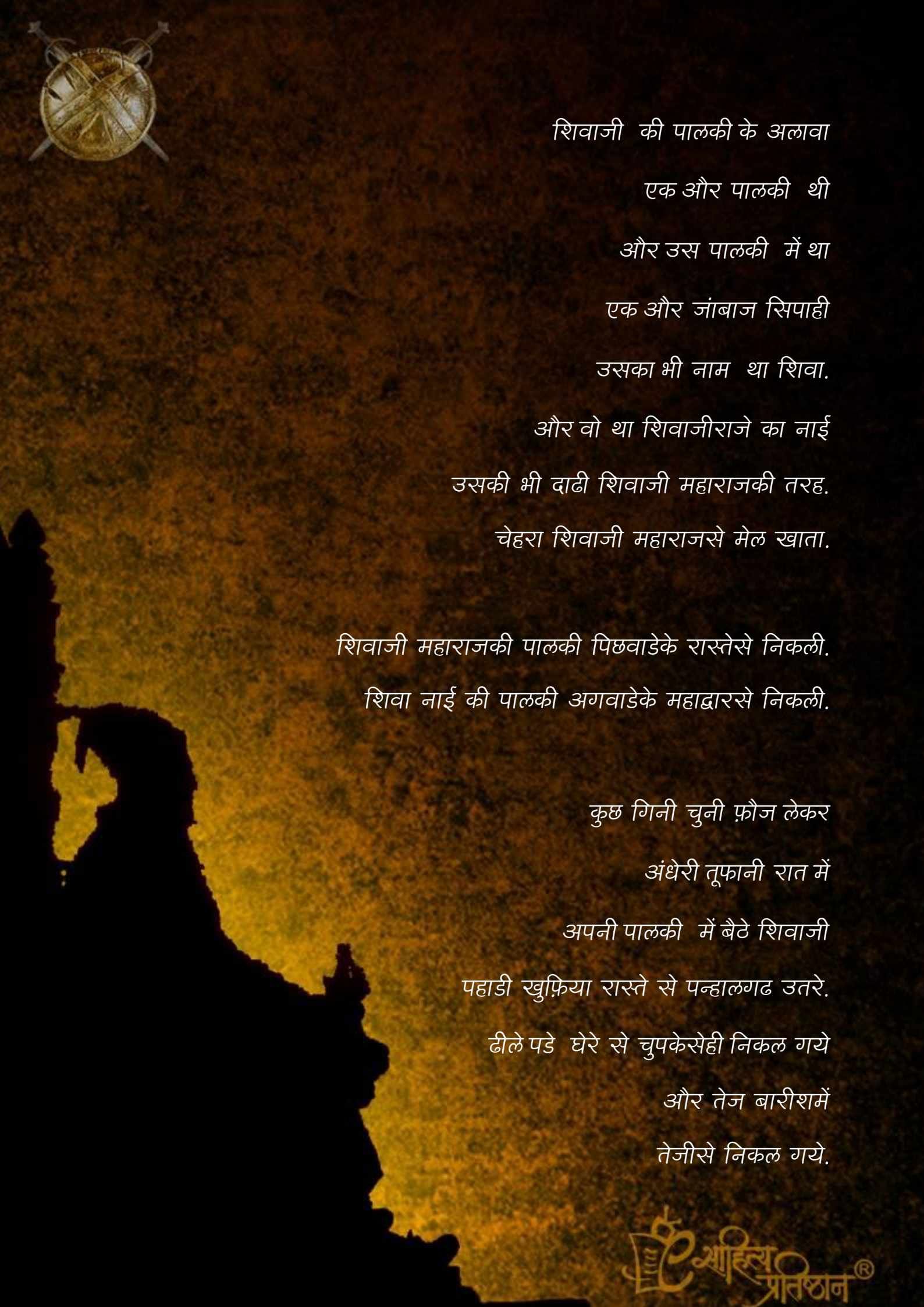

शिवाजी की पालकी के अलावा

एक और पालकी थी

और उस पालकी में था

एक और जांबाज सिपाही

उसका भी नाम था शिवा.

और वो था शिवाजीराजे का नाई

उसकी भी दाढी शिवाजी महाराजकी तरह.

चेहरा शिवाजी महाराजसे मेल खाता.

शिवाजी महाराजकी पालकी पिछवाडेके रास्तेसे निकली.

शिवा नाई की पालकी अगवाडेके महाद्वारसे निकली.

कुछ गिनी चुनी फ़ौज लेकर

अंधेरी तूफानी रात में

अपनी पालकी में बैठे शिवाजी

पहाडी खुफ़िया रास्ते से पन्हालगढ उतरे.

ढीले पडे घेरे से चुपकेसेही निकल गये

और तेज बारीशमें

तेजीसे निकल गये.

वहां मुख्य दरवाजेसे शिवा नाईकी पालकी उतरी

कुछही देर में, जौहर के सैनिकोंको

वह पालकी दिख गयी

दुश्मन दिख गया

शिवाजी की पालकी देखकर वह खुश हुए

पालकी और उसमे बैठा इन्सान कैद हुए

सैनिक पालकी लेकर

चिल्ला चिल्लाकर वापस सिद्दी जौहर के सामने गये

सारी सेनामें खुशीका माहौल फ़ैल गया.

सिद्दी जौहरकी खुशी तो आसमान फ़ाडकर गुंज उठी

अल्लाहो अकबर

सिद्दी जौहरको लगा

जंग तो अब खतम हो गयी

अब वह खुद बादशाह बननेके मनसूबे रचनेही लगा

तभी अचानक ...

पालकी से निकलते इन्सान को देख

जौहर का खून खौल उठा

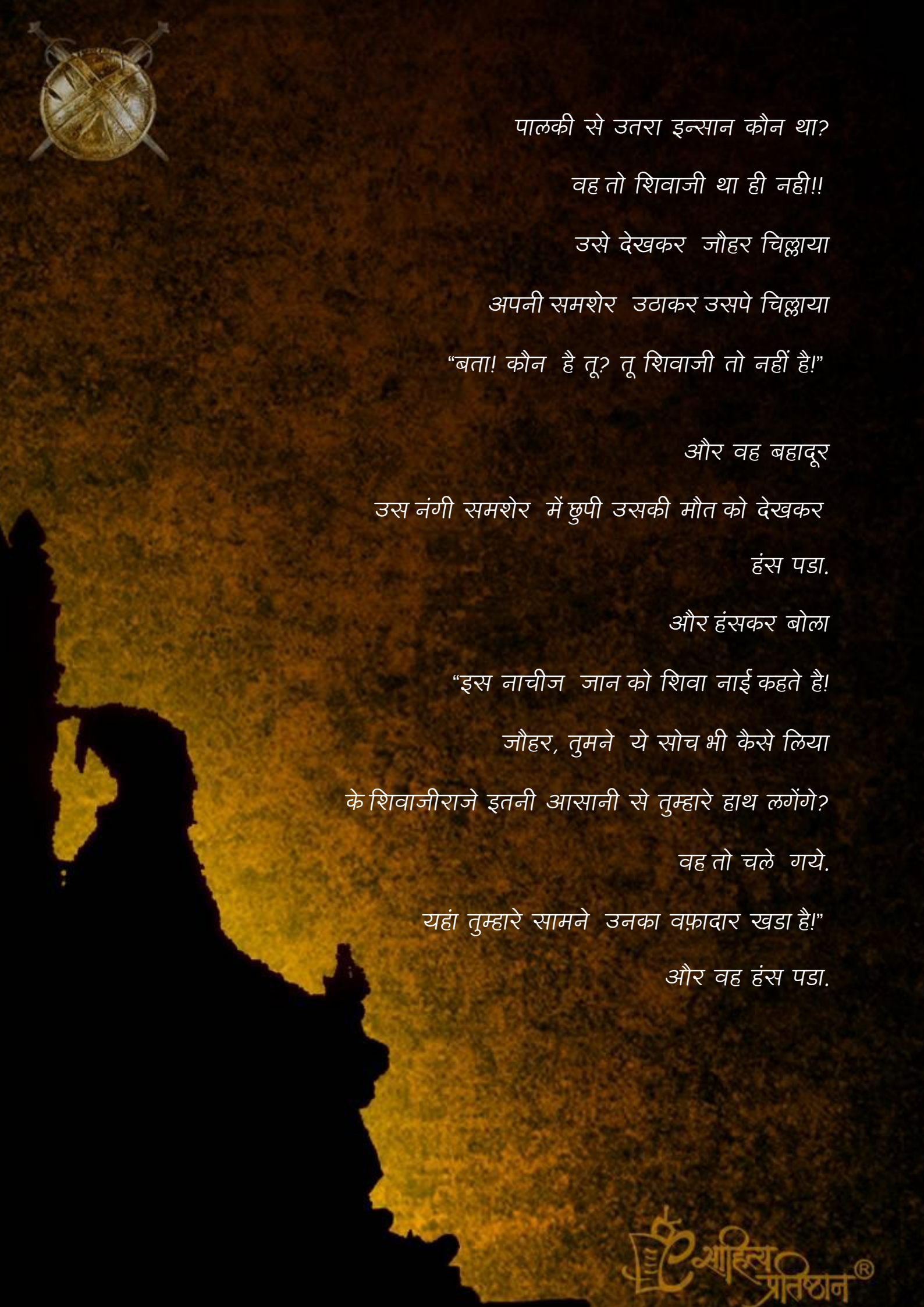

पालकी से उतरा इन्सान कौन था?

वह तो शिवाजी था ही नही!!

उसे देखकर जौहर चिल्लाया

अपनी समशेर उठाकर उसपे चिल्लाया

"बता! कौन है तू? तू शिवाजी तो नहीं है!"

और वह बहादूर

उस नंगी समशेर में छुपी उसकी मौत को देखकर

हंस पडा.

और हंसकर बोला

"इस नाचीज जान को शिवा नाई कहते है!

जौहर, तुमने ये सोच भी कैसे लिया

के शिवाजीराजे इतनी आसानी से तुम्हारे हाथ लगेंगे?

वह तो चले गये.

यहां तुम्हारे सामने उनका वफ़ादार खडा है!"

और वह हंस पडा.

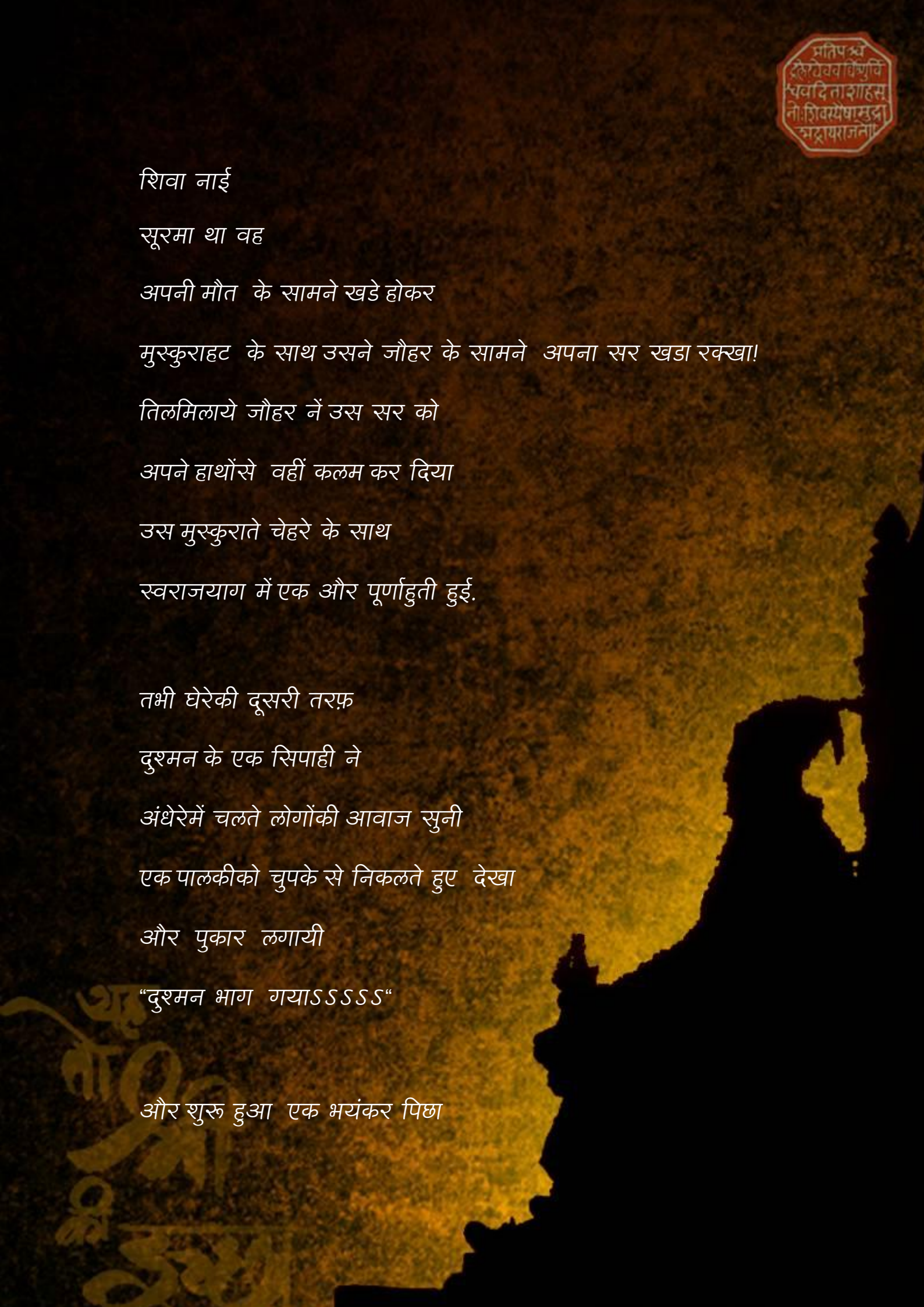

शिवा नाई

सूरमा था वह

अपनी मौत के सामने खडे होकर

मुस्कुराहट के साथ उसने जौहर के सामने अपना सर खडा रक्खा!

तिलमिलाये जौहर नें उस सर को

अपने हाथोंसे वहीं कलम कर दिया

उस मुस्कुराते चेहरे के साथ

स्वराजयाग में एक और पूर्णाहुती हुई.

तभी घेरेकी दूसरी तरफ़

दुश्मन के एक सिपाही ने

अंधेरेमें चलते लोगोंकी आवाज सुनी

एक पालकीको चुपके से निकलते हुए देखा

और पुकार लगायी

“दुश्मन भाग गयाऽऽऽऽऽ“

और शुरू हुआ एक भयंकर पिछा

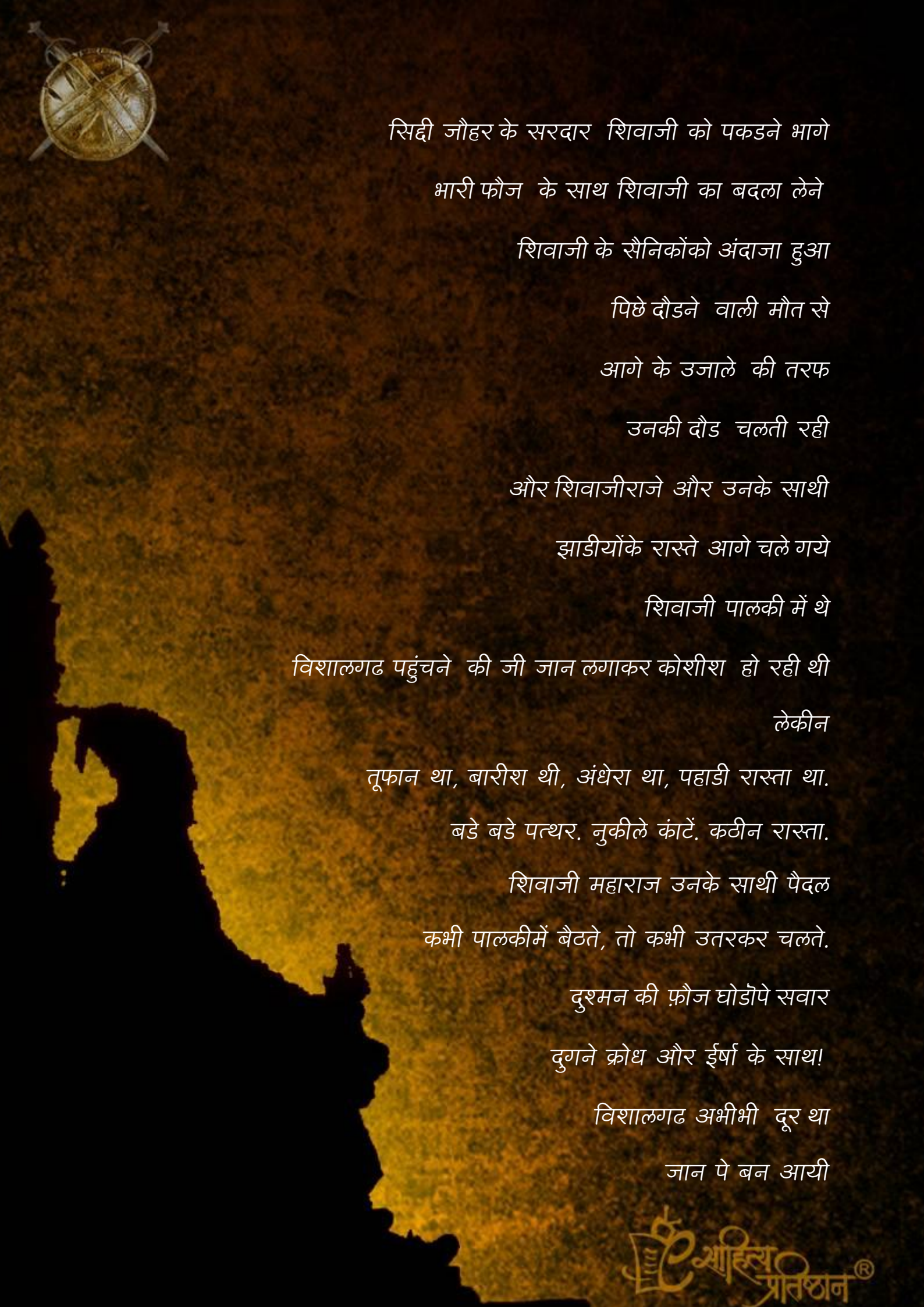

सिद्दी जौहर के सरदार शिवाजी को पकडने भागे

भारी फौज के साथ शिवाजी का बदला लेने

शिवाजी के सैनिकोंको अंदाजा हुआ

पिछे दौडने वाली मौत से

आगे के उजाले की तरफ

उनकी दौड चलती रही

और शिवाजीराजे और उनके साथी

झाडीयोंके रास्ते आगे चले गये

शिवाजी पालकी में थे

विशालगढ पहुंचने की जी जान लगाकर कोशीश हो रही थी

लेकीन

तूफान था, बारीश थी, अंधेरा था, पहाडी रास्ता था.

बडे बडे पत्थर. नुकीले कांटें. कठीन रास्ता.

शिवाजी महाराज उनके साथी पैदल

कभी पालकीमें बैठते, तो कभी उतरकर चलते.

दुश्मन की फ़ौज घोडोंपे सवार

दुगने क्रोध और ईर्षा के साथ!

विशालगढ अभीभी दूर था

जान पे बन आयी

साहित्य प्रतिष्ठान®

तभी शिवाजी और स्वराज पर आयी ये मुसीबत

शिवाजीके सरदार बाजीप्रभू देशपांडे ने

अपने सरके उपर ली.

इतिहासके एक महान अध्यायका जन्म हुवा.

शिवा नाईके बलिदानके साथ साथ

बाजीप्रभू देशपांडेकी बलिदानकी कहानी

आज भी जनजनको उत्साह देती है.

ऐसे साथीयोंके कारण ही स्वराजका यज्ञ जलता रहा.

बाजीप्रभू देशपांडे शिवाजी के एक जांबाज सरदार थे.

पन्हालगढ से विशालगढकी यात्रामें

उनके सहकारी.

रास्तेमें जब एक दर्रा आया तो उन्होने शिवाजी से कहा

“राजे, आप आगे जाईये.

मैं इस छोटेसे दर्रेमें रुकूंगा

मैं दुश्मन को रोक रखूंगा.

दुश्मनको यह दर्रा लंघकर जाना नामुमकिन करुंगा

बस विशालगढ पहुंचतेही तोफ चला दिजीएगा

तब तक दुश्मन का एक सैनिक भी

मुझे पार नहीं कर पाएगा!”

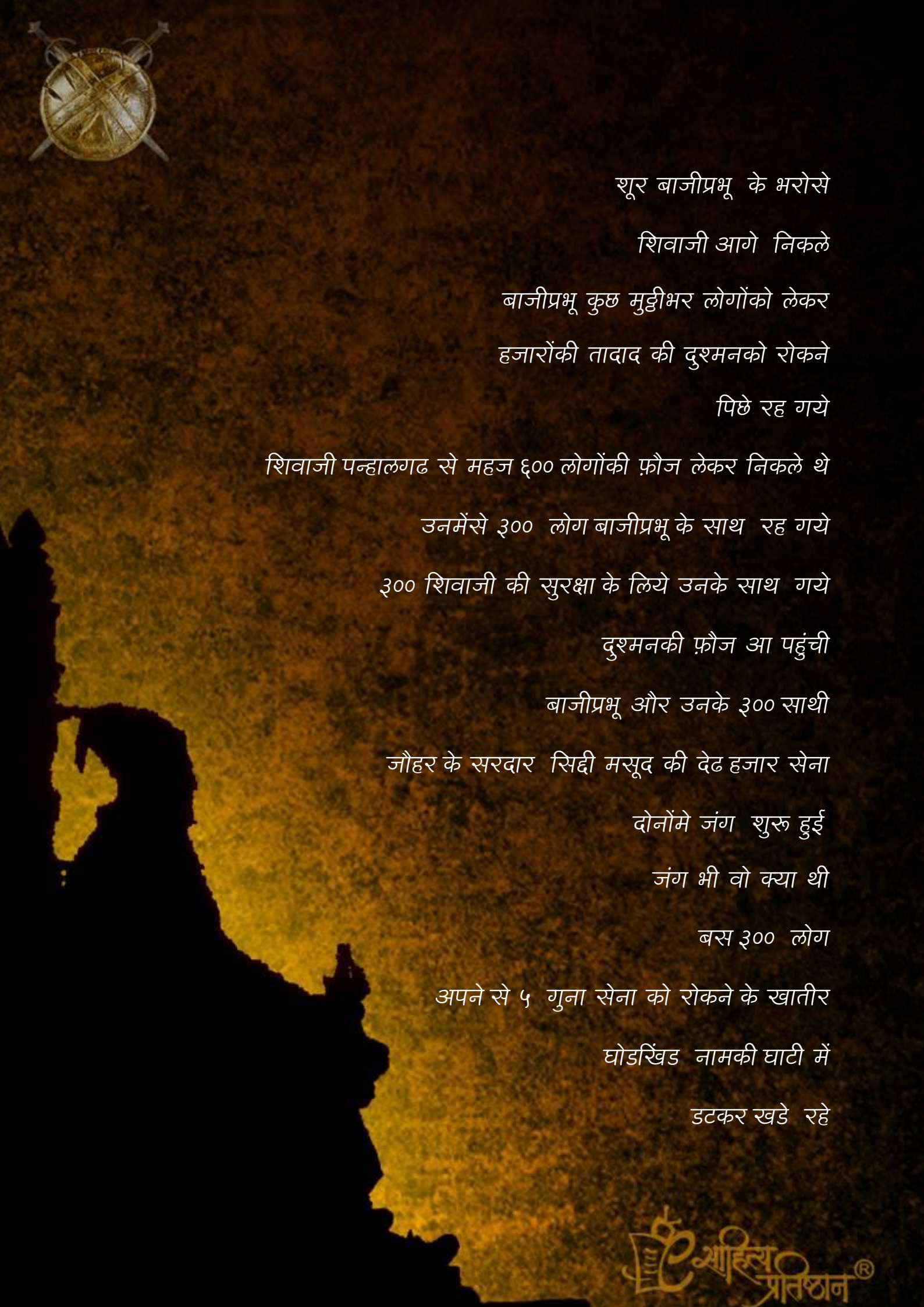

शूर बाजीप्रभू के भरोसे

शिवाजी आगे निकले

बाजीप्रभू कुछ मुट्ठीभर लोगोंको लेकर

हजारोंकी तादाद की दुश्मनको रोकने

पिछे रह गये

शिवाजी पन्हालगढ से महज ६०० लोगोंकी फ़ौज लेकर निकले थे

उनमेंसे ३०० लोग बाजीप्रभू के साथ रह गये

३०० शिवाजी की सुरक्षा के लिये उनके साथ गये

दुश्मनकी फ़ौज आ पहुंची

बाजीप्रभू और उनके ३०० साथी

जौहर के सरदार सिद्दी मसूद की देढ हजार सेना

दोनोंमे जंग शुरू हुई

जंग भी वो क्या थी

बस ३०० लोग

अपने से ५ गुना सेना को रोकने के खातीर

घोडखिंड नामकी घाटी में

डटकर खडे रहे

साहित्य प्रतिष्ठान®

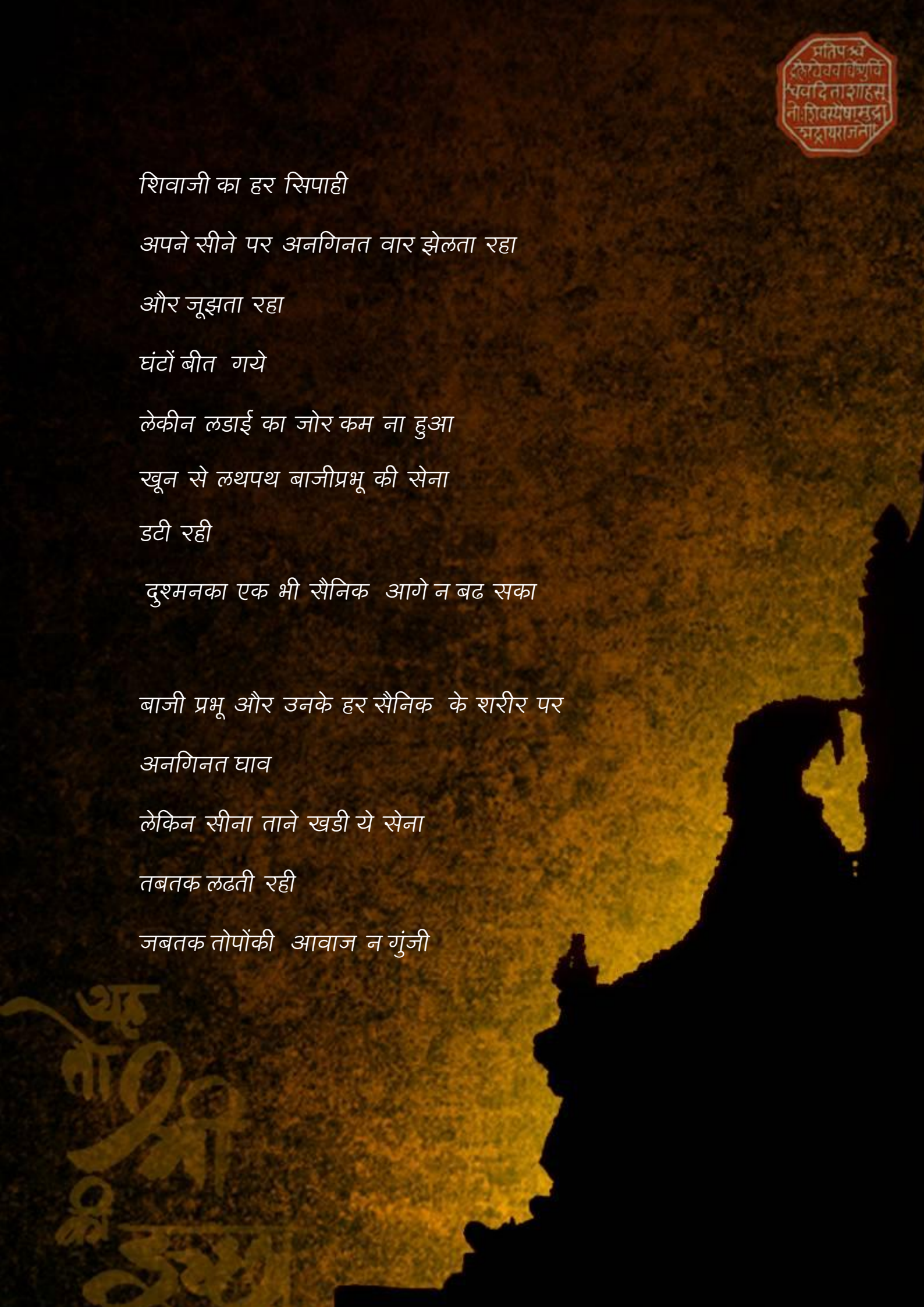

शिवाजी का हर सिपाही

अपने सीने पर अनगिनत वार झेलता रहा

और जूझता रहा

घंटों बीत गये

लेकीन लडाई का जोर कम ना हुआ

खून से लथपथ बाजीप्रभू की सेना

डटी रही

दुश्मनका एक भी सैनिक आगे न बढ सका

बाजी प्रभू और उनके हर सैनिक के शरीर पर

अनगिनत घाव

लेकिन सीना ताने खडी ये सेना

तबतक लढती रही

जबतक तोपोंकी आवाज न गुंजी

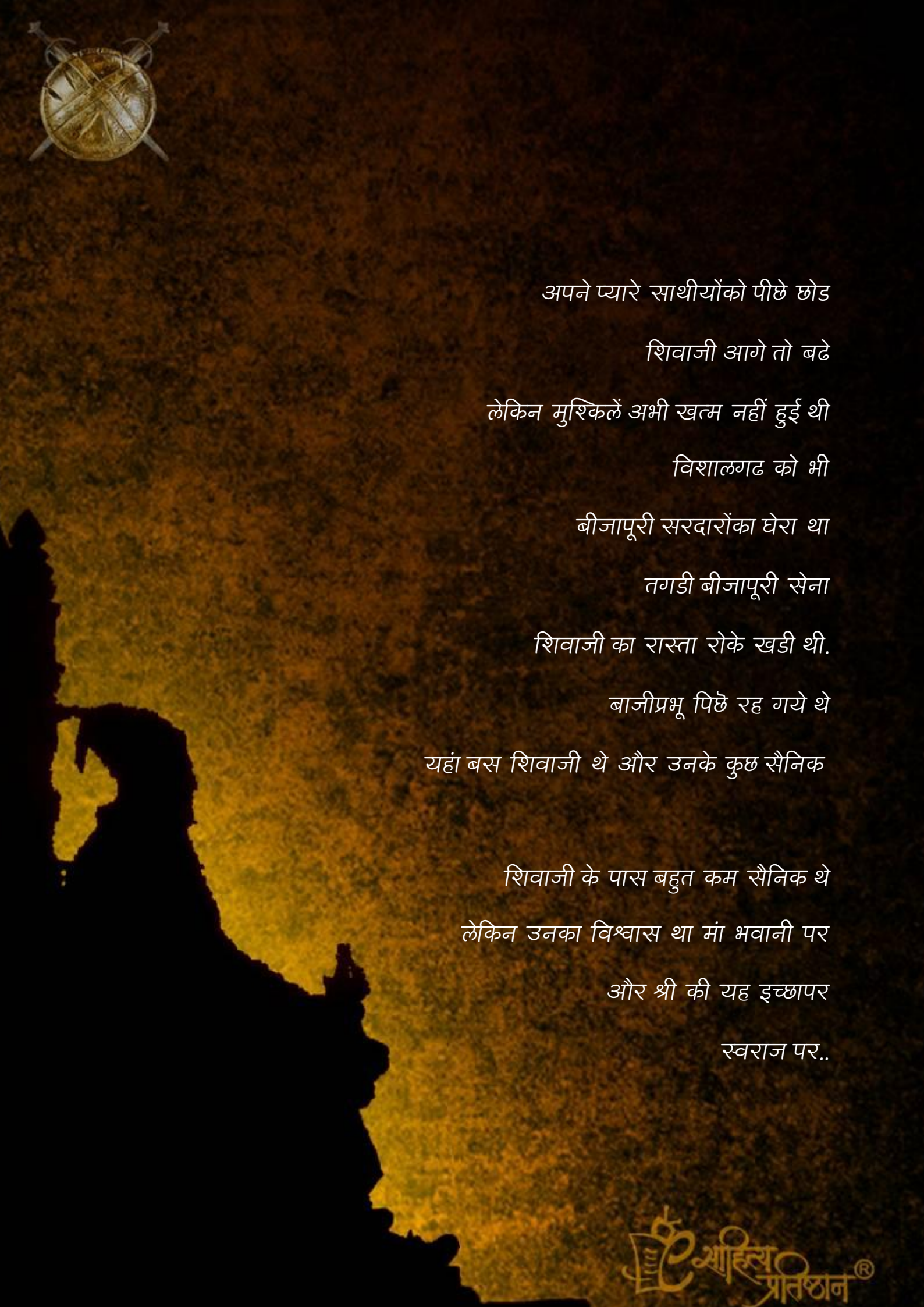

अपने प्यारे साथीयोंको पीछे छोड

शिवाजी आगे तो बढे

लेकिन मुश्किलें अभी खत्म नहीं हुई थी

विशालगढ को भी

बीजापूरी सरदारोंका घेरा था

तगडी बीजापूरी सेना

शिवाजी का रास्ता रोके खडी थी.

बाजीप्रभू पिछे रह गये थे

यहां बस शिवाजी थे और उनके कुछ सैनिक

शिवाजी के पास बहुत कम सैनिक थे

लेकिन उनका विश्वास था मां भवानी पर

और श्री की यह इच्छापर

स्वराज पर..

साहित्य प्रतिष्ठान®

मन ही मन वह जानते थे के बाजीप्रभू

उनके लिये कुर्बानी दे रहे थे

और उनके साथ उनके ३०० साथी भी.

शाहिस्तेखॉं और जौहर के जुल्म

प्रजा को तडपा रहे थे

और उन सब को

अपने राजा की जरूरत थी.

महाराजने अपनी तलवार उठायी

भोले शंकर और मां भवानी का नाम लिया

हरहर महादेवका नारा लगाया

और बीजापूरी दुश्मन पर कहर बनकर टूट पडे

उनकी समशेर चलते देख

उनके ३०० साथी हाथीयोंकी ताकत के साथ लडे

हर इन्सान के शरीर के घाव

लहू का हर कतरा

और दर्द से बहाया हर आसूं

आखिरकार काम आये

शिवाजी महाराज विशालगढ किले में

सहीसलामत दाखिल हुए

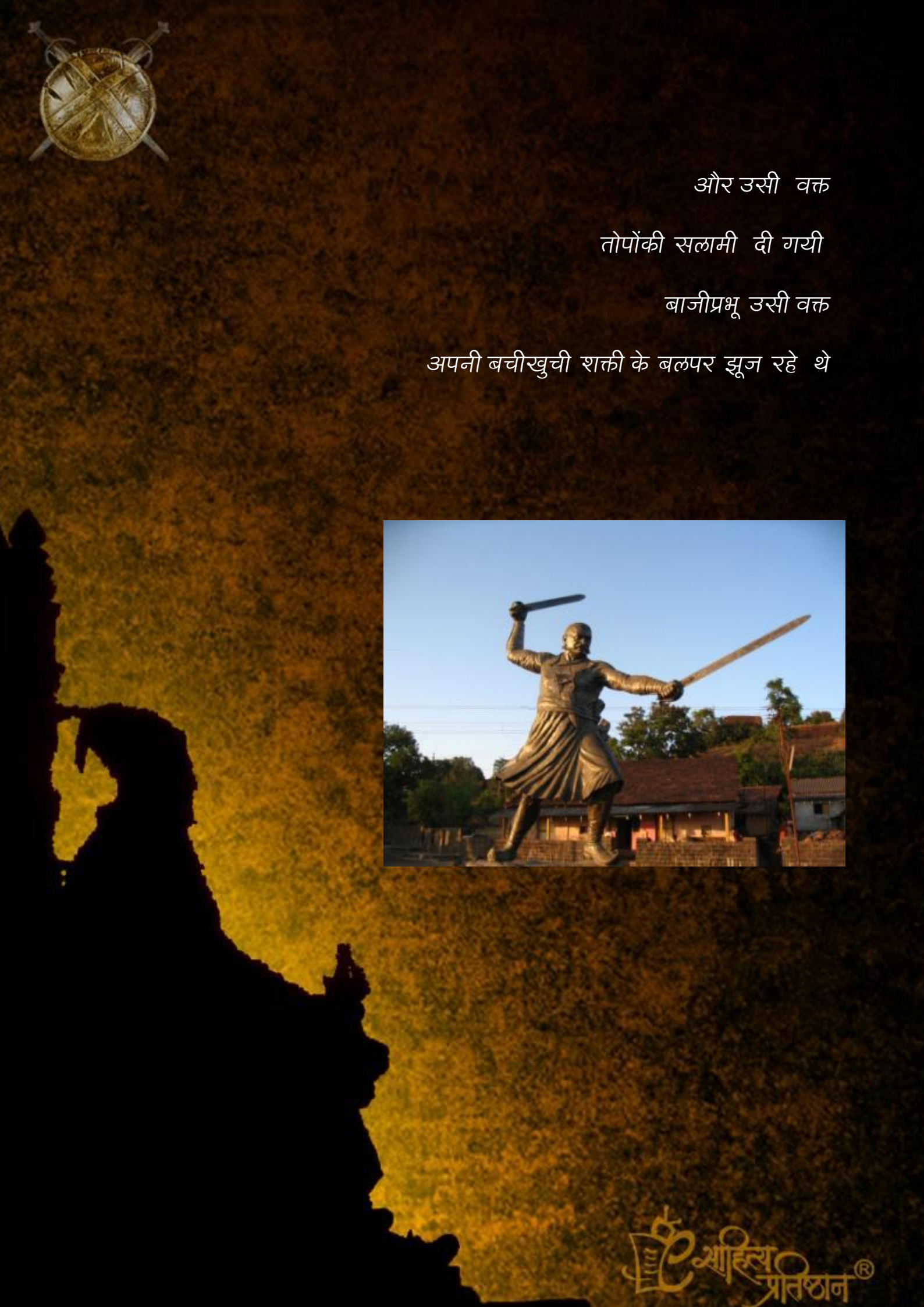

और उसी वक्त

तोपोंकी सलामी दी गयी

बाजीप्रभू उसी वक्त

अपनी बचीखुची शक्ती के बलपर झूज रहे थे

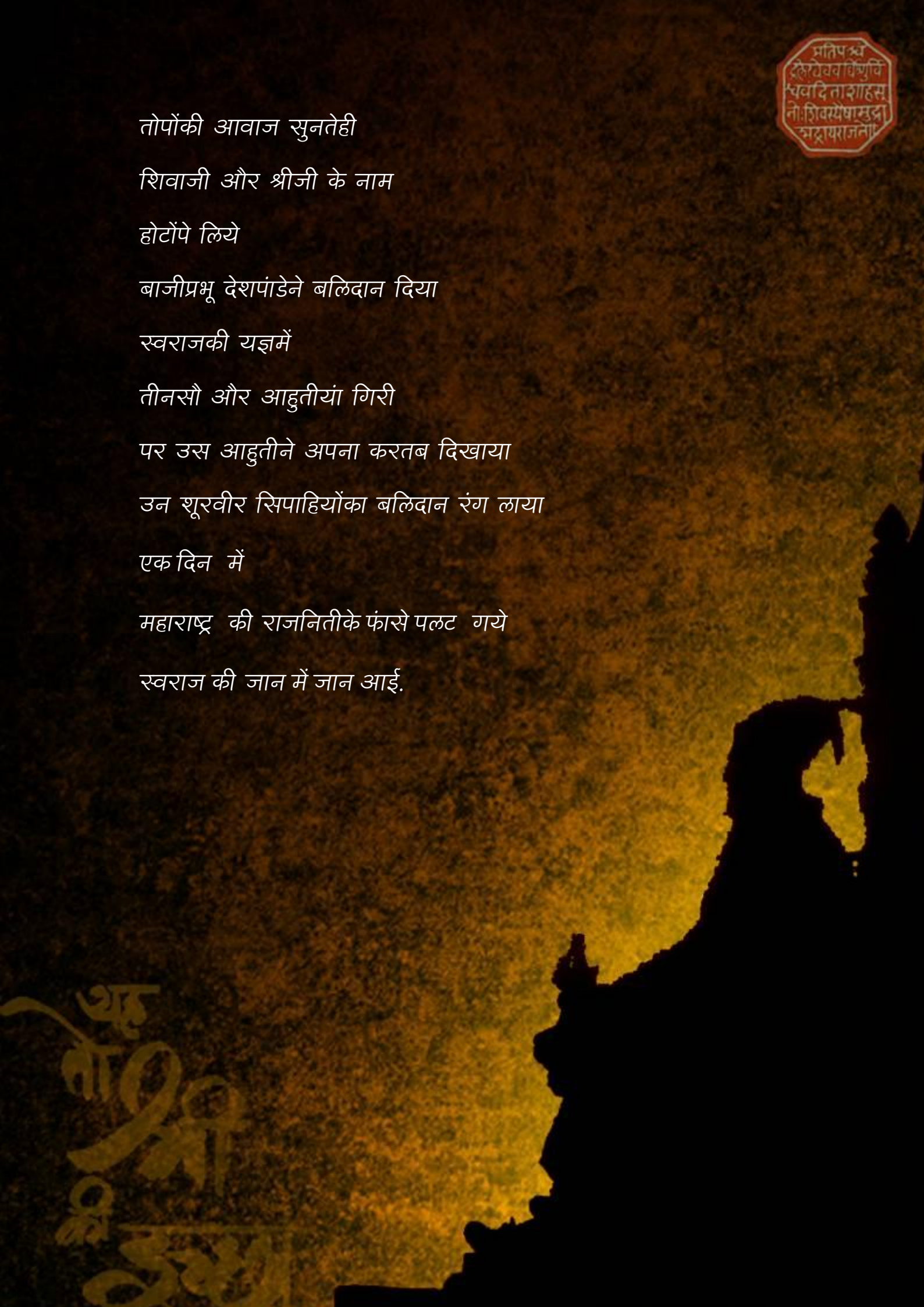

तोपोंकी आवाज सुनतेही

शिवाजी और श्रीजी के नाम

होटोंपे लिये

बाजीप्रभू देशपांडेने बलिदान दिया

स्वराजकी यज्ञमें

तीनसौ और आहुतीयां गिरी

पर उस आहुतीने अपना करतब दिखाया

उन शूरवीर सिपाहियोंका बलिदान रंग लाया

एक दिन में

महाराष्ट्र की राजनितीके फांसे पलट गये

स्वराज की जान में जान आई.

बाजीप्रभू नामके एक और हीरे की

याग में पूर्णाहुती पडी.

शिवाजी राजे सही सलामत रहे

लेकिन उन्होंने अपना साथी खो दिया

जिस जगह पर बाजीप्रभू शहीद हुए

उस घोडखिंड घाटी को

शिवाजी ने "पावनखिंड" नाम दिया

क्योंकी वह घाटी

३०० शूर सैनिकों और बाजीप्रभू जैसे सेनानीके

लहू से पावन हुई थी.

साहित्य प्रतिष्ठान®

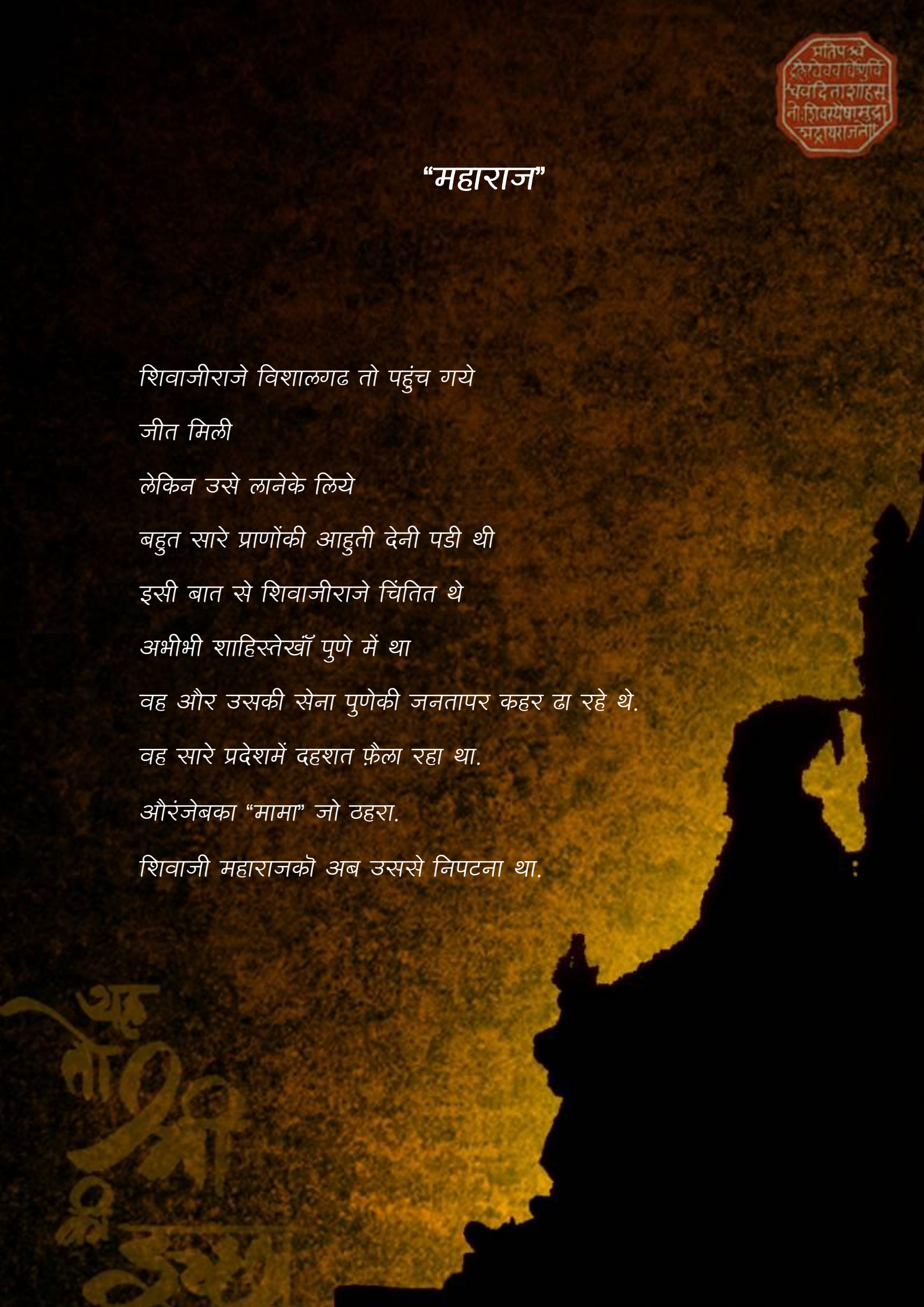

“महाराज”

शिवाजीराजे विशालगढ तो पहुंच गये

जीत मिली

लेकिन उसे लानेके लिये

बहुत सारे प्राणोंकी आहुती देनी पडी थी

इसी बात से शिवाजीराजे चिंतित थे

अभीभी शाहिस्तेखाँ पुणे में था

वह और उसकी सेना पुणेकी जनतापर कहर ढा रहे थे.

वह सारे प्रदेशमें दहशत फ़ैला रहा था.

औरंजेबका “मामा” जो ठहरा.

शिवाजी महाराजकों अब उससे निपटना था.

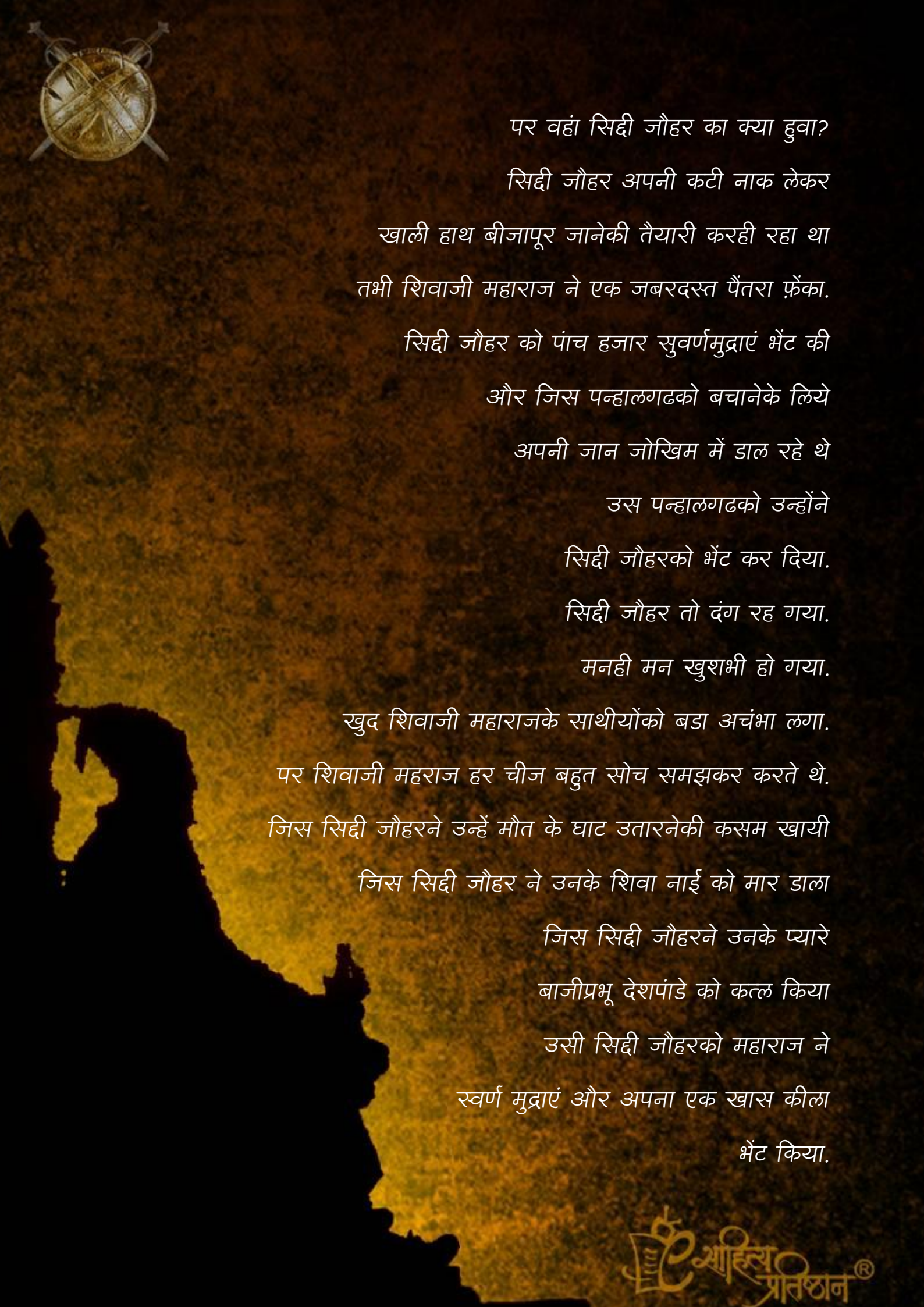

पर वहां सिद्दी जौहर का क्या हुवा?

सिद्दी जौहर अपनी कटी नाक लेकर

खाली हाथ बीजापूर जानेकी तैयारी करही रहा था

तभी शिवाजी महाराज ने एक जबरदस्त पैंतरा फ़ेंका.

सिद्दी जौहर को पांच हजार सुवर्णमुद्राएं भेंट की

और जिस पन्हालगढको बचानेके लिये

अपनी जान जोखिम में डाल रहे थे

उस पन्हालगढको उन्होंने

सिद्दी जौहरको भेंट कर दिया.

सिद्दी जौहर तो दंग रह गया.

मनही मन खुशभी हो गया.

खुद शिवाजी महाराजके साथीयोंको बडा अचंभा लगा.

पर शिवाजी महराज हर चीज बहुत सोच समझकर करते थे.

जिस सिद्दी जौहरने उन्हें मौत के घाट उतारनेकी कसम खायी

जिस सिद्दी जौहर ने उनके शिवा नाई को मार डाला

जिस सिद्दी जौहरने उनके प्यारे

बाजीप्रभू देशपांडे को कत्ल किया

उसी सिद्दी जौहरको महाराज ने

स्वर्ण मुद्राएं और अपना एक खास कीला

भेंट किया.

साहित्य प्रतिष्ठान®

शिवाजी महाराज के इस पैंतरेको कोई नहीं समझ पाया

पर उनकी तरकीब रंग लायी.

सिद्दी जौहरकी सेनामें अफ़झलखानके दो बेटे थे.

और बीजापूरके आदिलशाह के कई चमचे भी थे

इन लोगोंको जब यह बात मालूम पडी

तब उन्होंने जाकर बीजापूरमें

बादशाहके और बेगमके कान फ़ूंके

उन्होंने यह बात भी कह डाली

की शायद शिवाजी और सिद्दी मिल गये है.

इसी कारण सिद्दी जौहरने

शिवाजी को

जानबूझकर जिंदा जाने दिया.

बादशाह और बेगम भडक उठे.

एन्हें इस दगाबाज सिद्दी जौहरका इतना गुस्सा आया

की उन्होंने उसे अपनी सरदार पदसे

बेदखल कर दिया.

और उनकी सेनामें आपसमें ठन गयी.

लडते लडते दोनों खत्म हो गये.

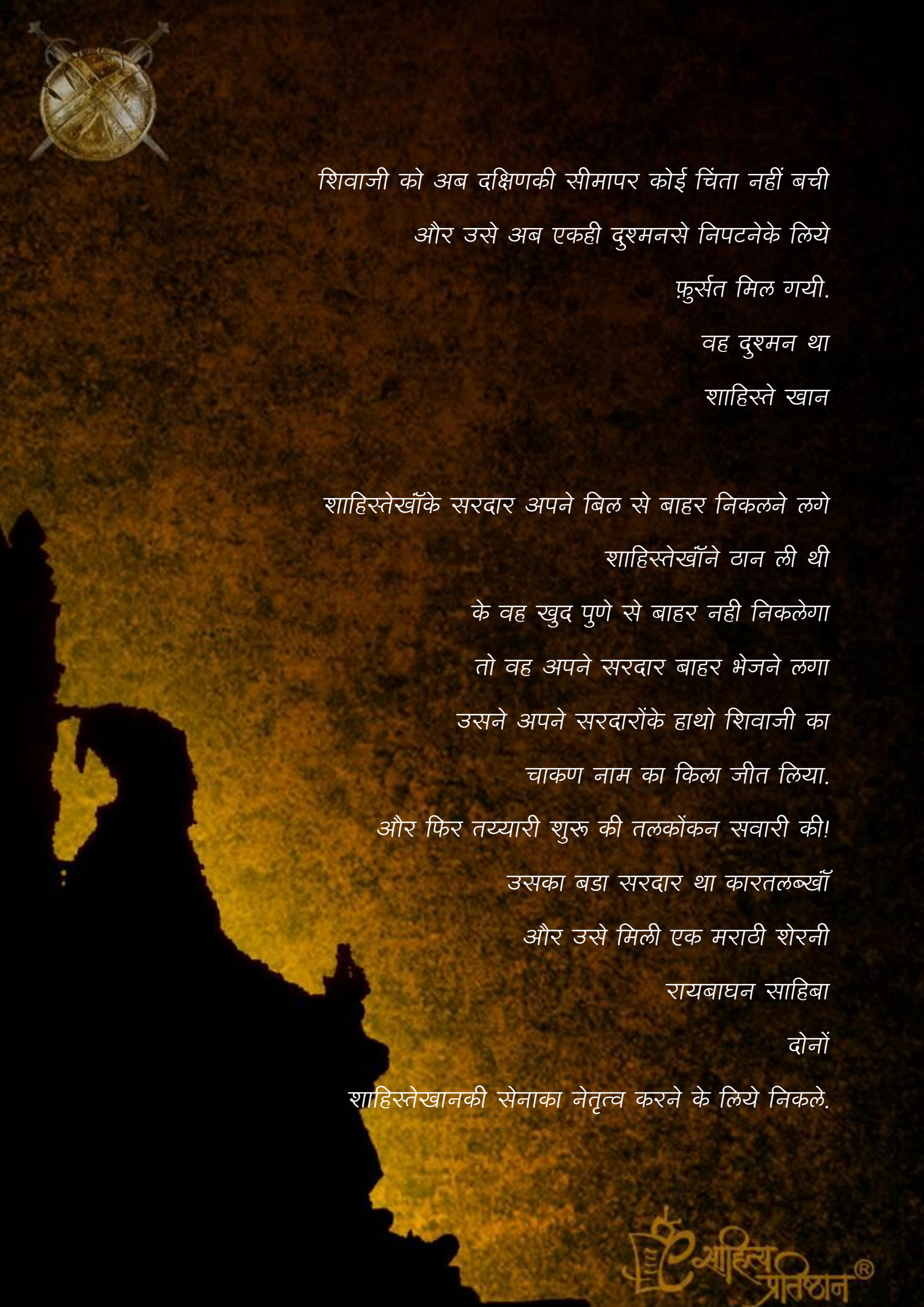

शिवाजी को अब दक्षिणकी सीमापर कोई चिंता नहीं बची
और उसे अब एकही दुश्मनसे निपटनेके लिये
फ़ुर्सत मिल गयी.
वह दुश्मन था
शाहिस्ते खान

शाहिस्तेखॉंके सरदार अपने बिल से बाहर निकलने लगे
शाहिस्तेखॉंने ठान ली थी
के वह खुद पुणे से बाहर नही निकलेगा
तो वह अपने सरदार बाहर भेजने लगा
उसने अपने सरदारोंके हाथो शिवाजी का
चाकण नाम का किला जीत लिया.
और फिर तय्यारी शुरू की तलकोंकन सवारी की!
उसका बडा सरदार था कारतलब्खॉं
और उसे मिली एक मराठी शेरनी
रायबाघन साहिबा
दोनों
शाहिस्तेखानकी सेनाका नेतृत्व करने के लिये निकले.

साहित्य प्रतिष्ठान®

कारतलबखॉं शूर सिपाही था,

लेकिन उसको मराठी मुल्क की जानकारीही नहीं थी

उसने अपनी सवारी के लिये

सह्याद्री पर्बत को लांघनेवालाअत्यंत कठीन पहाडी रास्ता चुना

उसके साथ उसकी सेना हाथी और तोपोंसे लदी हुई

और उनके साथ वह सह्याद्री की दुर्गम पहडी चढने लगा

चढाई के दौरानही सेना की हालत खस्ता हुई

हाथी और तोपोंकी वजह से पहाड से पत्थर गिरे

और उन्ही पत्थरोंसे खान के कई सिपाहियोंकी जाने गईं.

जैसे तैसे खान की फौज पहाडी के सिरे तक पहुंच गयी

घना जंगल, खडी चढाई,

जगह की कमी, ना खाना ना पानी..

ऐसे हालात में खान के लिये एक

और मुसीबत वहां इंतजार कर रही थी

स्वयं शिवाजीराजे!

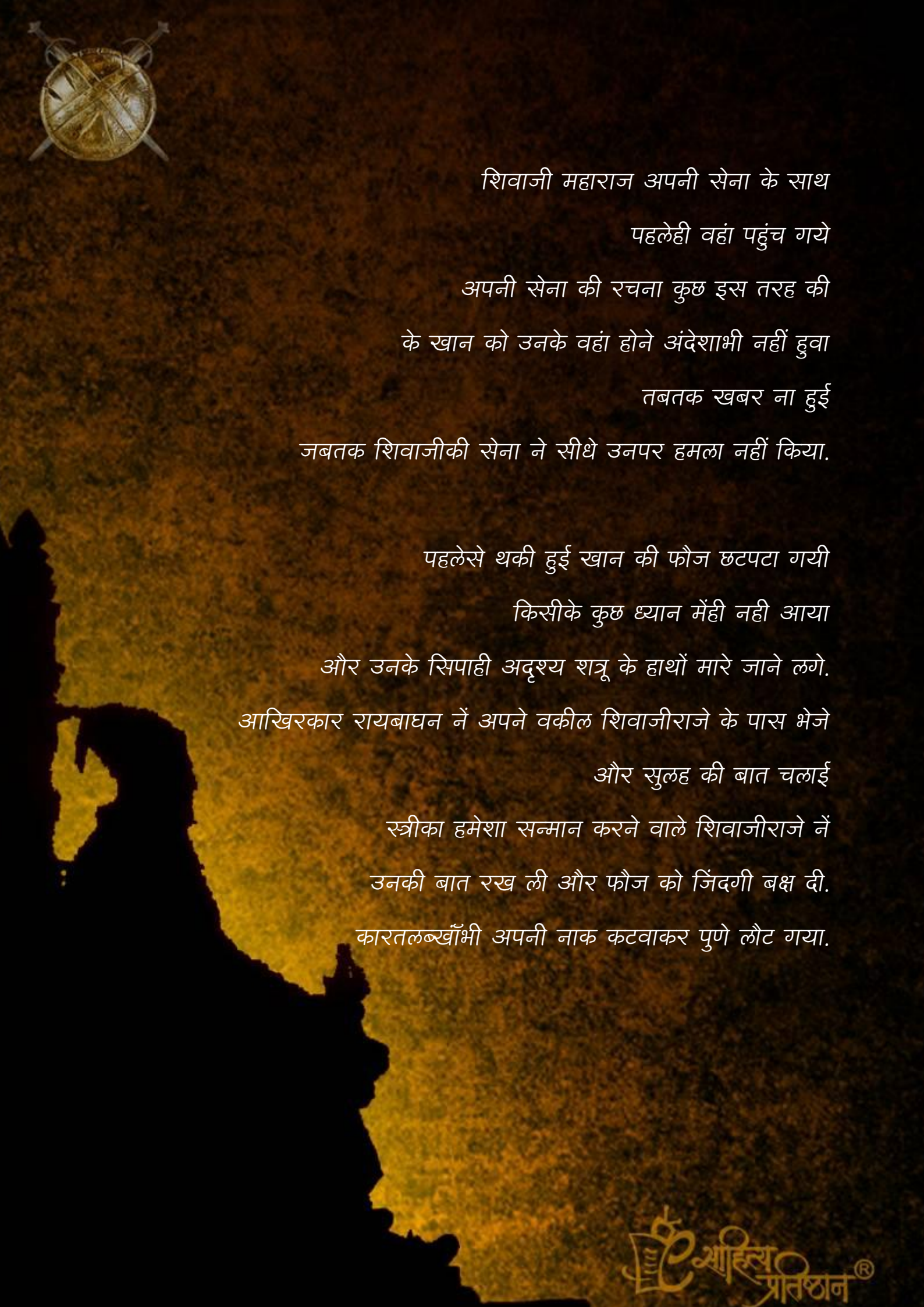

शिवाजी महाराज अपनी सेना के साथ
पहलेही वहां पहुंच गये
अपनी सेना की रचना कुछ इस तरह की
के खान को उनके वहां होने अंदेशाभी नहीं हुवा
तबतक खबर ना हुई
जबतक शिवाजीकी सेना ने सीधे उनपर हमला नहीं किया.

पहलेसे थकी हुई खान की फौज छटपटा गयी
किसीके कुछ ध्यान मेंही नही आया
और उनके सिपाही अदृश्य शत्रू के हाथों मारे जाने लगे.
आखिरकार रायबाघन नें अपने वकील शिवाजीराजे के पास भेजे
और सुलह की बात चलाई
स्त्रीका हमेशा सन्मान करने वाले शिवाजीराजे नें
उनकी बात रख ली और फौज को जिंदगी बक्ष दी.
कारतलब्खॉभी अपनी नाक कटवाकर पुणे लौट गया.

साहित्य प्रतिष्ठान®

शिवाजीराजे ने अपनी असीम बुद्धीमत्ता का परिचय

फिर एक बार दिया.

वह एक नयी चाल खेलते.

बस एक ही बार.
दुश्मन उनकी हर खेली हुई चालका सामना करने

तय्यार बैठे रहते.

और राजे हर बार नयी चाल खेलकर दुश्मन को मात देते.

अपनी बुद्धीमत्ता की बदौलत इस बार शिवाजी ने

अपने मन का बोझ कुछ हल्का सा किया

पन्हालगढ-पावनखिंड-विशालगढ की लडाईयोंमे

उनकी जो अपरिमित जीवितहानी हुई

उसे इस बार कारतलब्खॉके पैंतरे में उन्होंने टाल दिया.

संपूर्ण विजय.

यहीं होती है एक यशस्वी शासक की पहचान

अपने कांधोपर पडी जिम्मेदारीयाँ निभाते वक्त

हर एक चीज का खयाल रखना

खास कर अपनी प्रजा और सेना का.

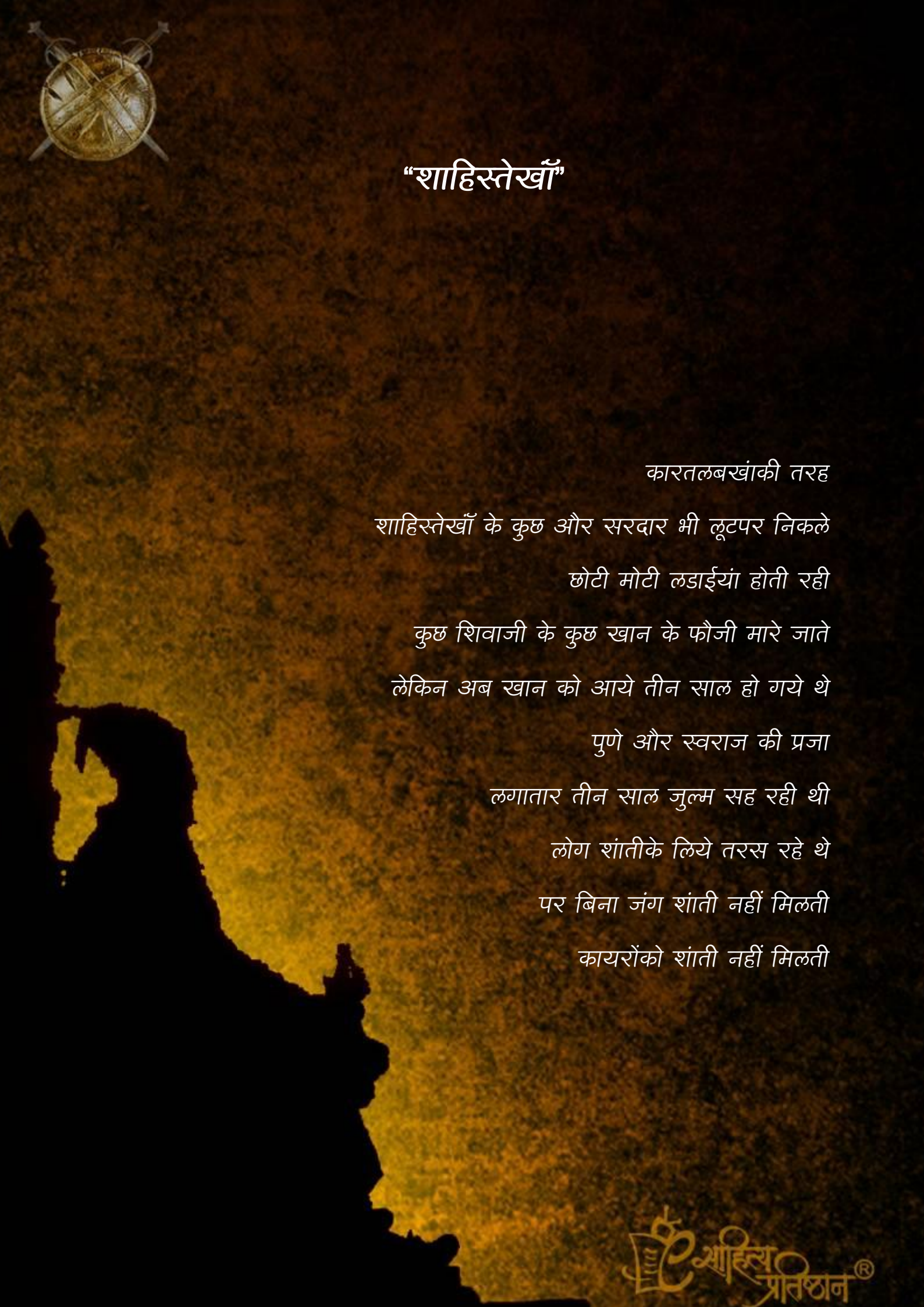

"शाहिस्तेखाँ"

कारतलबखांकी तरह
शाहिस्तेखाँ के कुछ और सरदार भी लूटपर निकले
छोटी मोटी लडाईयां होती रही
कुछ शिवाजी के कुछ खान के फौजी मारे जाते
लेकिन अब खान को आये तीन साल हो गये थे
पुणे और स्वराज की प्रजा
लगातार तीन साल जुल्म सह रही थी
लोग शांतीके लिये तरस रहे थे
पर बिना जंग शांती नहीं मिलती
कायरोंको शांती नहीं मिलती

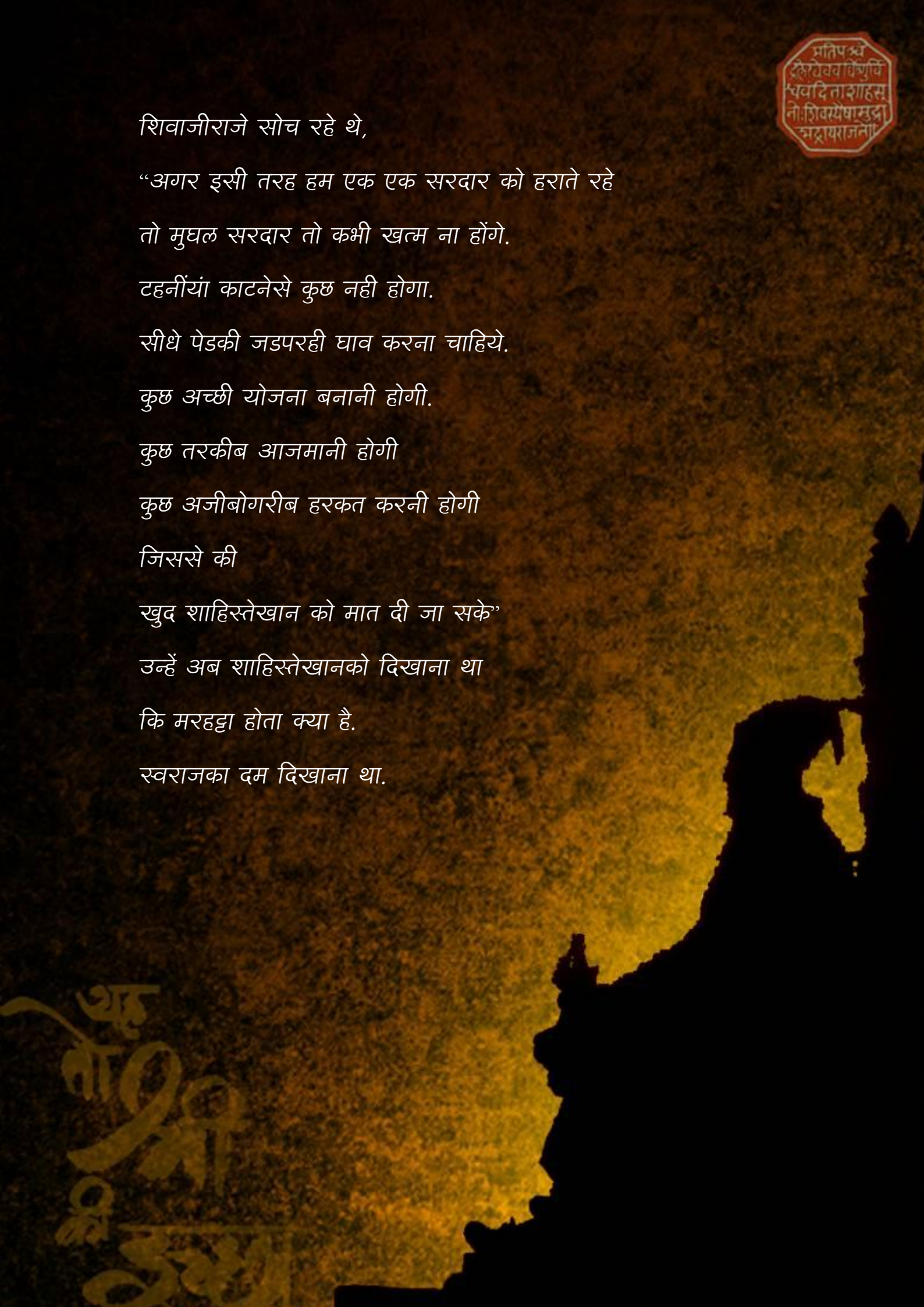

शिवाजीराजे सोच रहे थे,

“अगर इसी तरह हम एक एक सरदार को हराते रहे

तो मुघल सरदार तो कभी खत्म ना होंगे.

टहनीयां काटनेसे कुछ नही होगा.

सीधे पेडकी जडपरही घाव करना चाहिये.

कुछ अच्छी योजना बनानी होगी.

कुछ तरकीब आजमानी होगी

कुछ अजीबोगरीब हरकत करनी होगी

जिससे की

खुद शाहिस्तेखान को मात दी जा सके”

उन्हें अब शाहिस्तेखानको दिखाना था

कि मरहट्टा होता क्या है.

स्वराजका दम दिखाना था.

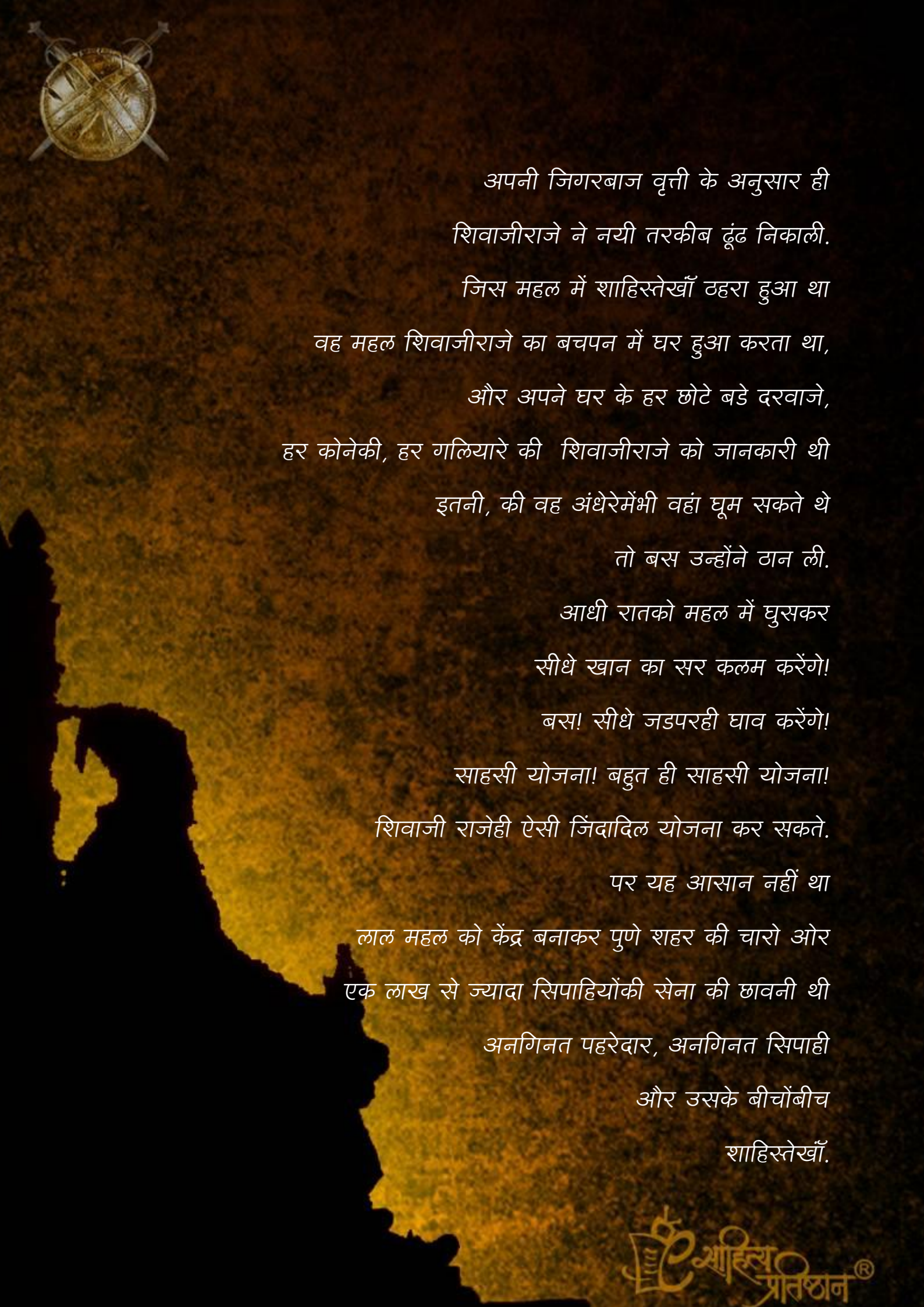

अपनी जिगरबाज वृत्ती के अनुसार ही
शिवाजीराजे ने नयी तरकीब ढूंढ निकाली.
जिस महल में शाहिस्तेखाँ ठहरा हुआ था
वह महल शिवाजीराजे का बचपन में घर हुआ करता था,
और अपने घर के हर छोटे बडे दरवाजे,
हर कोनेकी, हर गलियारे की शिवाजीराजे को जानकारी थी
इतनी, की वह अंधेरेमेंभी वहां घूम सकते थे
तो बस उन्होंने ठान ली.
आधी रातको महल में घुसकर
सीधे खान का सर कलम करेंगे!
बस! सीधे जडपरही घाव करेंगे!
साहसी योजना! बहुत ही साहसी योजना!
शिवाजी राजेही ऐसी जिंदादिल योजना कर सकते.
पर यह आसान नहीं था
लाल महल को केंद्र बनाकर पुणे शहर की चारो ओर
एक लाख से ज्यादा सिपाहियोंकी सेना की छावनी थी
अनगिनत पहरेदार, अनगिनत सिपाही
और उसके बीचोंबीच
शाहिस्तेखाँ.

साहित्य प्रतिष्ठान®

अपनी इस महत्त्वाकांक्षी योजना के लिये
शिवाजीराजे ने रमादान के महिने की छठी रात निश्चित की.
रमादान के रोजे शुरू होने की वजह से
दिनभर भूखा शाहिस्तेखाँ और उसकी भूखी सेना
शामको इफ्तार के बाद गहरी नींद में रहती थी
और उसी बात का राजे ने फायदा उठाया.

खुद शिवाजीराजे और उनके महज ४०० साथी
इस योजना को अंजाम देने निकले.
सामने एक लाखकी फ़ौज.
रात के दुसरे प्रहर में उन्होंने
मुघल सिपाहियोंका वेश लेकर
पहरेदारोंको चकमा दिया और छावन में घुसे.

एक एक कर सारे सिपाहीयोंने चुपचाप अपनी जगह लेली
और शिवाजीराजे अपने बचपन के कुछ दोस्तोंके साथ
सीधे लाल महल की तरफ बढे.
ऐसे दोस्त
जिन्हें उनके इस घरकी खूब पहचान थी

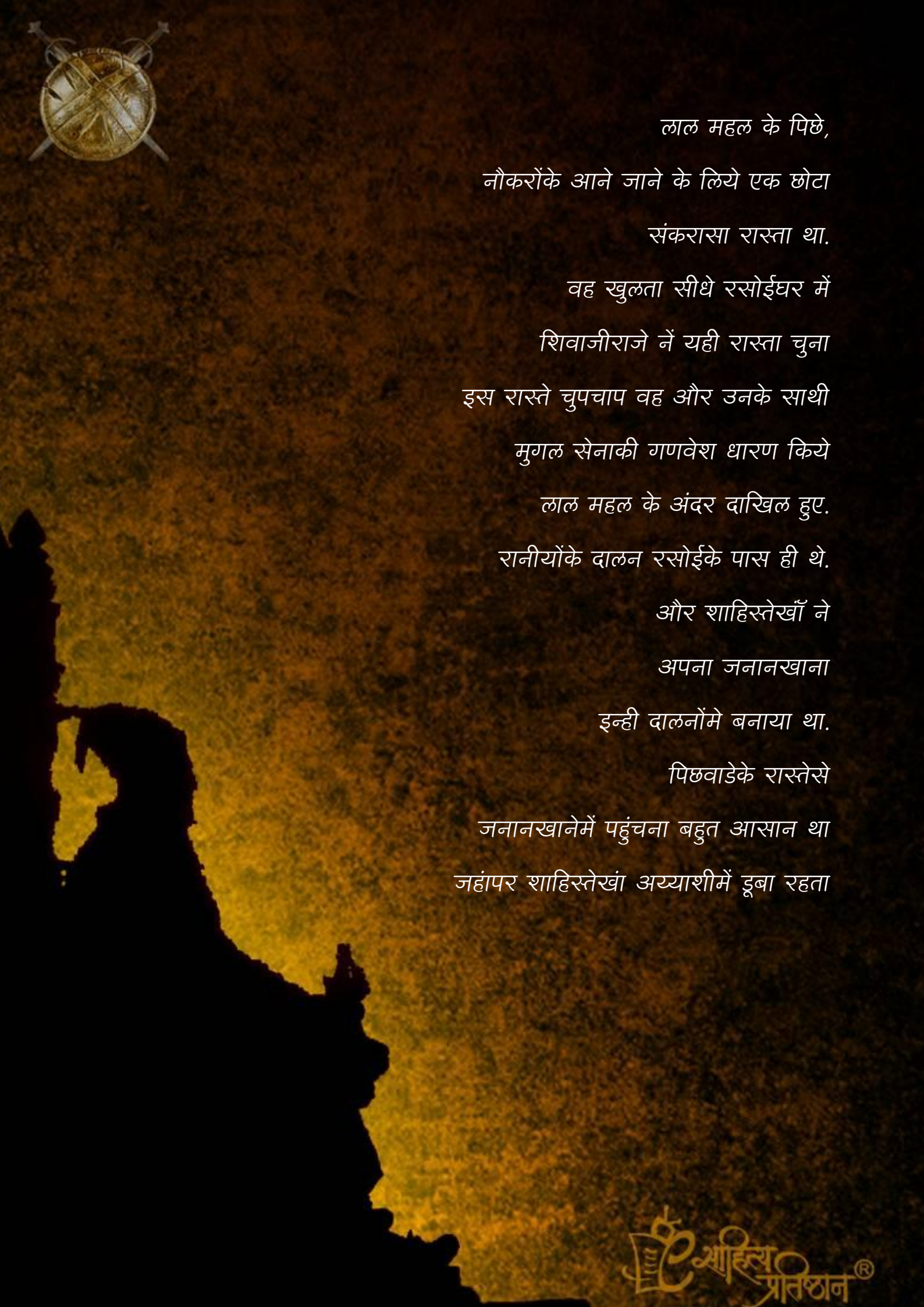

लाल महल के पिछे,
नौकरोंके आने जाने के लिये एक छोटा
संकरासा रास्ता था.
वह खुलता सीधे रसोईघर में
शिवाजीराजे नें यही रास्ता चुना
इस रास्ते चुपचाप वह और उनके साथी
मुगल सेनाकी गणवेश धारण किये
लाल महल के अंदर दाखिल हुए.
रानीयोंके दालन रसोईके पास ही थे.
और शाहिस्तेखाँ ने
अपना जनानखाना
इन्ही दालनोंमे बनाया था.
पिछवाडेके रास्तेसे
जनानखानेमें पहुंचना बहुत आसान था
जहांपर शाहिस्तेखां अय्याशीमें डूबा रहता

रात के दुसरे प्रहर के अंत में

शाहिस्तेखाँ जनानखाने में चैन की नींद ले रहा था

और उसी वक्त अचानक बिजलीकी तरह

शिवाजी महाराजका हमला हुआ

शिवाजीराजे और उनके साथीयोंने रसोईमेंसे शुरुआत की.

रास्ते में आते हर दुश्मन को मौत के घाट उतारते

शिवाजीराजे जनानखानेंमे पहुंचे

अब शाहिस्तेखांकी गर्दन उडनेही वाली थी

अचानक जगी हुईशाहिस्तेखाँ की किसी होशियार बेगम नें

शमादानोंकी सारी मोमबत्तीयां बुझा दी.

और शाहिस्तेखाँ का हाथ पकडकर अंतःपुर में ले गयी

घना अंधेरा छाया था.

शिवाजीराजे कभी औरतोंको नुकसान नहीं पहुंचाते थे

लेकिन अब वह अंधेरेमें असहाय्य थे.

उन्होंने अंदाजेसे वार करना शुरू किया.

जनानखानेमें परदे लगाकर

अंतःपुर बनाया हुआ था,

उन परदोंको सर्रकर चीरती हूई

शिवाजीकी तलवार चली..

वह सारे परदे फाडकर शिवाजीराजे अंतःपुर में पहुंचे.

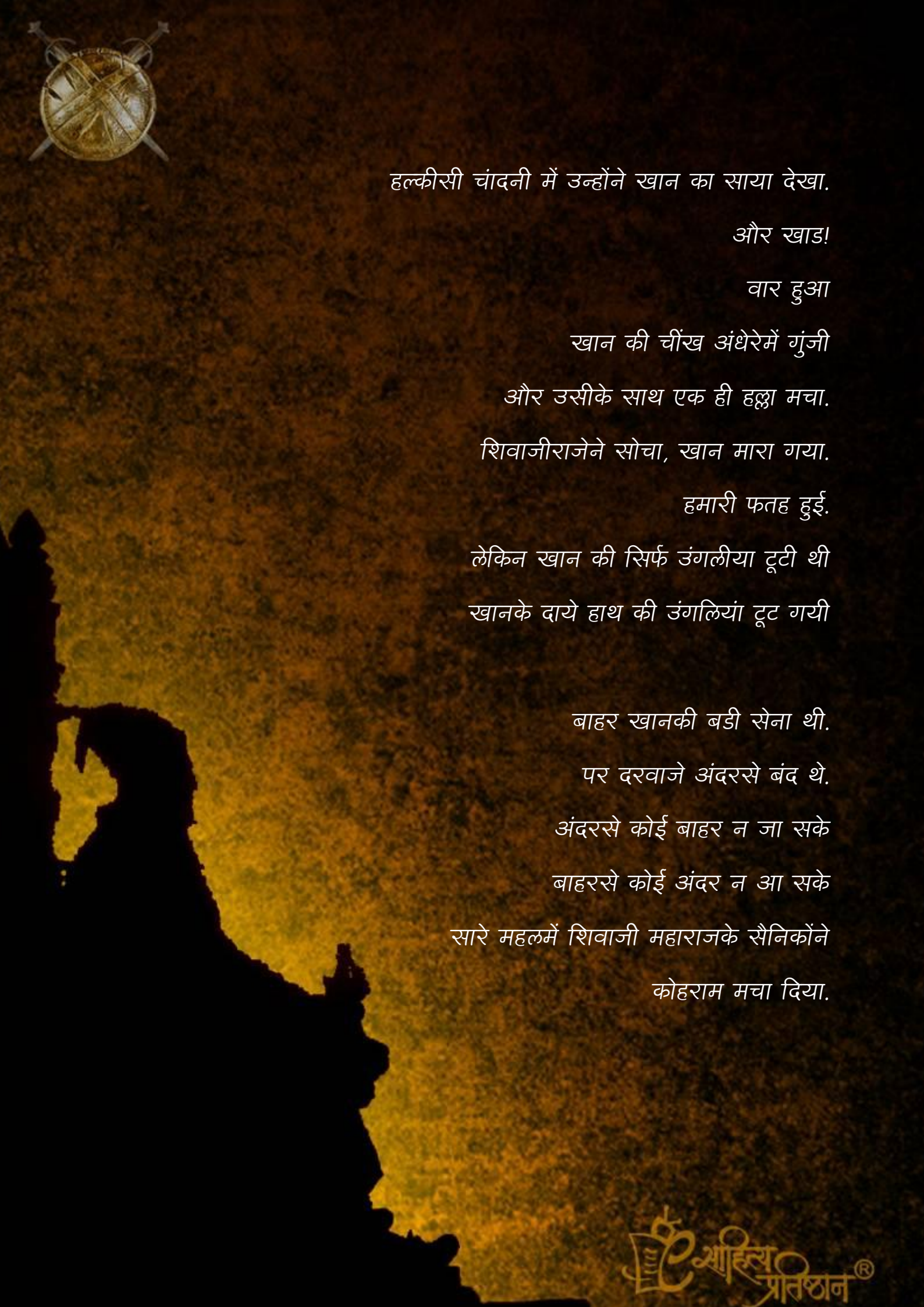

हल्कीसी चांदनी में उन्होंने खान का साया देखा.

और खाड!

वार हुआ

खान की चींख अंधेरेमें गुंजी

और उसीके साथ एक ही हल्ला मचा.

शिवाजीराजेने सोचा, खान मारा गया.

हमारी फतह हुई.

लेकिन खान की सिर्फ उंगलीया टूटी थी

खानके दाये हाथ की उंगलियां टूट गयी

बाहर खानकी बडी सेना थी.

पर दरवाजे अंदरसे बंद थे.

अंदरसे कोई बाहर न जा सके

बाहरसे कोई अंदर न आ सके

सारे महलमें शिवाजी महाराजके सैनिकोंने

कोहराम मचा दिया.

साहित्य प्रतिष्ठान®

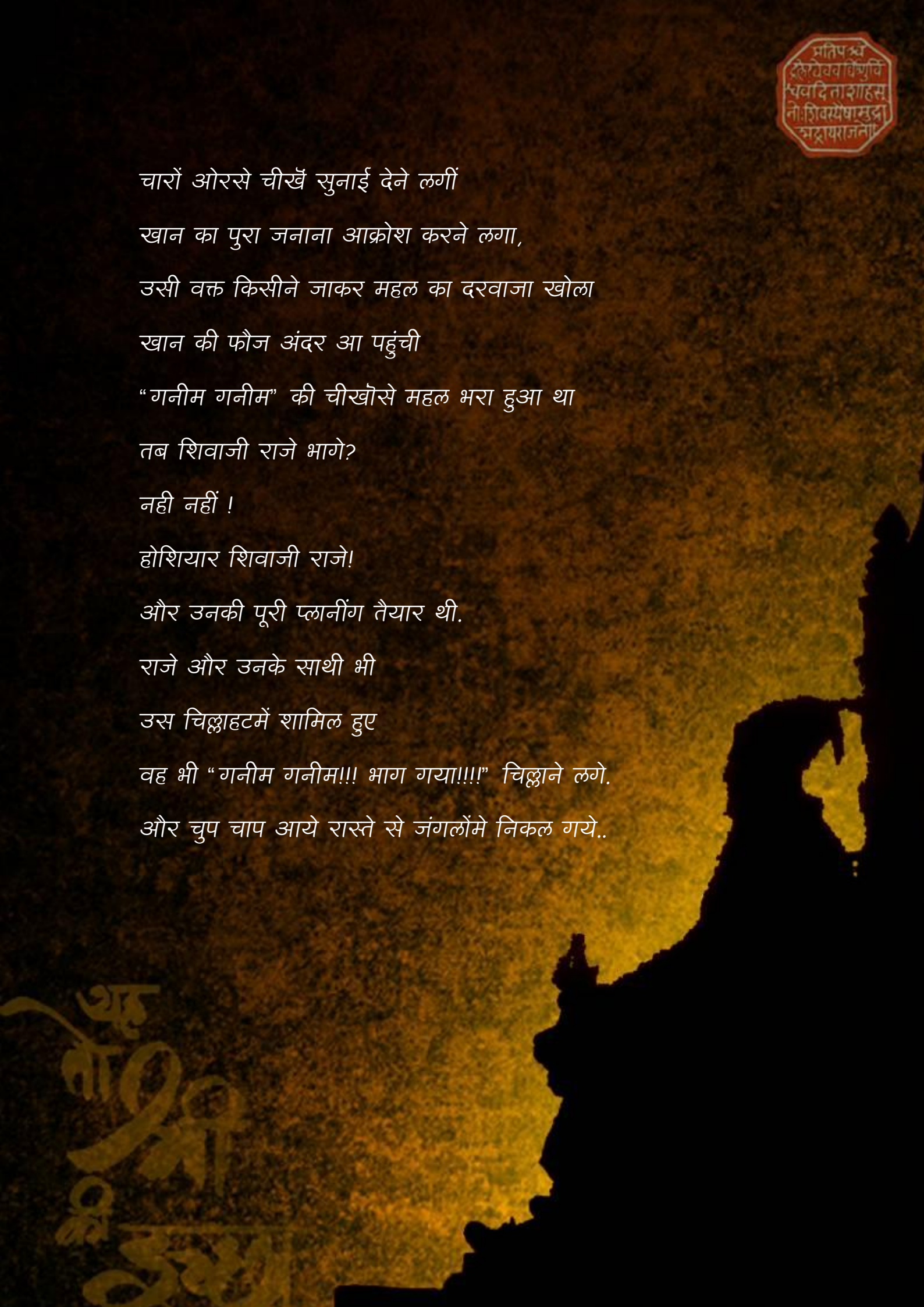

चारों ओरसे चीखें सुनाई देने लगीं

खान का पुरा जनाना आक्रोश करने लगा,

उसी वक्त किसीने जाकर महल का दरवाजा खोला

खान की फौज अंदर आ पहुंची

"गनीम गनीम" की चीखोंसे महल भरा हुआ था

तब शिवाजी राजे भागे?

नही नहीं !

होशियार शिवाजी राजे!

और उनकी पूरी प्लानींग तैयार थी.

राजे और उनके साथी भी

उस चिल्लाहटमें शामिल हुए

वह भी "गनीम गनीम!!! भाग गया!!!!" चिल्लाने लगे.

और चुप चाप आये रास्ते से जंगलोंमे निकल गये..

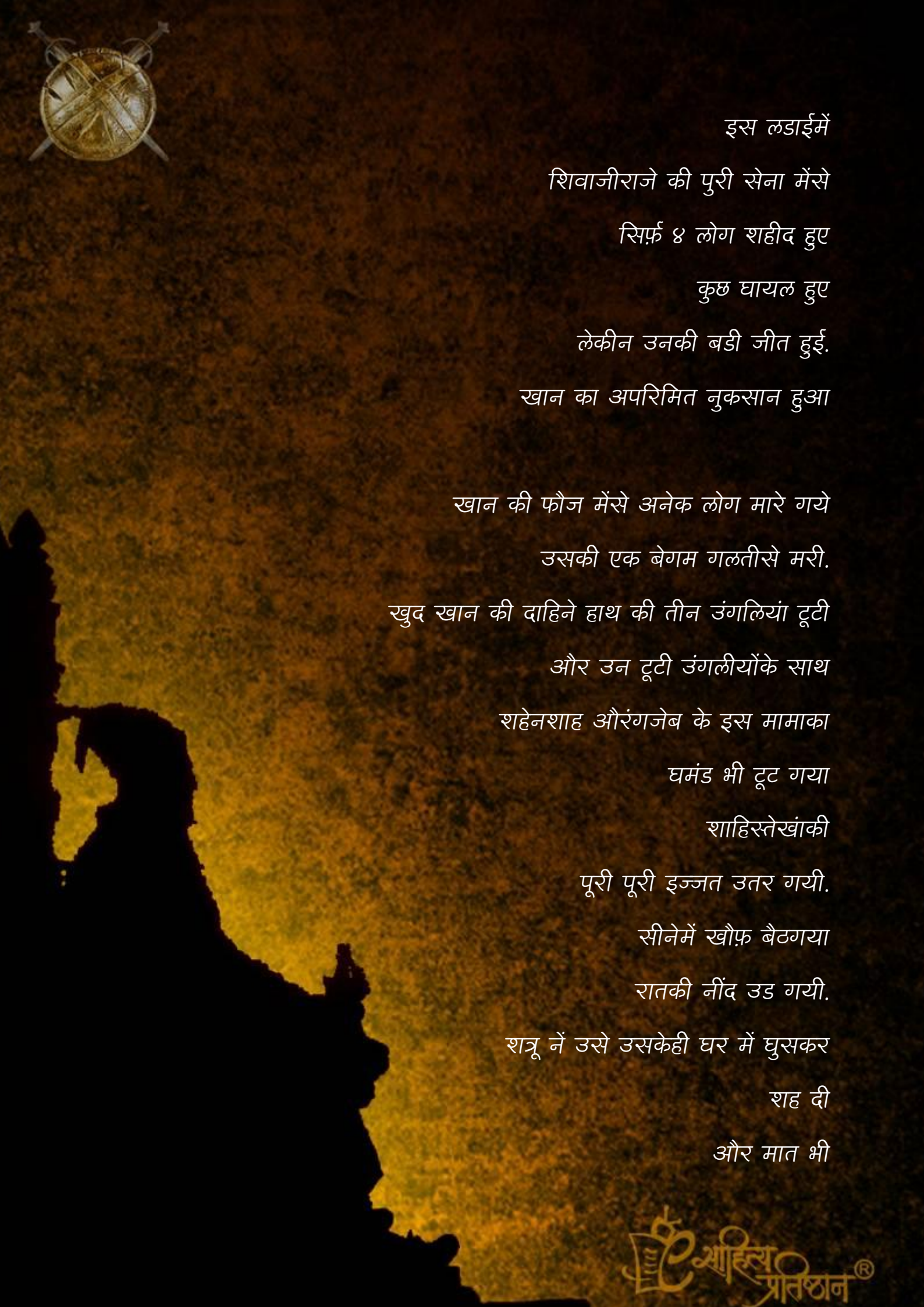

इस लडाईमें

शिवाजीराजे की पुरी सेना मेंसे

सिर्फ़ ४ लोग शहीद हुए

कुछ घायल हुए

लेकीन उनकी बडी जीत हुई.

खान का अपरिमित नुकसान हुआ

खान की फौज मेंसे अनेक लोग मारे गये

उसकी एक बेगम गलतीसे मरी.

खुद खान की दाहिने हाथ की तीन उंगलियां टूटी

और उन टूटी उंगलीयोंके साथ

शहेनशाह औरंगजेब के इस मामाका

घमंड भी टूट गया

शाहिस्तेखांकी

पूरी पूरी इज्जत उतर गयी.

सीनेमें खौफ़ बैठगया

रातकी नींद उड गयी.

शत्रू नें उसे उसकेही घर में घुसकर

शह दी

और मात भी

साहित्य प्रतिष्ठान®

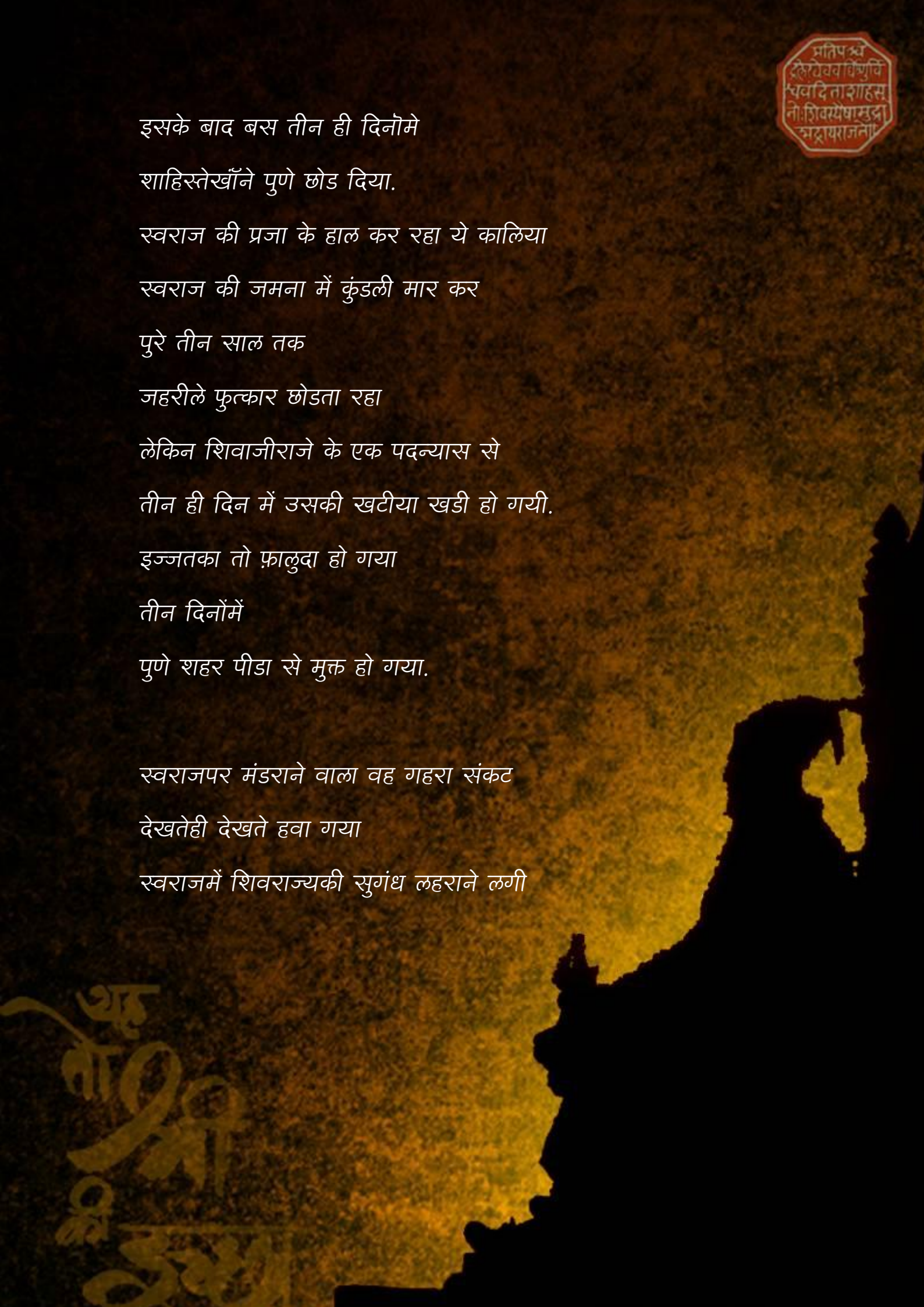

इसके बाद बस तीन ही दिनोंमे

शाहिस्तेखॉंने पुणे छोड दिया.

स्वराज की प्रजा के हाल कर रहा ये कालिया

स्वराज की जमना में कुंडली मार कर

पुरे तीन साल तक

जहरीले फुत्कार छोडता रहा

लेकिन शिवाजीराजे के एक पदन्यास से

तीन ही दिन में उसकी खटीया खडी हो गयी.

इज्जतका तो फ़ालुदा हो गया

तीन दिनोंमें

पुणे शहर पीडा से मुक्त हो गया.

स्वराजपर मंडराने वाला वह गहरा संकट

देखतेही देखते हवा गया

स्वराजमें शिवराज्यकी सुगंध लहराने लगी

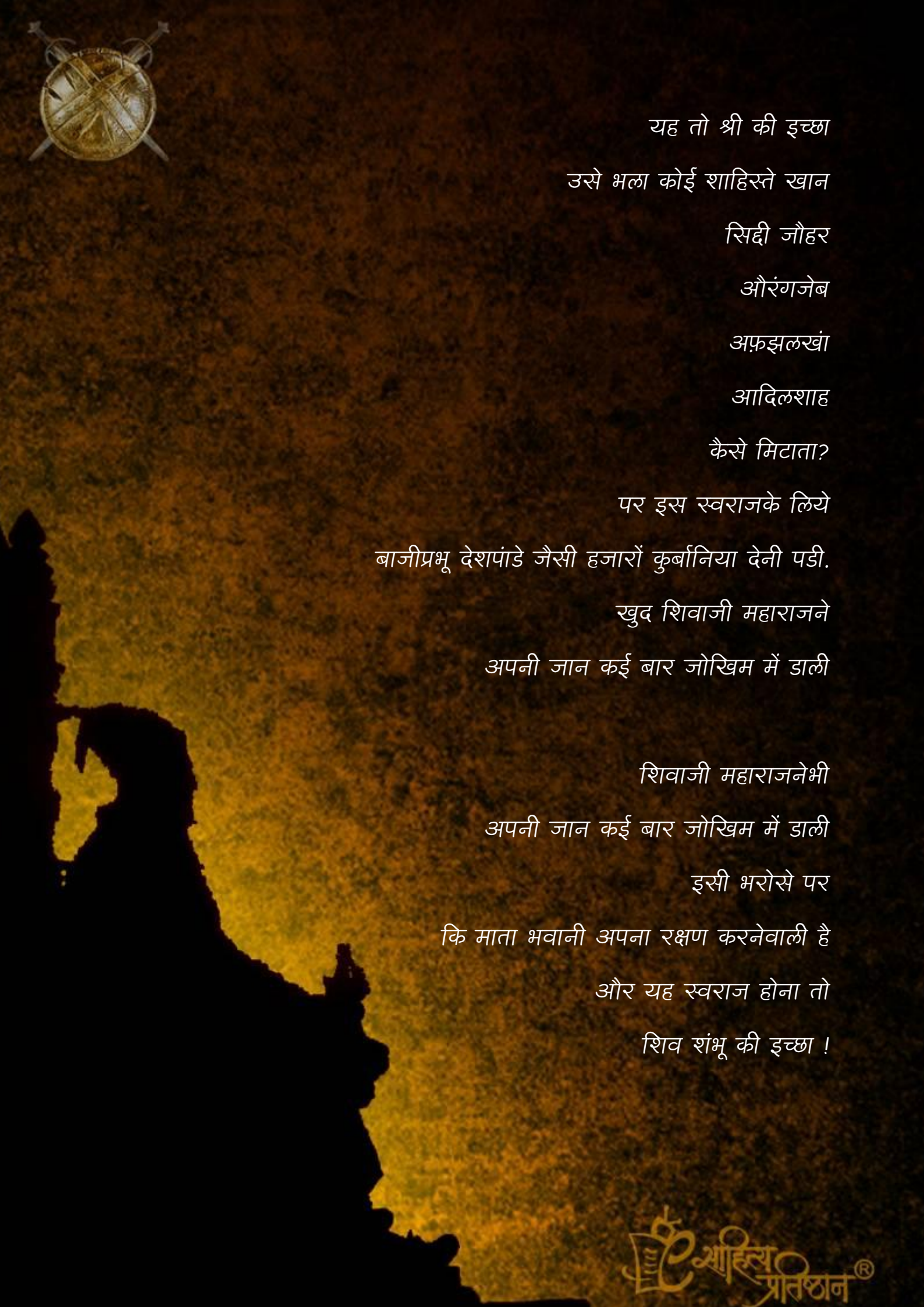

यह तो श्री की इच्छा

उसे भला कोई शाहिस्ते खान

सिद्दी जौहर

औरंगजेब

अफ़झलखां

आदिलशाह

कैसे मिटाता?

पर इस स्वराजके लिये

बाजीप्रभू देशपांडे जैसी हजारों कुर्बानिया देनी पडी.

खुद शिवाजी महाराजने

अपनी जान कई बार जोखिम में डाली

शिवाजी महाराजनेभी

अपनी जान कई बार जोखिम में डाली

इसी भरोसे पर

कि माता भवानी अपना रक्षण करनेवाली है

और यह स्वराज होना तो

शिव शंभू की इच्छा !

साहित्य प्रतिष्ठान®

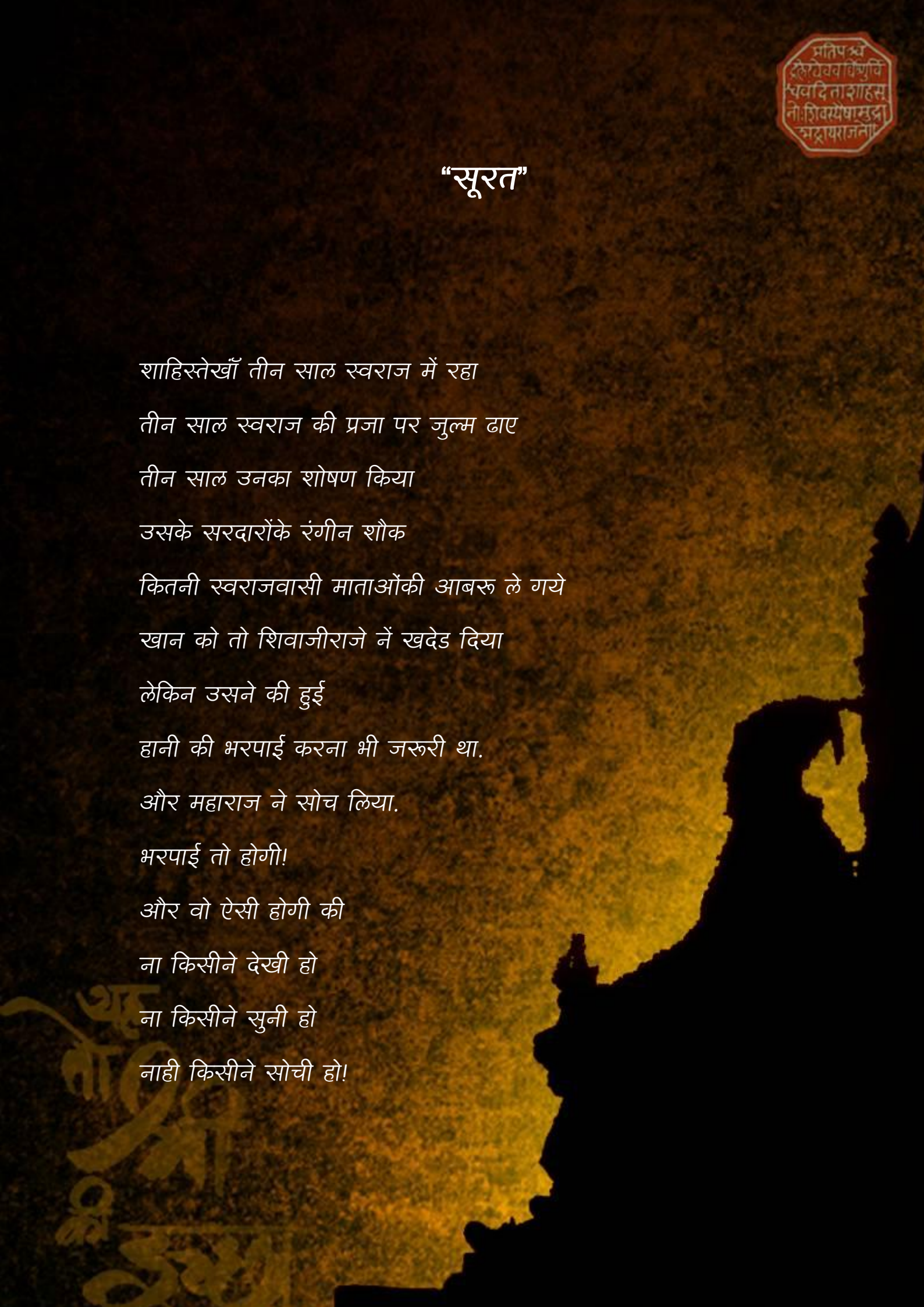

“सूरत”

शाहिस्तेखाँ तीन साल स्वराज में रहा

तीन साल स्वराज की प्रजा पर जुल्म ढाए

तीन साल उनका शोषण किया

उसके सरदारोंके रंगीन शौक

कितनी स्वराजवासी माताओंकी आबरू ले गये

खान को तो शिवाजीराजे नें खदेड दिया

लेकिन उसने की हुई

हानी की भरपाई करना भी जरूरी था.

और महाराज ने सोच लिया.

भरपाई तो होगी!

और वो ऐसी होगी की

ना किसीने देखी हो

ना किसीने सुनी हो

नाही किसीने सोची हो!

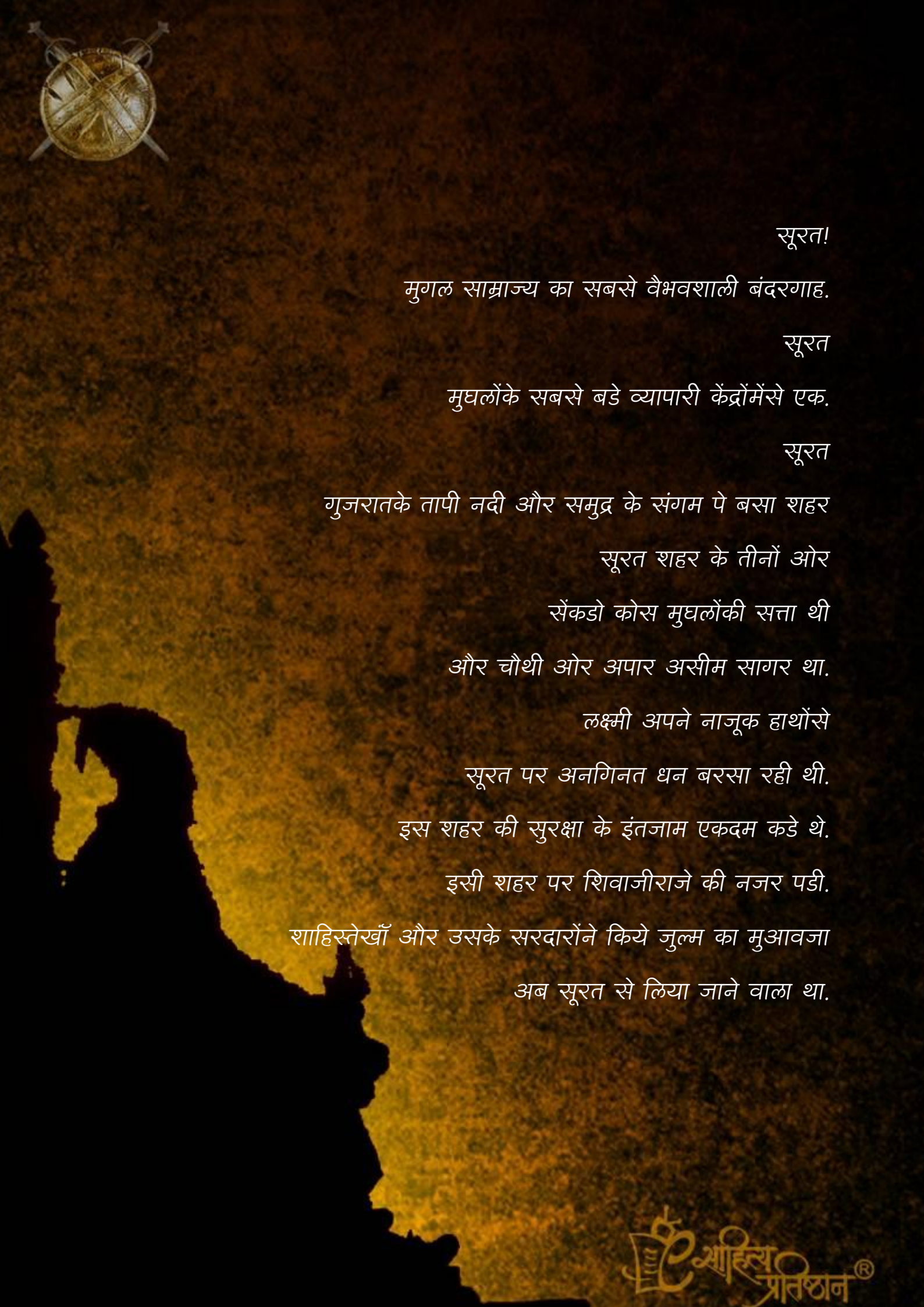

सूरत!

मुगल साम्राज्य का सबसे वैभवशाली बंदरगाह.

सूरत

मुघलोंके सबसे बडे व्यापारी केंद्रोंमेंसे एक.

सूरत

गुजरातके तापी नदी और समुद्र के संगम पे बसा शहर

सूरत शहर के तीनों ओर

सेंकडो कोस मुघलोंकी सत्ता थी

और चौथी ओर अपार असीम सागर था.

लक्ष्मी अपने नाजूक हाथोंसे

सूरत पर अनगिनत धन बरसा रही थी.

इस शहर की सुरक्षा के इंतजाम एकदम कडे थे.

इसी शहर पर शिवाजीराजे की नजर पडी.

शाहिस्तेखॉं और उसके सरदारोंने किये जुल्म का मुआवजा

अब सूरत से लिया जाने वाला था.

स्वराज की सीमा से साढेतीनसौ कोस दूर

मुघल साम्राज्यसे घिरा हुआ एक शहर

मुघलोंका सबसे वैभवशाली बंदरगाह

इसे लूटने की योजना बनी

अपने गुप्तहेरोंके हाथो

राजे नें पूरी जानकारी मंगवायी

और फिर पांच हजार फौज के साथ

खुद शिवाजी राजेने कूच किया

सूरत की लक्ष्मी की ओर.

कई दिनतक

दिनमें छुपते और रातके अंधेरेमें सफर करते हुए

राजे और उनकी फौज उधना गांव पहुंचे.

यहांसे सूरत बस तीन कोस दूर था.

वहांसे राजे ने सूरत के सुभेदार को अपना वकील भेजा

और उससे खुले आम कहा

वह अपने शहर के

सबसे प्रतिष्ठीत और धनवान व्यापारीयोंके साथ

अपना प्रतिनिधी बातचीत के लिये भेजे.

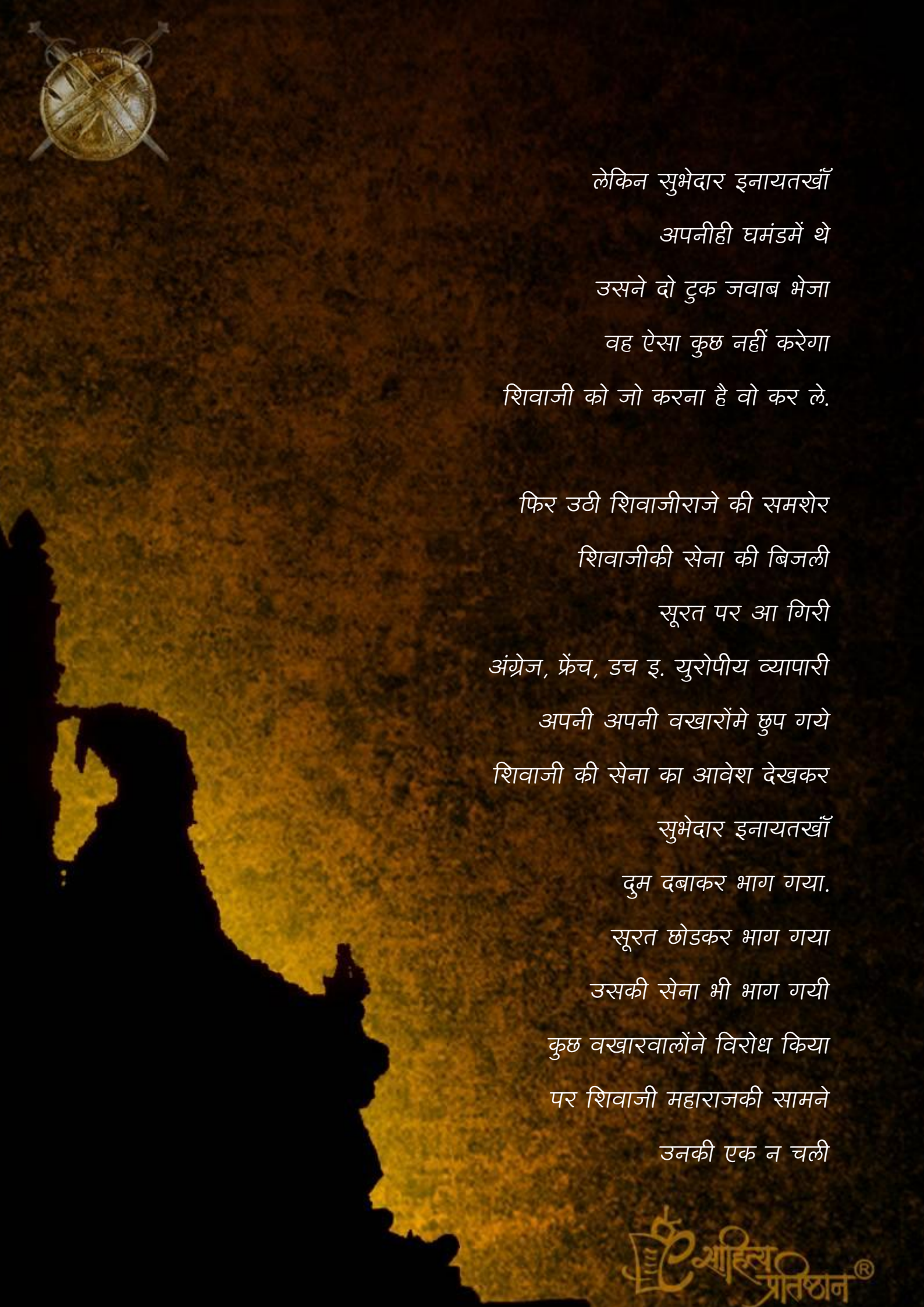

लेकिन सुभेदार इनायतखॉं
अपनीही घमंडमें थे
उसने दो टुक जवाब भेजा
वह ऐसा कुछ नहीं करेगा
शिवाजी को जो करना है वो कर ले.

फिर उठी शिवाजीराजे की समशेर
शिवाजीकी सेना की बिजली
सूरत पर आ गिरी
अंग्रेज, फ्रेंच, डच इ. युरोपीय व्यापारी
अपनी अपनी वखारोंमे छुप गये
शिवाजी की सेना का आवेश देखकर
सुभेदार इनायतखॉं
दुम दबाकर भाग गया.
सूरत छोडकर भाग गया
उसकी सेना भी भाग गयी
कुछ वखारवालोंने विरोध किया
पर शिवाजी महाराजकी सामने
उनकी एक न चली

साहित्य प्रतिष्ठान®

शिवाजीराजे नें अपने स्वराज की उन्नती के लिये

अनैतिक पैसोंसे भरी हुई सूरत

पुरी तरहसे बदसूरत कर दी

लेकिन इस सारे माहोल में भी

किसी भी औरत, बच्चे, धर्मस्थल या गरीब को

कोई तकलीफ़ नहीं पहुंचाई

वह सिर्फ उनसे ले रहे थे जिन्होंने

जुल्म कर और चापलूसी से धन जमाया था,

और ऐसे लोगोंकी सूरत में कोई कमी नही थी

न ऐसे काले धनकी.

तीन दिन तक सूरत में शिव का तांडव चलता रहा.

लगभग साढेतीन हजार बोरीयॊ मे

सूरत की दौलत भरी गई

एक मोतीयोंके बडे व्यापारीसे

तीस टंकीयां भरकर सोना बरामद हुआ

साढेतीन हजार बोरीय़ां भरकर

बस सोना, चांदी, हिरे, मोती और जवाहरात.

तीन सालोंकें जुल्मोंखातिर

शिवाजीने तीन करोड रुपयोंकी दौलत ली.

इन्साफ हो गया.

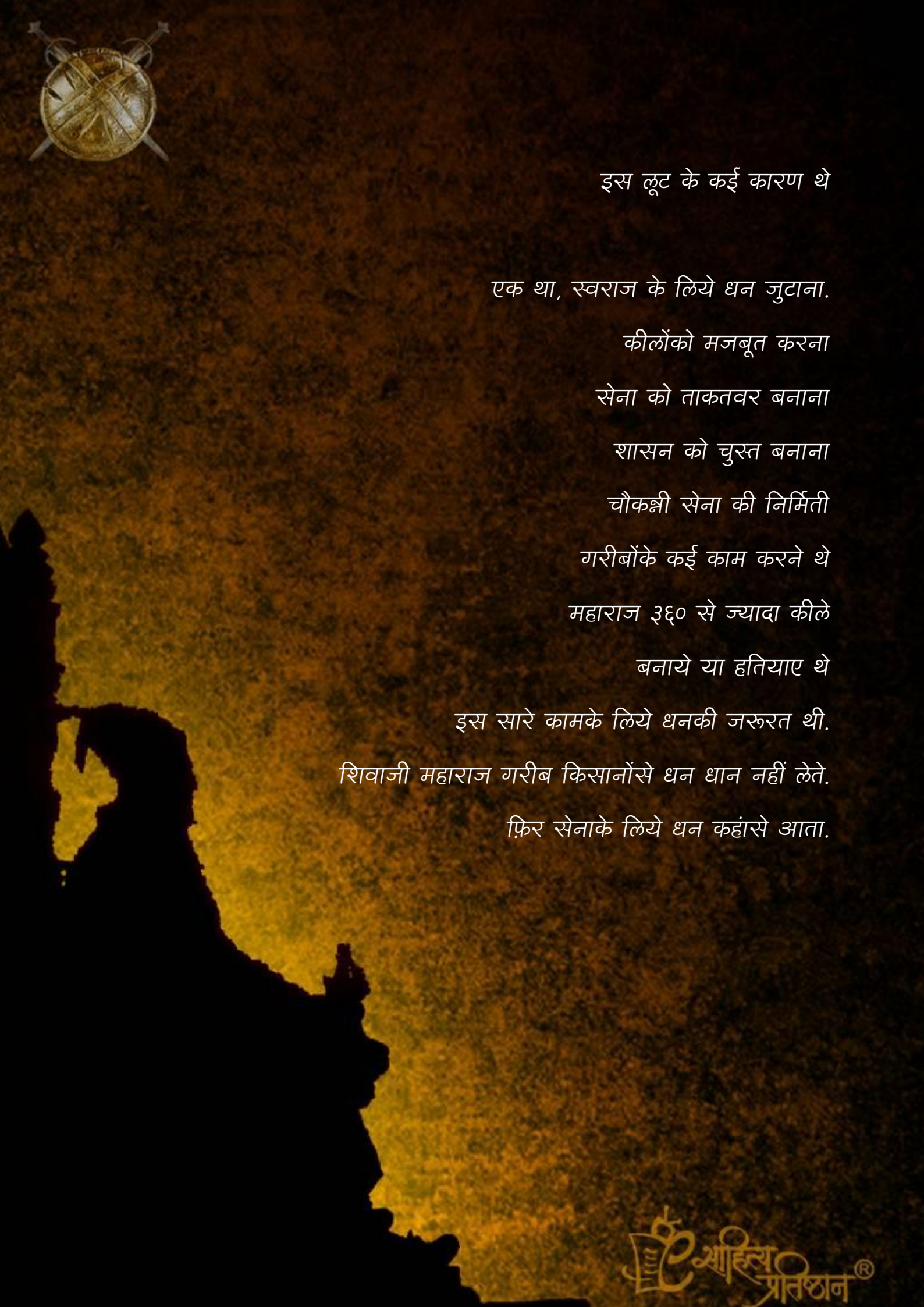

इस लूट के कई कारण थे

एक था, स्वराज के लिये धन जुटाना.

कीलोंको मजबूत करना

सेना को ताकतवर बनाना

शासन को चुस्त बनाना

चौकन्नी सेना की निर्मिती

गरीबोंके कई काम करने थे

महाराज ३६० से ज्यादा कीले

बनाये या हतियाए थे

इस सारे कामके लिये धनकी जरूरत थी.

शिवाजी महाराज गरीब किसानोंसे धन धान नहीं लेते.

फ़िर सेनाके लिये धन कहांसे आता.

साहित्य प्रतिष्ठान®

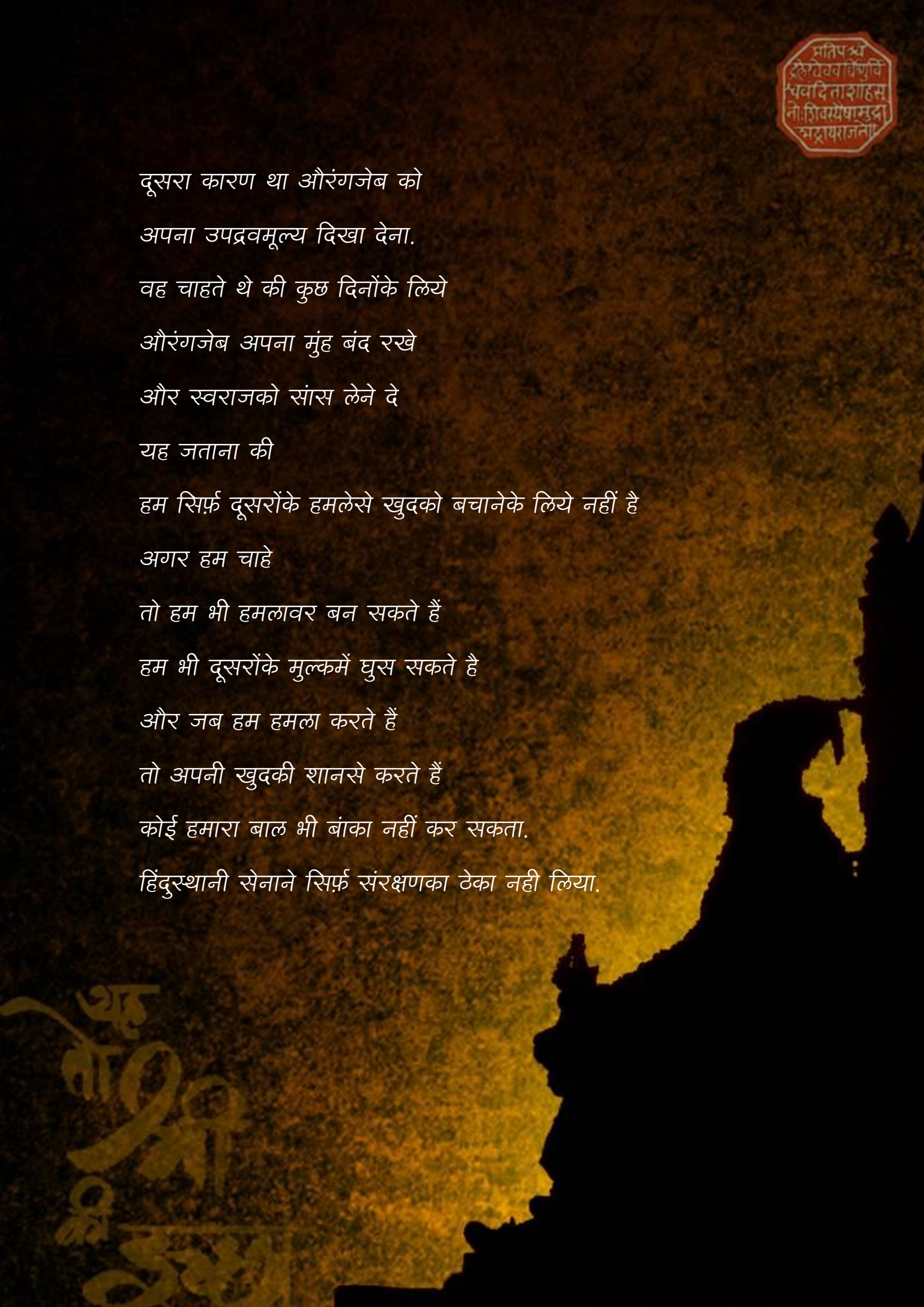

दूसरा कारण था औरंगजेब को

अपना उपद्रवमूल्य दिखा देना.

वह चाहते थे की कुछ दिनोंके लिये

औरंगजेब अपना मुंह बंद रखे

और स्वराजको सांस लेने दे

यह जताना की

हम सिर्फ़ दूसरोंके हमलेसे खुदको बचानेके लिये नहीं है

अगर हम चाहे

तो हम भी हमलावर बन सकते हैं

हम भी दूसरोंके मुल्कमें घुस सकते है

और जब हम हमला करते हैं

तो अपनी खुदकी शानसे करते हैं

कोई हमारा बाल भी बांका नहीं कर सकता.

हिंदुस्थानी सेनाने सिर्फ़ संरक्षणका ठेका नही लिया.

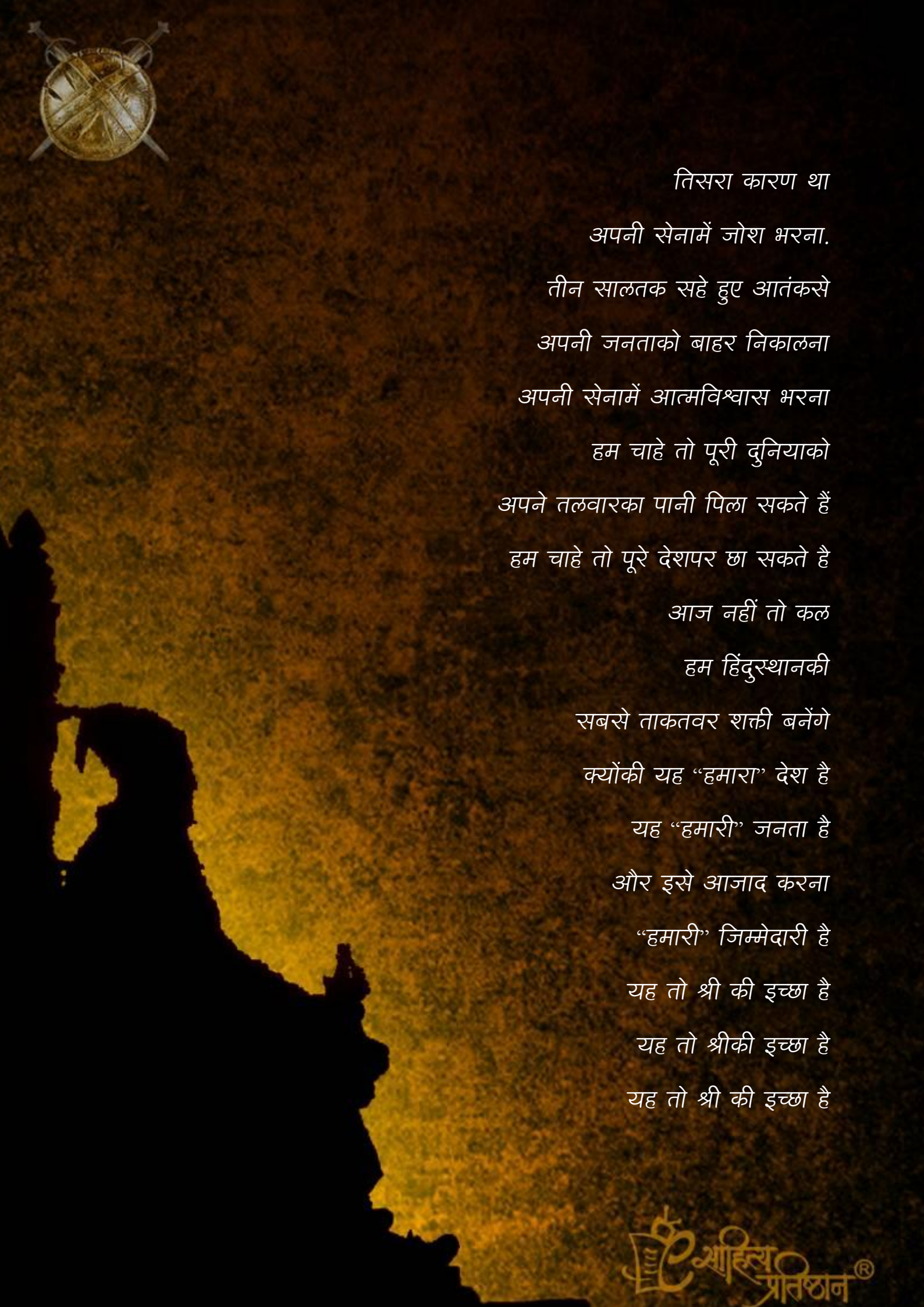

तिसरा कारण था

अपनी सेनामें जोश भरना.

तीन सालतक सहे हुए आतंकसे

अपनी जनताको बाहर निकालना

अपनी सेनामें आत्मविश्वास भरना

हम चाहे तो पूरी दुनियाको

अपने तलवारका पानी पिला सकते हैं

हम चाहे तो पूरे देशपर छा सकते है

आज नहीं तो कल

हम हिंदुस्थानकी

सबसे ताकतवर शक्ती बनेंगे

क्योंकी यह "हमारा" देश है

यह "हमारी" जनता है

और इसे आजाद करना

"हमारी" जिम्मेदारी है

यह तो श्री की इच्छा है

यह तो श्रीकी इच्छा है

यह तो श्री की इच्छा है

साहित्य प्रतिष्ठान®

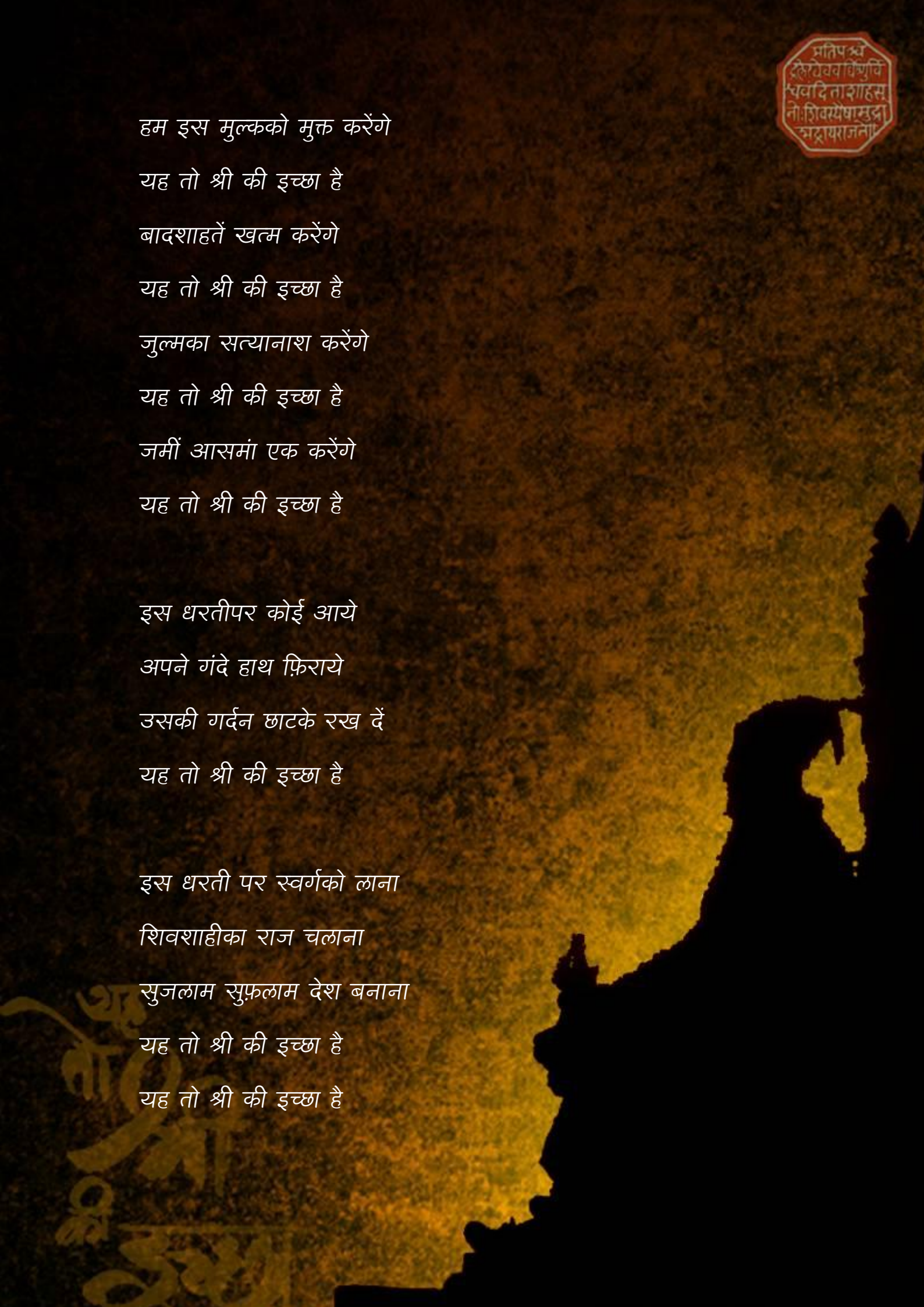

हम इस मुल्कको मुक्त करेंगे

यह तो श्री की इच्छा है

बादशाहतें खत्म करेंगे

यह तो श्री की इच्छा है

जुल्मका सत्यानाश करेंगे

यह तो श्री की इच्छा है

जमीं आसमां एक करेंगे

यह तो श्री की इच्छा है

इस धरतीपर कोई आये

अपने गंदे हाथ फ़िराये

उसकी गर्दन छाटके रख दें

यह तो श्री की इच्छा है

इस धरती पर स्वर्गको लाना

शिवशाहीका राज चलाना

सुजलाम सुफ़लाम देश बनाना

यह तो श्री की इच्छा है

यह तो श्री की इच्छा है

प्रतिपदाके चंद्रमाकी तरह
धीरे धीरे बढनेवाली और
सारे संसारके लिये पूजनीय
होनेवाली शहाजीके पुत्र
शिवाजी राजेकी राजमुद्रा
लोगोंके कल्याणके लिये है

साहित्य प्रतिष्ठान®

“मिर्झाराजे जयसिंह”

शिवाजीने सूरत लूट ली

शहनशाह तिलमिला उठा

अफजलखॉं, सिद्दी जौहर, फाजलखॉं,

दिलेरखॉं, महाराजा जसवंतसिंह, कारतलबखॉं,

रायबाघन, नामदारखॉं, शाहिस्तेखॉं

इनायतखॉं... सबक की हार उसे खल रही थी

असीम फौज. तोपखाना, हाथी-घोडे,

सूरमा सिपाही, अनगिनत दौलत

इतना सब होते हुए भी मुघल सेना

शिवाजी का कुछ नही बिगाड पाए

बाल भी बांका नहीं कर पाए...

स्वराज की प्रजा अब सुख भोग रही थी

सूरत से लाई हुई दौलत

शिवाजीराजे नें प्रजा के कल्याणकार्य में लगा दी

कोंकन के किनारे की सुरक्षा के लिये

एक बिल्कुल नया जलदुर्ग निर्माण करवाया.

सिंधुदूर्ग !

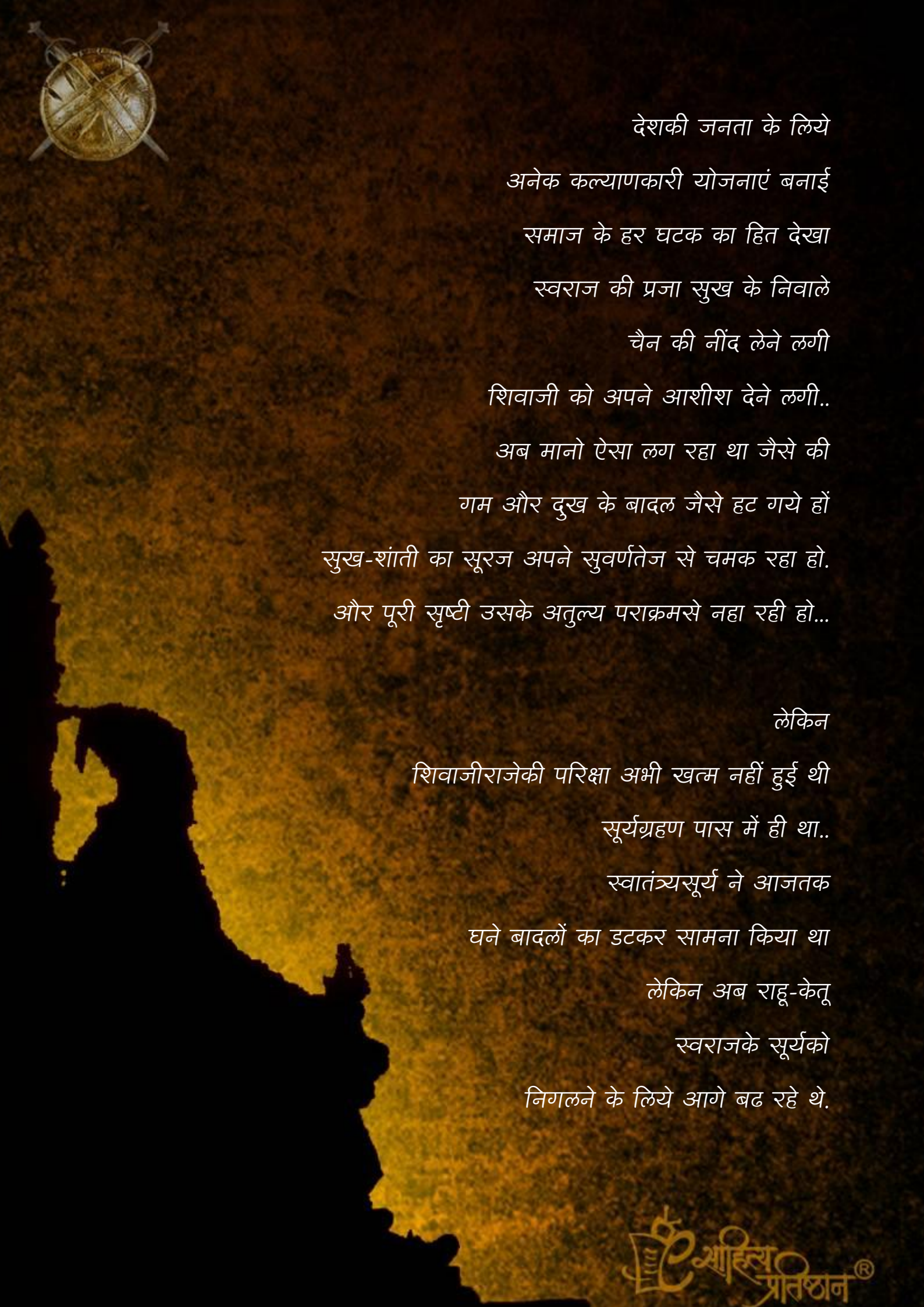

देशकी जनता के लिये
अनेक कल्याणकारी योजनाएं बनाई
समाज के हर घटक का हित देखा
स्वराज की प्रजा सुख के निवाले
चैन की नींद लेने लगी
शिवाजी को अपने आशीश देने लगी..
अब मानो ऐसा लग रहा था जैसे की
गम और दुख के बादल जैसे हट गये हों
सुख-शांती का सूरज अपने सुवर्णतेज से चमक रहा हो.
और पूरी सृष्टी उसके अतुल्य पराक्रमसे नहा रही हो...

लेकिन
शिवाजीराजेकी परिक्षा अभी खत्म नहीं हुई थी
सूर्यग्रहण पास में ही था..
स्वातंत्र्यसूर्य ने आजतक
घने बादलों का डटकर सामना किया था
लेकिन अब राहू-केतू
स्वराजके सूर्यको
निगलने के लिये आगे बढ रहे थे.

साहित्य प्रतिष्ठान®

औरंगजेब गुस्से से पागल हो रखा था

और उसने ठान ली थी की वह किसी भी हाल में

शिवाजी को मात देकर रहेगा!

और इसीलिये उसने अपने सबसे बहादूर

सबसे जांबाज और सूरमा सरदारको

शिवाजीको रोकनेके कामपर नियुक्त किया.

मिर्झा राजे जयसिंग

जयपूर के कछवाह घराने के राजा

अपने आप को प्रभु श्रीराम के वंशज कहलवाने वाली

और फिरभी बादशाह के वफादार

“मिर्झा राजे जयसिंह” जयपूर से दख्खन की ओर रवाना हुए.

और उनके साथ था पठाण दिलेरखाँ,

पहाडी सूरमा और बादशाह का भरोसेमंद सरदार.

यह दोनों विशाल सेना ले साथ

स्वराज का सफाया करने दख्खन आ पहुंचे.

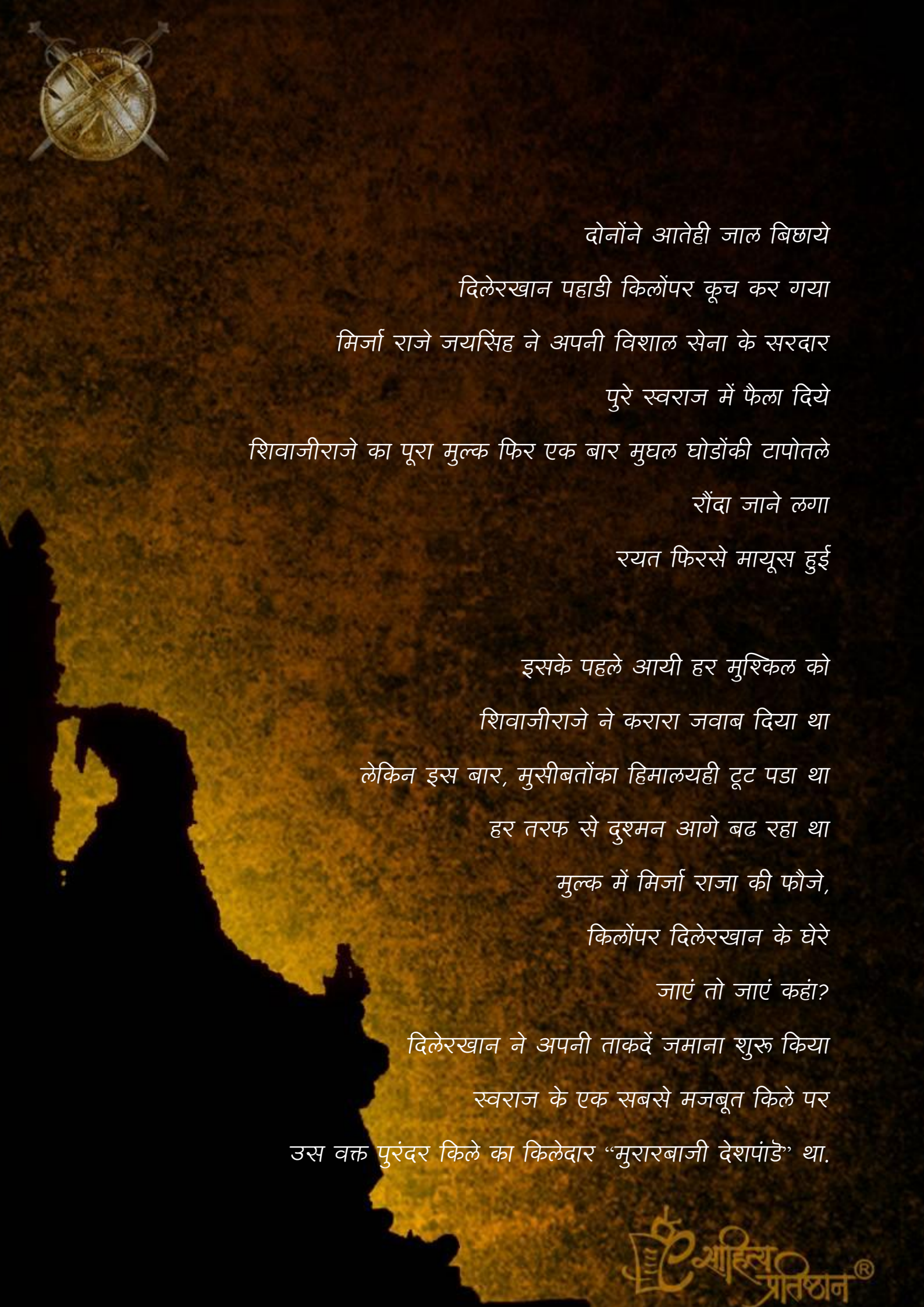

दोनोंने आतेही जाल बिछाये

दिलेरखान पहाडी किलोंपर कूच कर गया

मिर्जा राजे जयसिंह ने अपनी विशाल सेना के सरदार

पुरे स्वराज में फैला दिये

शिवाजीराजे का पूरा मुल्क फिर एक बार मुघल घोडोंकी टापोतले

रौंदा जाने लगा

रयत फिरसे मायूस हुई

इसके पहले आयी हर मुश्किल को

शिवाजीराजे ने करारा जवाब दिया था

लेकिन इस बार, मुसीबतोंका हिमालयही टूट पडा था

हर तरफ से दुश्मन आगे बढ रहा था

मुल्क में मिर्जा राजा की फौजे,

किलोंपर दिलेरखान के घेरे

जाएं तो जाएं कहां?

दिलेरखान ने अपनी ताकदें जमाना शुरू किया

स्वराज के एक सबसे मजबूत किले पर

उस वक्त पुरंदर किले का किलेदार "मुरारबाजी देशपांडे" था.

दिलेरखान का घेरा कडा होता गया

वक्त बीतता गया

दिलेरखान नें अपने घेरे में कोईभी कसर नहीं छोडी.

रसद किलेतक पहुंचाना नामुमकिन बन गया

दुश्मनोंकी गर्दिश में फंसा पुरंदर

इकलौते योद्धे की तरह लडता रहा,

अपना मुल्क और बाकीके किले बचाते बचाते

शिवाजीराजे का पुरंदर खस्त हुआ

दिलेरखान ने एल्गार कर दिया

पुरंदरके सिपाहियोंने भी

जी जानकी बाजी लगा दी

लेकिन महिनोंसे बिना रसद रही पुरंदर की फौज

दिलेरखान के सेनासागर के सामने टिक नहीं पायी

जिंदगी और मौत की इस लडाई में

मुरारबाजी देशपांडे पर

मौत हावी हो गयी

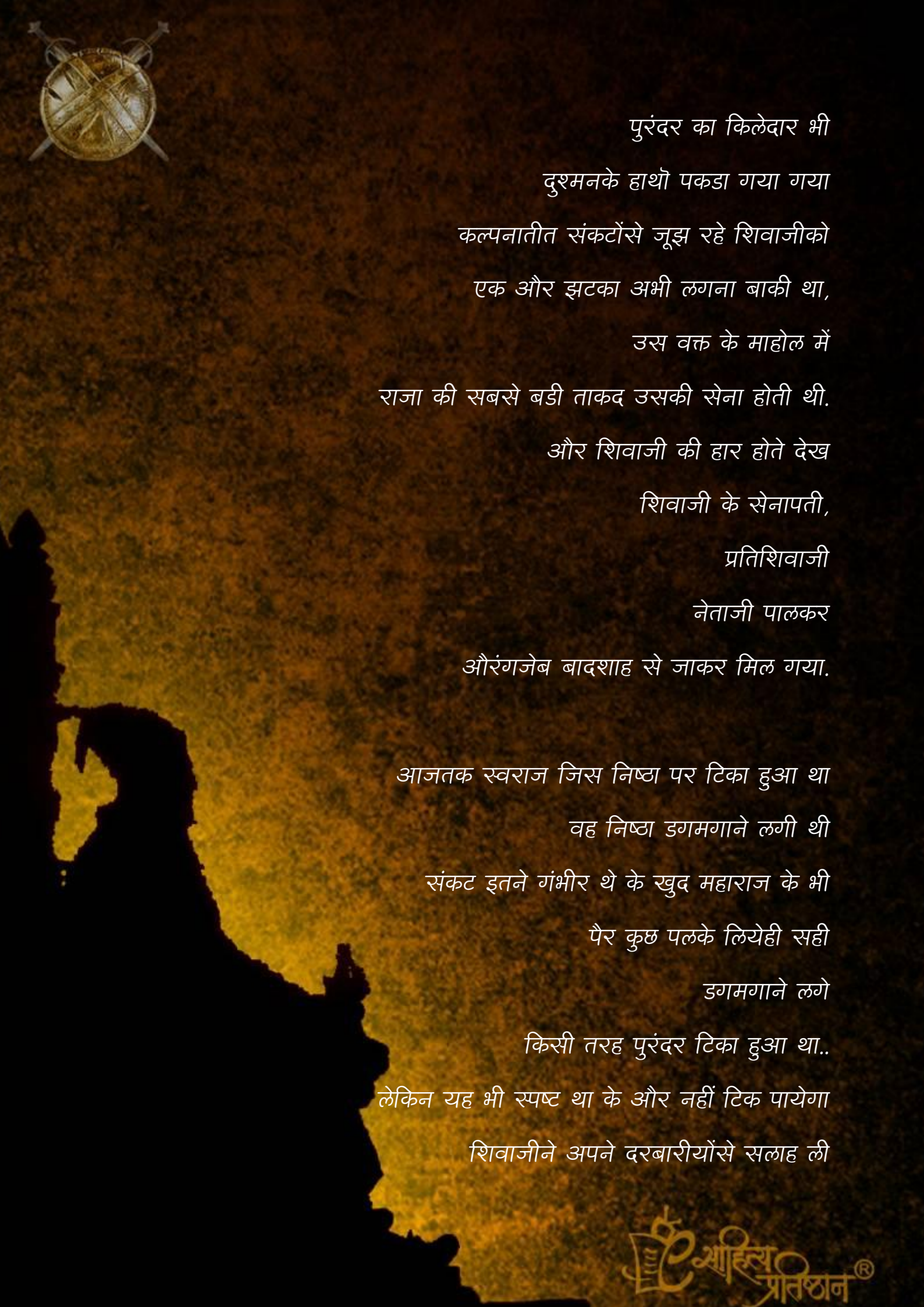

पुरंदर का किलेदार भी
दुश्मनके हाथो पकडा गया गया
कल्पनातीत संकटोंसे जूझ रहे शिवाजीको
एक और झटका अभी लगना बाकी था,
उस वक्त के माहोल में
राजा की सबसे बडी ताकद उसकी सेना होती थी.
और शिवाजी की हार होते देख
शिवाजी के सेनापती,
प्रतिशिवाजी
नेताजी पालकर
औरंगजेब बादशाह से जाकर मिल गया.

आजतक स्वराज जिस निष्ठा पर टिका हुआ था
वह निष्ठा डगमगाने लगी थी
संकट इतने गंभीर थे के खुद महाराज के भी
पैर कुछ पलके लियेही सही
डगमगाने लगे
किसी तरह पुरंदर टिका हुआ था..
लेकिन यह भी स्पष्ट था के और नहीं टिक पायेगा
शिवाजीने अपने दरबारीयोंसे सलाह ली

साहित्य प्रतिष्ठान®

इस बार लडकर जीत हासिल करना मुमकिन नहीं था

अनगिनत जानें वैसेभी जा रही थी

इस पल में सुलह करना

यही एक ही उपाय था.

शिवाजीराजे ने मिर्जा राजा को खत लिखा.

सुलह की इच्छा बताई

अपनी शरणागती भी कुबूल की

मिर्जा राजे की छावनी में जाकर शरण आने का वादा भी किया

सह्याद्री का उत्तुंग शिखर जयपूर के साहसी वीर के सामने नतमस्तक हुआ

स्वराज के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लग गया

मिर्जा राजा जयसिंह बादशाह के कडे वफादार थे

पर साथ ही साथ स्वधर्माभिमानी भी थे.

शिवाजी जैसा शूर योद्धा बादशाह के गुस्से का शिकार ना हो

इस प्रयास में मिर्जा राजे जुटे थे

लेकिन उसी समय, दिलेरखान के मन में छल था

और उसनें योजना बनाई थी शिवाजीराजे को धोखे से मार डालने की

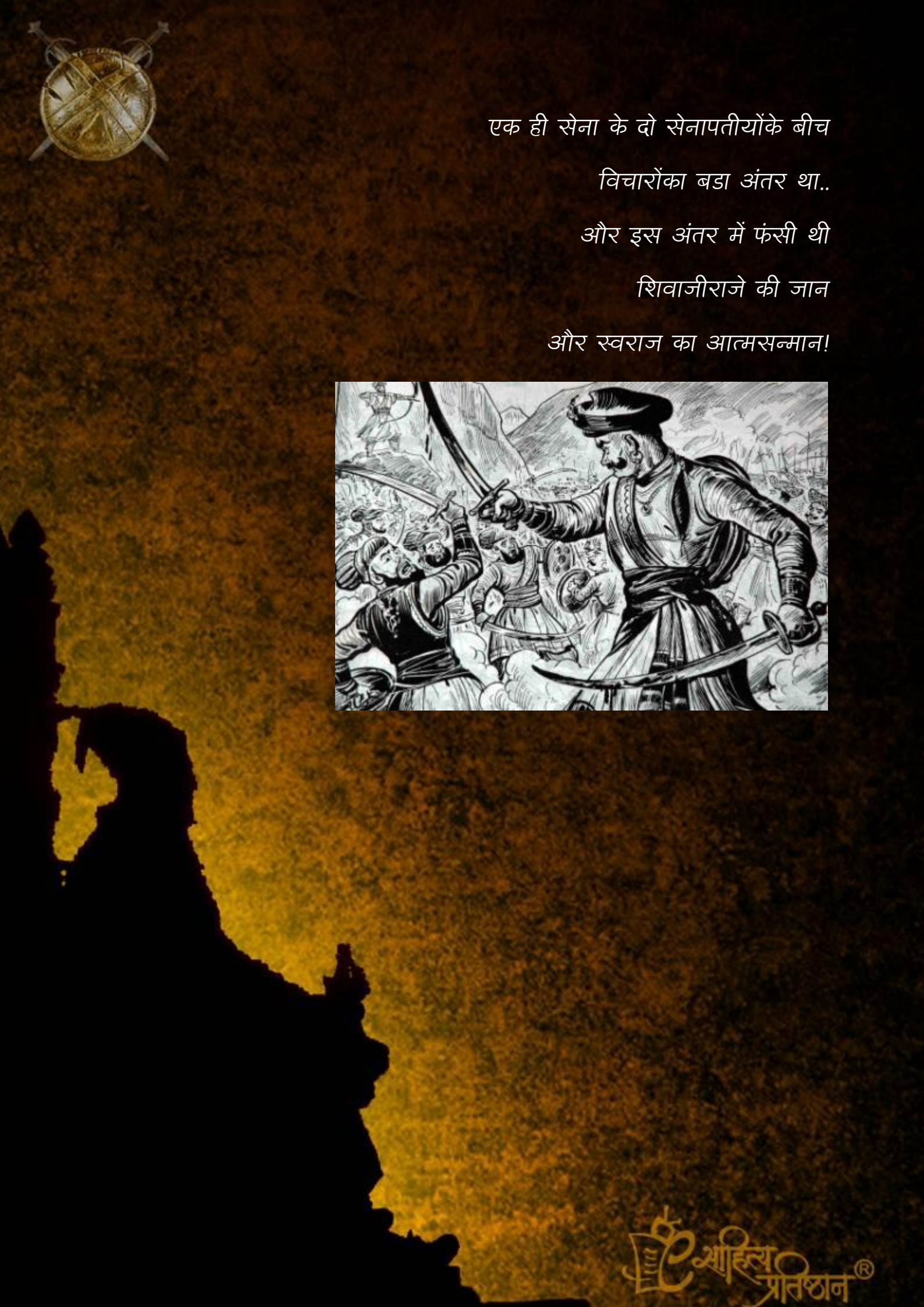

एक ही सेना के दो सेनापतीयोंके बीच

विचारोंका बडा अंतर था..

और इस अंतर में फंसी थी

शिवाजीराजे की जान

और स्वराज का आत्मसन्मान!

साहित्य प्रतिष्ठान®

छत्रपती शिवाजी महाराजके चरित्रका यह दूसरा अध्याय

हम यहीं पूरा करते हैं.

दुनियामें

हां पूरी दुनियामें

छत्रपती शिवाजी महाराजकी जीवनसंघर्षके तुल्य

कोई कहानी नहीं.

दुनियाके किसी भी जनताने इस तरहका

असमान शक्तीयोंका संघर्ष

नहीं देखा

और उसमें

दुर्बलकी इतनी बडी जीतका अनुभव

नहीं किया होगा.

एक छोटेसे गांवसे निकली यह बच्चोंकी टोली

एक कीला जीत लेती है

फ़िर दूसरा

फ़िर तीसरा, चौथा, पांचवां

और बनती है ३६० कीलोंकी एक ताकतवर राज

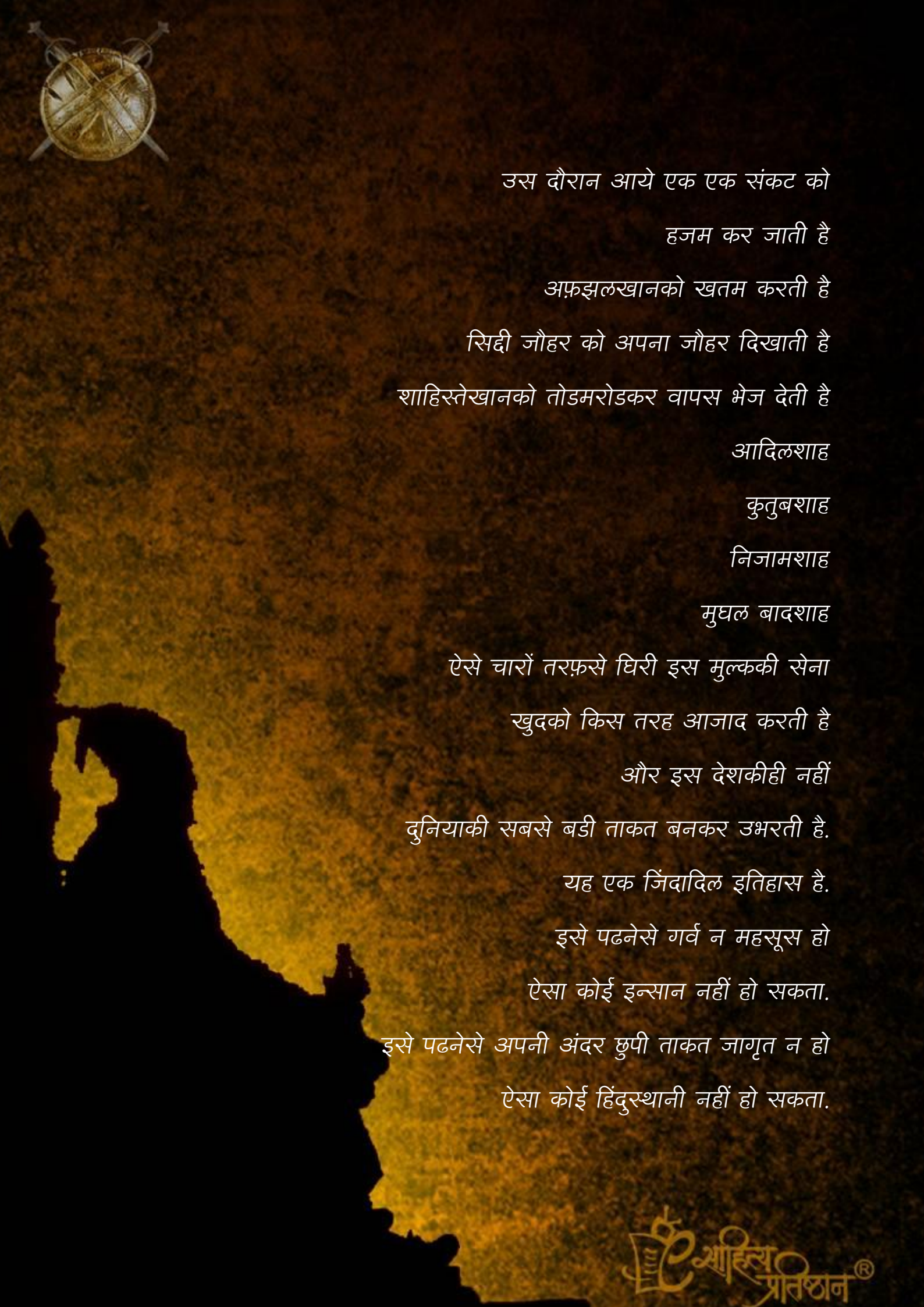

उस दौरान आये एक एक संकट को

हजम कर जाती है

अफ़झलखानको खतम करती है

सिद्दी जौहर को अपना जौहर दिखाती है

शाहिस्तेखानको तोडमरोडकर वापस भेज देती है

आदिलशाह

कुतुबशाह

निजामशाह

मुघल बादशाह

ऐसे चारों तरफ़से घिरी इस मुल्ककी सेना

खुदको किस तरह आजाद करती है

और इस देशकीही नहीं

दुनियाकी सबसे बडी ताकत बनकर उभरती है.

यह एक जिंदादिल इतिहास है.

इसे पढनेसे गर्व न महसूस हो

ऐसा कोई इन्सान नहीं हो सकता.

इसे पढनेसे अपनी अंदर छुपी ताकत जागृत न हो

ऐसा कोई हिंदुस्थानी नहीं हो सकता.

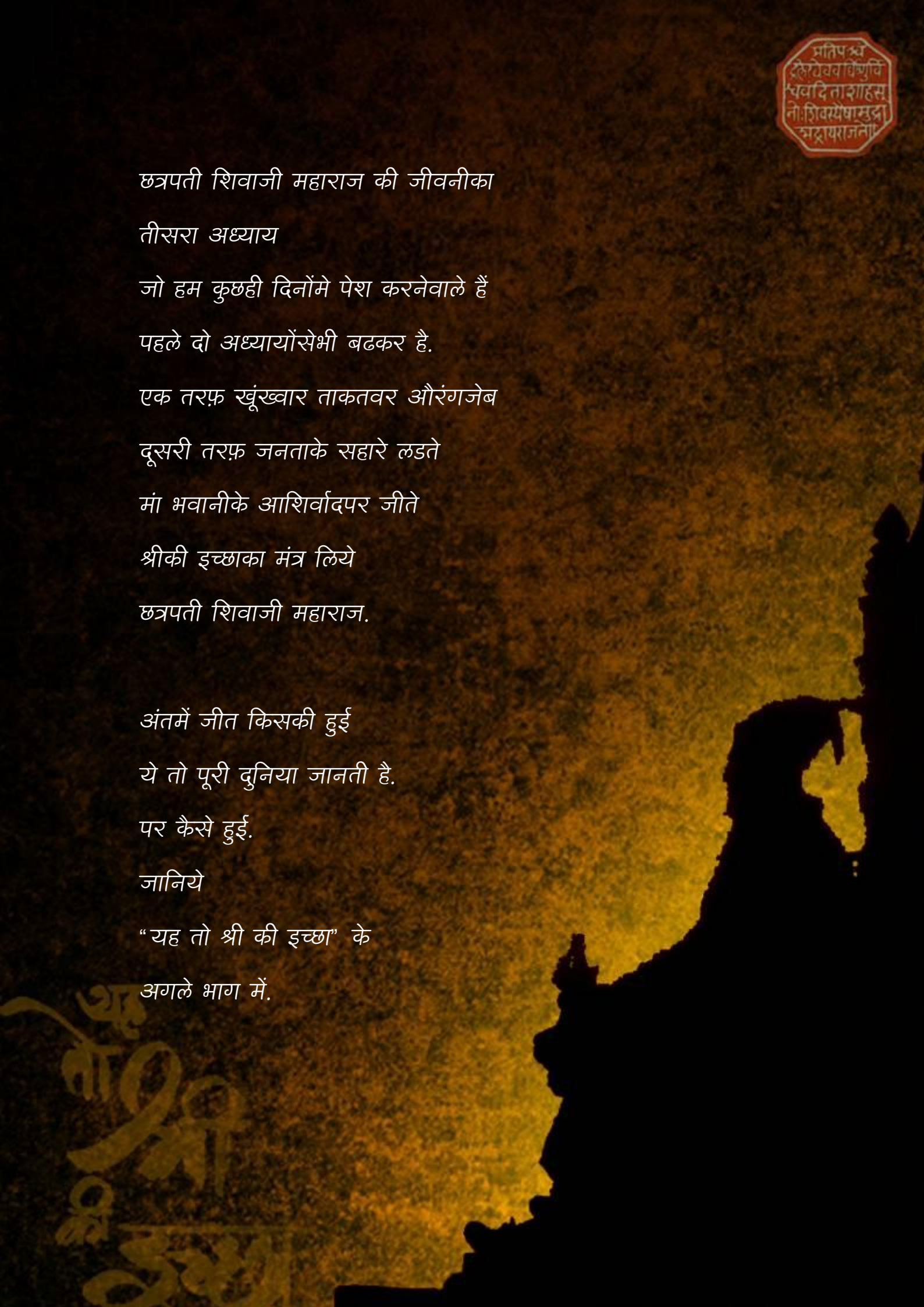

छत्रपती शिवाजी महाराज की जीवनीका

तीसरा अध्याय

जो हम कुछही दिनोंमे पेश करनेवाले हैं

पहले दो अध्यायोंसेभी बढकर है.

एक तरफ़ खूंख्वार ताकतवर औरंगजेब

दूसरी तरफ़ जनताके सहारे लडते

मां भवानीके आशिर्वादपर जीते

श्रीकी इच्छाका मंत्र लिये

छत्रपती शिवाजी महाराज.

अंतमें जीत किसकी हुई

ये तो पूरी दुनिया जानती है.

पर कैसे हुई.

जानिये

“यह तो श्री की इच्छा” के

अगले भाग में.

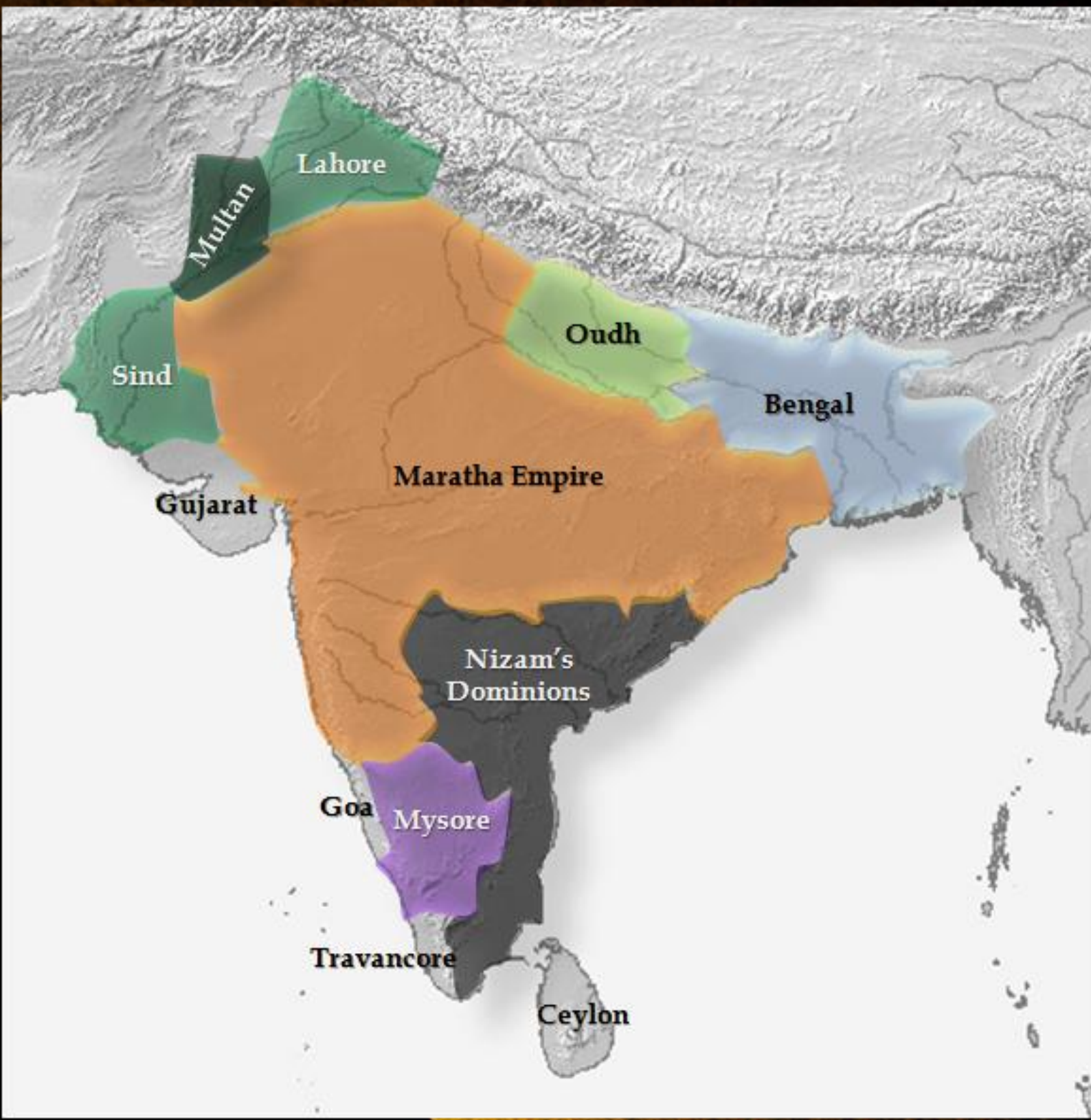
Lahore
Multan
Sind
Oudh
Bengal
Maratha Empire
Gujarat
Nizam's
Dominions
Goa
Mysore
Travancore
Ceylon

साहित्य प्रतिष्ठान®

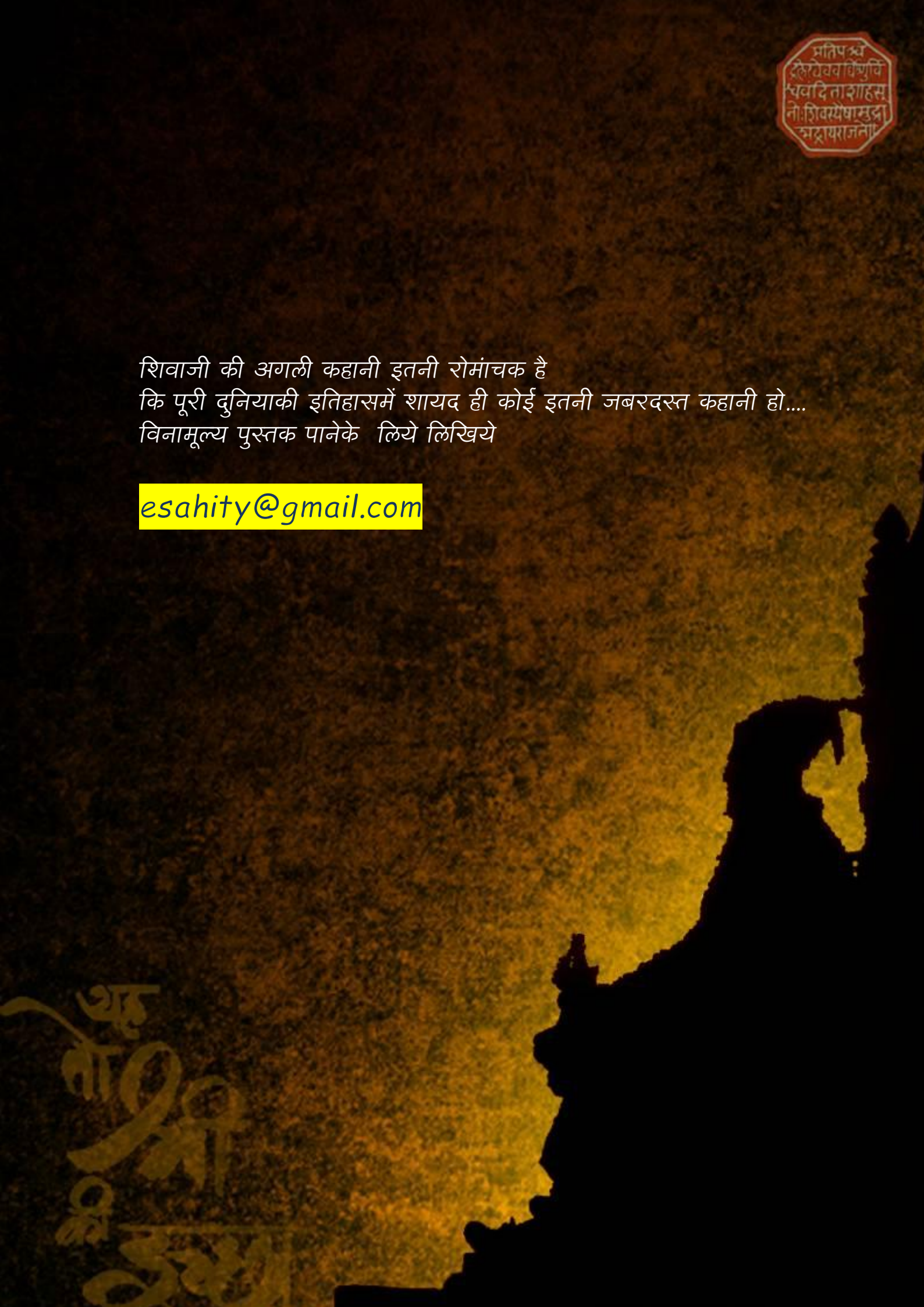

शिवाजी की अगली कहानी इतनी रोमांचक है
कि पूरी दुनियाकी इतिहासमें शायद ही कोई इतनी जबरदस्त कहानी हो....
विनामूल्य पुस्तक पानेके लिये लिखिये

esahity@gmail.com

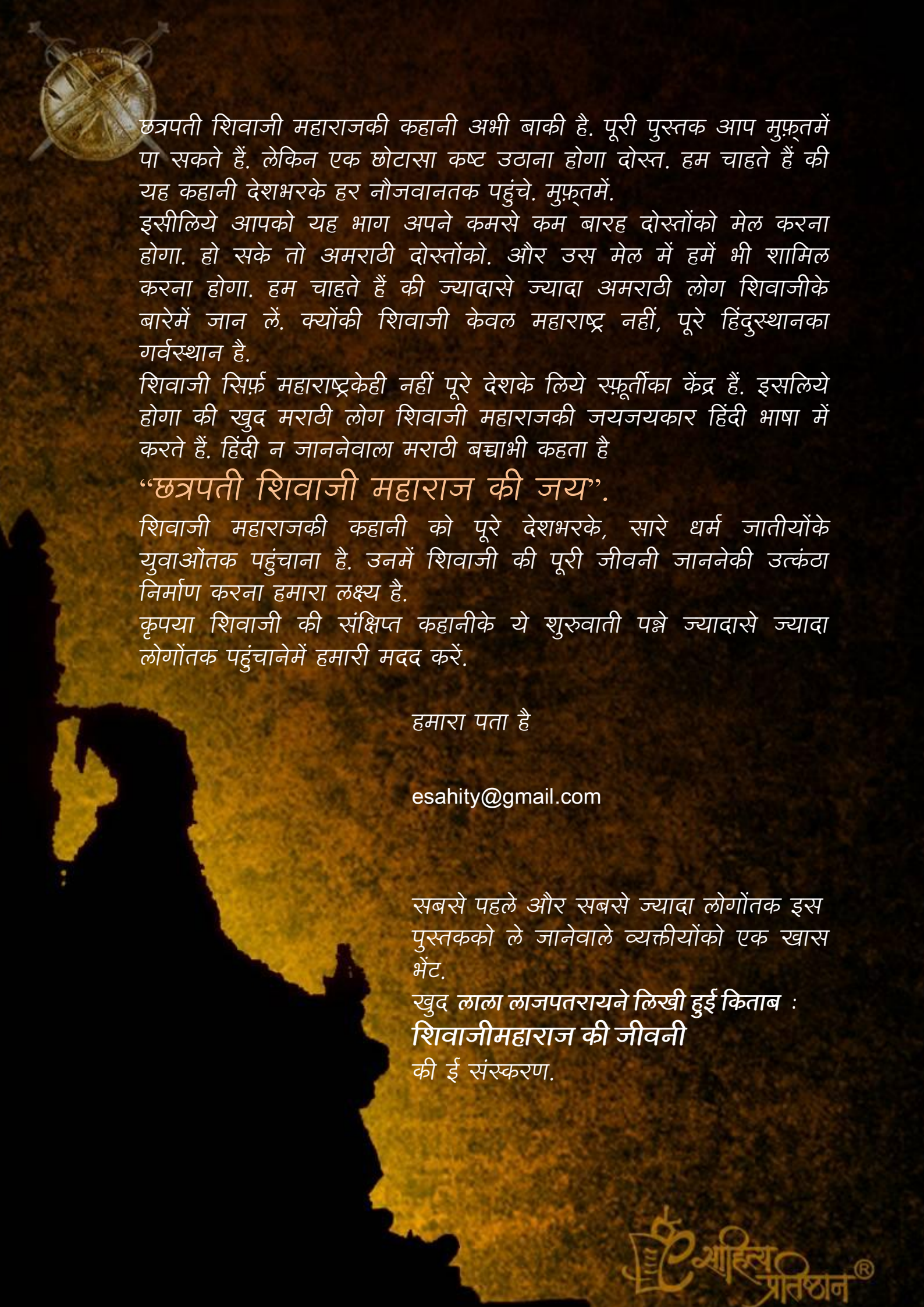

छत्रपती शिवाजी महाराजकी कहानी अभी बाकी है. पूरी पुस्तक आप मुफ़्तमें पा सकते हैं. लेकिन एक छोटासा कष्ट उठाना होगा दोस्त. हम चाहते हैं की यह कहानी देशभरके हर नौजवानतक पहुंचे. मुफ़्तमें.

इसीलिये आपको यह भाग अपने कमसे कम बारह दोस्तोंको मेल करना होगा. हो सके तो अमराठी दोस्तोंको. और उस मेल में हमें भी शामिल करना होगा. हम चाहते हैं की ज्यादासे ज्यादा अमराठी लोग शिवाजीके बारेमें जान लें. क्योंकी शिवाजी केवल महाराष्ट्र नहीं, पूरे हिंदुस्थानका गर्वस्थान है.

शिवाजी सिर्फ़ महाराष्ट्रकेही नहीं पूरे देशके लिये स्फ़ूर्तीका केंद्र हैं. इसलिये होगा की खुद मराठी लोग शिवाजी महाराजकी जयजयकार हिंदी भाषा में करते हैं. हिंदी न जाननेवाला मराठी बच्चाभी कहता है

"छत्रपती शिवाजी महाराज की जय".

शिवाजी महाराजकी कहानी को पूरे देशभरके, सारे धर्म जातीयोंके युवाओंतक पहुंचाना है. उनमें शिवाजी की पूरी जीवनी जाननेकी उत्कंठा निर्माण करना हमारा लक्ष्य है.

कृपया शिवाजी की संक्षिप्त कहानीके ये शुरुवाती पन्ने ज्यादासे ज्यादा लोगोंतक पहुंचानेमें हमारी मदद करें.

हमारा पता है

esahity@gmail.com

सबसे पहले और सबसे ज्यादा लोगोंतक इस पुस्तकको ले जानेवाले व्यक्तीयोंको एक खास भेंट.

खुद **लाला लाजपतरायने लिखी हुई किताब** :

शिवाजीमहाराज की जीवनी

की ई संस्करण.

साहित्य प्रतिष्ठान®

esahity@gmail.com

www.esahity.com

इंटरनेटके माध्यमसे ई पुस्तकोंका निर्माण और प्रचार करनेके हेतू ई साहित्य प्रतिष्ठान का निर्माण चार साल पहले हुवा. आजतक 250 से अधिक ई पुस्तकोंका निर्माण ई साहित्य प्रतिष्ठानने किया है. उसमें कविताओंकी **नेटाक्षरी**, बच्चोंके लिये **बाल नेटाक्षरी**, शास्त्रीय संगीत के आस्वादके लिये **संगीत कानसेन**, audio नियतकालिक **स्वरनेटाक्षरी**, शिवाजीके कीलोंका तफ़सील देता **दुर्ग दुर्गट भारी, ज्ञानेश्वरी, संभाजी महाराज चरित्र** तथा कई सामाजिक और साहित्यिक विषयोंकी किताबे शामिल है. दुनियाभरमें फ़ैले सव्वा लाख पाठकोंतक ये पुस्तकें ई मेल द्वारा प्रसारित होती हैं.

ई साहित्य की पुस्तकें नियमित रूपसे विनामूल्य पानेके लिये आप अपना और अपने दोस्तोंका ई मेल पता भेजिये .

esahity@gmail.com

अधिक जानकारीके लिये भेंट दे :

www.esahity.com

www.marathiriyasat.com

धन्यवाद